खबरें छुपाता नहीं, छापता है

शाह टाइम्स

अधिकतम :42°C
न्यूनतम: 26°C

बरेली, सोमवार 27 अप्रैल 2026 बरेली संस्करण: वर्ष 23 अंक 146 पृष्ठ 12 मूल्य रुपये 5.00

विस्तृत खबरों के लिए QR कोड स्कैन करें। मुफ्त पढ़ें E-paper

shahtimes2015@gmail.com वैसाख शुक्ल पक्ष 10 विक्रमी सम्वत् 2083 8 जिलकदा 1447 हिजरी

नई दिल्ली, मुजफ्फरनगर, देहरादून, हल्द्वानी, मुरादाबाद, बरेली, मेरठ व लखनऊ से प्रकाशित

अनुशासन व टीमवर्क का उत्कृष्ट भाव सबसे बड़ी ताकत: योगी
पेज 2

चेन्नई सुपर किंग्स को हराकर गुजरात टाइटंस ने चौथी जीत दर्ज की
खेल टाइम्स

मानवीय संवेदना का इतिहासकार फोटोग्राफर रघु राय
सम्पादकीय

दबाव में युद्धविराम पर वार्ता नहीं करेगा तेहरान: पेजेश्कियन
पेज 12

संक्षिप्त समाचार

राघव चड्ढा समेत 7 सांसदों को अयोग्य घोषित करने की मांग

नई दिल्ली। 'आप' सांसद संजय सिंह ने रविवार को उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन को याचिका सौंपकर भाजपा में शामिल हुए 7 सांसदों को अयोग्य घोषित करने की मांग की है। सिंह ने कहा कि इन सदस्यों का पार्टी छोड़ना दलबदल विरोधी कानून का स्पष्ट उल्लंघन है। संजय सिंह के मुताबिक, आम आदमी पार्टी ने अधिवक्ता कपिल सिब्बल और लोकसभा के पूर्व महासचिव पीडीटी अचार्य सहित कई संवैधानिक विशेषज्ञों से सलाह ली है।' आप' के 10 राज्यसभा सांसदों में से राघव चड्ढा, अशोक मित्तल और संदीप पाठक, हरभजन सिंह, विक्रमजीत सिंह साहनी, स्वाति मालीवाल, राजेंदर गुप्ता ने शुक्रवार को भाजपा जॉइन कर ली थी।

प्रख्यात फोटोग्राफर रघु राय का 83 साल की उम्र में निधन

नई दिल्ली। भोपाल गैस त्रासदी की तस्वीरें क्लिक कर दुनिया का ध्यान आकर्षित करने वाले प्रख्यात फोटोग्राफर एवं फोटो पत्रकार रघु राय का रविवार सुबह यहां एक निजी अस्पताल में निधन हो गया। वह 83 साल के थे। श्री राय के पुत्र एवं फोटोग्राफर नितिन राय ने बताया कि उनके पिताजी को दो साल पहले प्रोस्टेट कैंसर हुआ था, लेकिन बाद में उन्हें राहत मिलने लगी थी। फिर कैंसर पेट तक फैल गया, जो ठीक हो गया था। उन्होंने बताया कि हाल ही में कैंसर श्री राय के मस्तिष्क तक पहुंच गया था और उन्हें उम्र संबंधी अन्य तकलीफें भी होने लगी थीं। कैमरे की नजर से जीवन के अनेक पहलुओं को दुनिया के सामने पेश करने वाले श्री राय के परिवार में उनकी पत्नी गुरमीत, पुत्र नितिन और तीन पुत्रियां लंगन, अवनि और पूर्वाई हैं। उनका अंतिम संस्कार रविवार शाम चार बजे लोधी रोड श्मशान घाट में किया गया।

अंडमान दौरे पर राहुल गांधी, कांग्रेस को मिला जनसमर्थन

नई दिल्ली। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता राहुल गांधी के अंडमान और निकोबार द्वीप समूह दौरे को कांग्रेस ने बड़ी सफलता करार दिया है। कांग्रेस के अंडमान-निकोबार प्रभारी मणिकम टैगोर ने कहा कि पोर्ट ब्लेयर में आयोजित कांग्रेस सम्मेलन में श्री गांधी की मौजूदगी ने पार्टी कार्यकर्ताओं और आम जनता में नया उत्साह भर दिया। श्री टैगोर ने कहा कि इस दौरे को लेकर पार्टी प्रतिनिधियों और जनता की जबरदस्त प्रतिक्रिया देखने को मिली, जो द्वीपों में कांग्रेस संगठन की बढ़ती ताकत को दर्शाता है।

भारत-उज्बेकिस्तान संयुक्त सैन्य अभ्यास नमनगन में संपन्न

नई दिल्ली। भारत-उज्बेकिस्तान संयुक्त सैन्य अभ्यास 'दस्तलिक 2026' का सातवां आयोजन उज्बेकिस्तान के नमनगन स्थित गुरुमसरॉय फील्ड ट्रेनिंग एरिया में संपन्न हो गया। अर्ध-पहाड़ी इलाकों में दो सप्ताह के गहन संयुक्त प्रशिक्षण के बाद यह सैन्य अभ्यास संपन्न हुआ। भारत-उज्बेकिस्तान के बीच आपसी तालमेल और संयुक्त परिचालन क्षमता को बढ़ाने के उद्देश्य से तैयार किया गया।

ट्रम्प की डिनर पार्टी में फायरिंग

व्हाइट हाउस कॉरेस्पोंडेंट्स डिनर के दौरान हमलावर ने 10 से ज्यादा राउंड फायरिंग की

वाशिंगटन, वार्ता

अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प पर हमले की खबर सामने आई है। दरअसल, व्हाइट हाउस कॉरेस्पोंडेंट्स डिनर के दौरान एक हमलावर ने अचानक गोलीबारी शुरू कर दी। इस घटना को लेकर अब चौंकाने वाले खुलासे हो रहे हैं।

कार्यक्रम में मौजूद एक चश्मदीद वॉलंटियर ने बताया है कि किस तरह सुरक्षा में हुई एक भारी चूक का फायदा उठाकर हमलावर ने एक असुरक्षित कमरे में अपना हथियार असेंबल किया और फिर सीधे मुख्य हॉल की तरफ दौड़ पड़ा। इस हाई-प्रोफाइल कार्यक्रम में वालंटियर के रूप में काम कर रही हेलेन माबुस ने उस डरावने पल को याद किया। उन्होंने बताया कि टेरेस लेवल के प्रवेश द्वार के पास एक अस्थायी कमरा बनाया गया था। इस कमरे का उपयोग मुख्य रूप से बार कार्ट और अन्य सामान रखने के लिए किया जा रहा था। माबुस के अनुसार, उस समय वहां सुरक्षा का कोई पुख्ता इंतजाम नहीं था और न ही कोई निगरानी की जा रही थी। हेलेन ने बताया कि वह शख्स उसी कमरे में छिपा था। उसने अपने बैग से कुछ निकाला और उसे जोड़ना शुरू कर दिया।

■ सीक्रेट सर्विस के एक अधिकारी को लगी गोली, हमलावर एलन गिरफ्तार

मोदी ने डिनर पार्टी में हुई गोलीबारी की निंदा की

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री मोदी ने अमेरिका में व्हाइट हाउस कॉरेस्पोंडेंट्स डिनर के दौरान हुई गोलीबारी की घटना की निंदा की है। श्री मोदी ने रविवार को इस घटना की निंदा करते हुए अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प, प्रथम महिला मेलानिया और उपराष्ट्रपति जेडी वेंस की सुरक्षा पर राहत व्यक्त की। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र में हिंसा का कोई स्थान नहीं है और इसकी स्पष्ट रूप से निंदा की जानी चाहिए। प्रधानमंत्री ने सोशल मीडिया 'एक्स' पर कहा कि वाशिंगटन डीसी के एक होटल में हुई गोलीबारी के बाद यह जानकर राहत मिली कि श्री ट्रम्प, प्रथम महिला और उपराष्ट्रपति सुरक्षित और सकुशल हैं।

उन्होंने आगे बताया कि वह हथियार काफी लंबा था और किसी सामान्य बंदूक जैसा नहीं दिख रहा था। हमलावर सुरक्षाकर्मियों की नजरों से थोड़ा ओझल होकर इस काम को अंजाम दे रहा था। जैसे ही उसने हथियार तैयार किया, वह तेजी से बाथरूम की ओर भागा और हमला करना शुरू कर दिया। चश्मदीद के मुताबिक, हमलावर ने बिना सोचे-समझे हर दिशा में गोलियां चलानी शुरू कर दीं। हेलेन ने बताया कि ऐसा लग रहा था जैसे वह हर तरफ अंधाधुंध फायरिंग कर रहा हो। मैंने कम से कम 10 राउंड गोलियों की आवाज सुनी। गोलियों की आवाज सुनते ही वहां चीख-पुकार मच गई। लोग अपनी जान बचाने के लिए इधर-उधर भागने लगे। मैं भी वहां से भागी। पुलिस के अनुसार, हमलावर की पहचान कैलिफोर्निया के टोरेंस निवासी कोल टामस एलन के रूप में हुई है।

अमेरिकी अधिकारियों का पाकिस्तान दौरा रद्द

तेहरान/वाशिंगटन। अमेरिका और ईरान के बीच प्रस्तावित युद्धविराम वार्ता ठप पड़ गई है क्योंकि ईरान से बातचीत के लिए पाकिस्तान जाने वाले अमेरिकी दूत स्टीव विटकाफ और ट्रम्प के दामाद जारेड कुशनर का दौरा रद्द हो गया है। यह दूसरी बार है जब दोनों देशों की मीटिंग टली। इससे पहले ईरान ने शांति वार्ता न करने का ऐलान किया था। उनका कहना था कि पहले अमेरिका अपनी होर्मुज स्ट्रेट से नाकेबंदी हटाए तब ही हम बातचीत के लिए इस्लामाबाद आएंगे। ट्रम्प ने सोशल मीडिया पर पोस्ट कर बताया कि उन्होंने अपने दूतों को पाकिस्तान न जाने का निर्देश दिया है। उन्होंने लिखा, यात्रा में बहुत समय लगता है। 18 घंटे समय बर्बाद कर बेकार की बातें करने नहीं जाना।

सरेंडर का आदेश नहीं दे सकती अदालतें: सुप्रीम कोर्ट

शाह टाइम्स ब्यूरो

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने अग्रिम जमानत और अदालती क्षेत्राधिकार को लेकर महत्वपूर्ण टिप्पणी की है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि किसी भी आरोपी की अग्रिम जमानत याचिका को खारिज करना अदालत का अधिकार है। हालांकि, याचिका खारिज करते समय अदालत के पास यह शक्ति नहीं है कि वह आरोपी को संबंधित ट्रायल कोर्ट के सामने आत्मसमर्पण करने का निर्देश दे। जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस उज्ज्वल भुइयां की खंडपीठ ने एक मामले की सुनवाई के दौरान यह टिप्पणी की। यह मामला धोखाधड़ी और जालसाजी के आरोपी एक व्यक्ति की ओर से दायर की गई विशेष अनुमति याचिका से जुड़ा था। पीठ ने सुनवाई के दौरान न्यायिक सीमाओं के बारे में बात की। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि यदि अदालत अग्रिम जमानत खारिज करना चाहती है, तो वह ऐसा कर सकती है। लेकिन अदालत के पास यह कहने का कोई कानूनी अधिकार नहीं है कि याचिकाकर्ता अनिवार्य रूप से सरेंडर करे। यह पूरा मामला झारखंड हाईकोर्ट के एक पुराने आदेश से उपजा था। हाईकोर्ट ने भूमि विवाद से संबंधित एक मामले में आरोपी की अग्रिम जमानत याचिका को खारिज कर दिया था। याचिका खारिज करने के साथ ही हाईकोर्ट ने आरोपी को निर्देश दिया था कि वह निचली अदालत के सामने आत्मसमर्पण करे और नियमित जमानत के लिए आवेदन करे। मजिस्ट्रेट के समक्ष शिकायत दर्ज कराई गई थी।

■ कहा: किसी भी आरोपी की अग्रिम जमानत याचिका को खारिज करना अदालत का अधिकार

दिल्ली-टेकऑफ के दौरान स्विस प्लेन का इंजन फेल

शाह टाइम्स ब्यूरो

नई दिल्ली। दिल्ली के इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर ज्यूरिख जाने वाली स्विस इंटरनेशनल एयर लाइन्स की एक उड़ान को रविवार तड़के उड़ान भरने (टेक-ऑफ) से ठीक पहले रुकने के लिए मजबूर होना पड़ा।

विमान के एक इंजन में तकनीकी खराबी आने के बाद पूर्ण आपातकालीन प्रतिक्रिया शुरू की गई। यह घटना रात लगभग 1:25 बजे के तुरंत बाद हुई, जब एयरबस ए330-300 संचालित उड़ान एसडब्लूआर146 रनवे 28 से उड़ान भरने के लिए गति पकड़ रही थी। अधिकारियों के अनुसार, कॉकपिट क्रू ने इंजन में खराबी का पता लगाया और तुरंत टेक-ऑफ की प्रक्रिया को रोक दिया। विमान

■ आग लगी, छह घायल, 4 नवजात समेत 232 लोग थे सवार

के एक तरफ धुएं के निशान और लैंडिंग गियर क्षेत्र के आसपास आग की लपटों की रिपोर्ट के बाद कुछ ही मिनटों में पूर्ण आपातकाल घोषित कर दिया गया, जिससे सुरक्षा कार्यों के लिए रनवे को अस्थायी रूप से बंद करना पड़ा। एहतियात के तौर पर विमान में सवार सभी 245 व्यक्तियों (232 यात्री और 13 चालक दल के सदस्य) को आपातकालीन स्लाइड का उपयोग कर सुरक्षित बाहर निकाला गया। हालांकि सभी को सुरक्षित निकाल लिया गया, लेकिन निकासी प्रक्रिया के दौरान चार यात्रियों को मामूली चोटें आईं।

दाऊद गैंग का खास गुर्गा सलीम डोला गिरफ्तार

इस्तांबुल। दाऊद इब्राहिम के करीबी सलीम डोला को तुर्की के इस्तांबुल में गिरफ्तार कर लिया गया है। स्थानीय मीडिया रिपोर्टों के अनुसार तुर्की की सुरक्षा एजेंसियों ने उसे पकड़ा है।

कई मीडिया रिपोर्ट में दावा किया गया है कि भारतीय सुरक्षा एजेंसियों के सूत्रों ने सलीम डोला की गिरफ्तारी की खबर की पुष्टि की है। डोला इंटरपोल द्वारा जारी रेड कॉर्नर नोटिस के दायरे में था। यह नोटिस भारत की केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) द्वारा मुंबई पुलिस में दर्ज मामलों के आधार पर जारी किया गया था। सलीम डोला भारत भर में फैले कई गुप्त अड्डों और कारखानों का इस्तेमाल करके कई देशों में फैले एक अंतर्राष्ट्रीय सिंथेटिक ड्रग तस्करी नेटवर्क को चला रहा था।

■ खबरों में दावा: तुर्की में पुलिस ने दबोचा

सूत्रों के अनुसार, वह दुबई से अपने ड्रग रैकेट को नियंत्रित करता था। रिपोर्ट के मुताबिक गिरफ्तारी की पुष्टि होने से पहले एक भारतीय अधिकारी ने कहा था कि अगर डोला पकड़ा जाता है, तो उसके ड्रग तस्करी गिरोह के लिए यह एक बड़ा झटका होगा। मुंबई पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने, जिन्होंने गुमनाम रहने की शर्त पर बात की, कहा कि अगर डोला को हिरासत में लिया गया है, तो यह बहुत अच्छी खबर है और उसके तस्करी नेटवर्क के लिए एक बड़ा झटका है। सलीम डोला के ड्रग तस्करी नेटवर्क का सालाना कारोबार 5,000 करोड़ रुपये से अधिक का था।

बुलंदशहर: बर्थडे पार्टी में तिहरा हत्याकांड

चेहरे पर केक लगाने को लेकर हुआ विवाद खूनी संघर्ष में बदला

शाह टाइम्स ब्यूरो

खुर्जा (बुलंदशहर)। खुर्जा क्षेत्र में बीती देर रात एक बर्थडे पार्टी के दौरान केक चेहरे पर लगाने को लेकर हुए विवाद ने तिहरे हत्याकांड का रूप ले लिया। गोलीबारी की इस घटना में तीन युवकों की मृत्यु हो गई।

पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है, जबकि अन्य आरोपियों की तलाश जारी है। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक दिनेश कुमार सिंह ने बताया कि शुक्रवार देर रात करीब 10:30 बजे खुर्जा नगर के सुभाष रोड स्थित एक जिम में जीतू नामक युवक की बर्थडे पार्टी चल रही थी। इसी दौरान युवकों के बीच एक-दूसरे के चेहरे पर केक लगाने को लेकर विवाद हो गया। विवाद बढ़ने पर झगड़ा

मृतक मनीष सैनी

मृतक अमरदीप

मृतक आकाश सैनी

■ पुलिस ने तीन आरोपियों को किया गिरफ्तार

हिंसक हो गया और गोलीबारी शुरू हो गई। फायरिंग में मनीष, आकाश और अमरदीप नामक तीन युवक गंभीर रूप से घायल हो गए। उन्हें तत्काल राजकीय अस्पताल ले जाया गया, जहां चिकित्सकों ने तीनों को मृत घोषित कर दिया। तिहरे हत्याकांड के बाद क्षेत्र में दहशत का माहौल व्याप्त हो गया। घटना की सूचना मिलते ही एडीजी लॉ एंड ऑर्डर तथा एडीजी मेरठ जोन भानु भास्कर मौके पर पहुंचे और घटनास्थल का निरीक्षण किया। एडीजी ने बताया कि पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है, अन्य आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए आठ टीमें संभावित ठिकानों पर लगातार दबिश दे रही हैं।

टीएमसी का घमंड टूटा, भाजपा की जीत तय: मोदी

ममता सरकार में मां-माटी और मानुष का सम्मान नहीं, पीएम ने कोलकाता में किया रोड शो

कोलकाता, वार्ता

पीएम नरेंद्र मोदी ने रविवार को पश्चिम बंगाल के नार्थ 24 परगना जिले के बनगांव और हुगली के हरिपाल में रैली की। उन्होंने बनगांव में कहा कि पहले फेज के मतदान में टीएमसी का घमंड टूट चुका है।

दूसरे चरण में भाजपा की जीत तय होती दिख रही है। उन्होंने कोलकाता में रोड शो भी किया। पीएम ने आरोप लगाया कि टीएमसी शासन में छोटे-छोटे नेता और गुंडे खुद को सरकार समझने लगे हैं। 15 साल पहले टीएमसी 'मां, माटी, मानुष' का नारा देकर सत्ता में आई थी, आज वे इन शब्दों को बोल भी नहीं पाते। अगर बोलेंगे, तो इनके पाप सामने आ जाएंगे। टीएमसी के राज में

■ पीएम का आरोप : टीएमसी शासन में छोटे-छोटे नेता और गुंडे खुद को सरकार समझने लगे

मां-माटी और मानुष का सम्मान नहीं है। हुगली में पीएम ने कहा कि टीएमसी सरकार ने अपने कुकर्मों की वजह से बंगाल के लोगों का भरोसा खो दिया है। यही कारण है कि लोगों को बार-बार कोर्ट का दरवाजा खटखटाना पड़ता है। 15 साल तक टीएमसी ने बंगाल के लोगों को डराकर रखा, लेकिन वे एक बात भूल गए। जब अत्याचार अपनी सीमा पार करता है, तो जनता मां दुर्गा का रूप लेकर अन्याय का अंत करती है।

जनगणना में डिजिटल भागीदारी कर सफल बनाएं: प्रधानमंत्री

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को लोगों से जनगणना 2027 में डिजिटल भागीदारी कर इसे सफल बनाने की अपील की।

पीएम मोदी ने अपने मासिक रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' में कहा कि जनगणना 2027 को डिजिटल बनाया गया है। सारी जानकारी सीधे डिजिटल माध्यम में दर्ज हो रही है। जनगणना के लिए घर-घर जाने वाले कर्मचारी लोगों से बात करते मोबाइल एप में सारी जानकारी दर्ज करेंगे। वहीं, इस बार लोगों को खुद भी अपनी जानकारी डिजिटल अपलोड करने की सुविधा दी गई है। कर्मचारी के आने से 15 दिन पहले यह सुविधा शुरू होगी। लोग अपने हिसाब से अपने समय में सारी जानकारी भर सकते हैं। इसके बाद उन्हें मोबाइल या ई-मेल पर एक विशेष आईडी मिलेगी।

यूपी का बांदा देश में सबसे गर्म, पारा 47 के पार

नई दिल्ली। उत्तर प्रदेश के 50 जिलों में लू चल रही है। प्रदेश का बांदा शनिवार को देश में सबसे गर्म शहर रहा। यहां तापमान 47.4 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

बिहार के कई जिलों में रविवार को मौसम ने करवट ली। सुपौल, रक्सौल और मधुबनी समेत 10 जिलों में तेज बारिश हुई। दरभंगा में काले बादल से दिन में अंधेरा छा गया। किशनगंज में तेज आंधी और बारिश की वजह कई जगह पेड़ उखड़ गए। मध्य प्रदेश के इंदौर और ग्वालियर जिले में आंगनवाड़ी केंद्र और 8वीं तक के सभी स्कूल 27 से 30 अप्रैल तक बंद रहेंगे। हिमाचल प्रदेश के ऊना में तापमान 42.2 डिग्री सेल्सियस रहा। यहां 27 अप्रैल से बारिश का अनुमान भी है। गर्मी बढ़ने के साथ

■ उप्र के 50 जिलों में लू, मप्र के इंदौर-ग्वालियर में 8वीं तक के स्कूल बंद

देश में बिजली की मांग 252.07 गीगावाट (जीडब्ल्यू) तक पहुंच गई, जो अब तक सबसे ज्यादा है। इससे पहले मई 2024 में 250 जीडब्ल्यू का रिकॉर्ड बना था। मौसम विभाग ने उत्तर-पश्चिम भारत के 10 राज्यों में हीटवेव और वार्म नाइट का अलर्ट जारी किया है। हरियाणा, चंडीगढ़, दिल्ली, मध्य प्रदेश, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, महाराष्ट्र, बिहार और झारखंड के कुछ इलाकों में हीटवेव चलने की संभावना है।

CMYK

संक्षिप्त समाचार

होमगार्ड भर्ती लिखित परीक्षा में नकल षड्यंत्र का भंडाफोड़

कानपुर। कानपुर में बीएनएसडी इंटर कॉलेज परीक्षा केंद्र पर होमगार्ड भर्ती लिखित परीक्षा की दूसरी पाली में ड्यूटी के दौरान तैनात पुलिसकर्मियों की सतर्कता से नकल कराने के एक सुनियोजित षड्यंत्र का भंडाफोड़ किया गया। पुलिस उपायुक्त सेन्ट्रल अतुल श्रीवास्तव ने रविवार को बताया कि शनिवार को परीक्षा के दौरान एक इन्विजिलेटर को संदिग्ध अवस्था में वॉशरूम की ओर जाते देख रोककर तलाशी ली गई, जिसके दौरान उसके पास से प्रश्नपत्र बुकलेट बरामद हुई, जिसे उसने छिपाकर रखा था। पूछताछ में ज्ञात हुआ कि वह एक अन्य इन्विजिलेटर एवं कॉलेज के एक केमिस्ट्री लेक्चरर के साथ मिलकर परीक्षा में नकल कराने की योजना में संलिप्त था।

यूपीटेट 2026: तीन मई तक अभ्यर्थी कर सकेंगे आवेदन

प्रयागराज। यूपी के प्रयागराज टीईटी-2026 में अब अभ्यर्थी 3 मई तक आवेदन कर सकेंगे। उत्तर प्रदेश शिक्षा सेवा चयन आयोग ने तिथि को बढ़ाने की घोषणा की है। ऑनलाइन आवेदन की अंतिम तिथि को आगे बढ़ा दिया गया है। तकनीकी समस्याओं और अभ्यर्थियों की मांग को देखते हुए यह फैसला लिया गया है। अभ्यर्थी लेट होने की दशा में इससे वंचित नहीं रह जाएंगे। आयोग की ओर से जारी नए कार्यक्रम के अनुसार आवेदन की नई अंतिम तिथि 3 मई है, जो पहले 1 मई थी, वहीं संशोधन एवं शुल्क समाधान की तिथि 8 मई तक कर दी गई है। प्रस्तावित एग्जाम डेट 2, 3 और 4 जुलाई है। शनिवार तक आंकड़ों के अनुसार कुल ऑनलाइन पंजीकरण 14,58,104 और वन टाइम रजिस्ट्रेशन 12,80,845, वहीं नए आवेदन 1,04,196 किए गए।

सीएम योगी ने महिला आरक्षियों की पासिंग आउट परेड की ली सलामी

अनुशासन व टीमवर्क का भाव सबसे बड़ी ताकत

शाह टाइम्स ब्यूरो

■ 60,244 आरक्षी नागरिक पुलिस सीधी भर्ती के अंतर्गत दीक्षांत परेड समारोह को संबोधित करते हुए बोले मुख्यमंत्री

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि आरक्षी प्रशिक्षण के दौरान बेटियों ने जिस मजबूती, तत्परता, समर्पण व अनुशासन का परिचय दिया है, वह सराहनीय है। अनुशासन व टीमवर्क का उत्कृष्ट भाव सबसे बड़ी ताकत है। इन सबको समाहित करते हुए देश के लिए सर्वोत्कृष्ट योगदान देने की भावना वर्दीधारी बल का सबसे महत्वपूर्ण अंग होती है।

प्रशिक्षण में जितना पसीना बहेगा, बाद के जीवन में उतना ही कम खून बहाने की नौबत आती है। योगी रविवार को 60,244 आरक्षी नागरिक पुलिस सीधी भर्ती के अंतर्गत वर्ष 2025 बैच के पुलिस आरक्षियों के दीक्षांत परेड समारोह को संबोधित कर रहे थे। रिजर्व पुलिस लाइन में हुए आयोजन में मुख्यमंत्री ने परेड का निरीक्षण किया और सलामी भी ली।

उन्होंने प्रशिक्षण पूर्ण कर दीक्षांत समारोह का हिस्सा बनने वाली महिला आरक्षियों को बधाई दी और कहा कि सभी ने लगन व अनुशासन के साथ कठोर प्रशिक्षण प्राप्त किया है। अब आप सबको जनपदों की फील्ड ड्यूटी में जाना है। याद रखिए, कानून अपराधी के लिए जितना कठोर हो, नागरिकों के प्रति उतना ही संवेदनशील होना चाहिए। उन्होंने उम्मीद जताई कि सभी आरक्षी प्रशिक्षण से प्राप्त ज्ञान, कौशल व मूल्यों का उपयोग करते हुए निष्ठा, ईमानदारी व कर्तव्य परायणता से यूपी पुलिस की गौरवशाली परंपरा को आगे बढ़ाएंगे।

उन्होंने कहा कि आज प्रदेश के 10 पुलिस प्रशिक्षण संस्थानों, 73 जनपदों की पुलिस लाइंस, 29 पीएसी बटालियनों, 112 रिक्रूट ट्रेनिंग सेंटरों में एक साथ आरक्षी दीक्षांत परेड आयोजित की जा रही है। 15 जून 2025 को लखनऊ के डिफेंस एक्सपो ग्राउंड में केंद्रीय गृह व सहकारिता मंत्री अमित शाह ने 60,244 अभ्यर्थियों को नियुक्ति पत्र प्रदान किए थे।

21 जुलाई से इनका प्रशिक्षण प्रारंभ हुआ। इस दौरान मैं भी विभिन्न प्रशिक्षण केंद्रों में गया और देखा कि प्रशिक्षण व सुविधाएं पहले से बेहतर हुई हैं। योगी ने कहा कि 2017 के पहले यूपी पुलिस के सामने चुनौती व संकट था, लेकिन हमने इसे देश के बेहतरीन पुलिस बल के रूप में स्थापित किया। हमने 2.18 लाख से अधिक पुलिस कार्मिकों की भर्ती और 1 लाख से अधिक पुलिसकर्मियों का प्रमोशन किया। 2017 में पुलिस की ट्रेनिंग क्षमता महज 3 हजार थी, लेकिन हमने 60244 पुलिस आरक्षियों का प्रशिक्षण यूपी के केंद्रों में ही एक साथ संपन्न किया है, जो 9 वर्ष में अर्जित की गई प्रगति को दर्शाता है।

अयोध्या में शिव मंदिर पर 29 अप्रैल को ध्वजारोहण करेंगे मुख्यमंत्री योगी

लखनऊ/अयोध्या। श्रीराम जन्मभूमि मंदिर परिसर के सभी मंदिरों में देवी-देवताओं के विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा के पश्चात मंदिर रामलला, माता अन्नपूर्णा, सूर्यदेव, हनुमान जी और गणेश मंदिरों के शिखरों पर ध्वजारोहण हो चुका है। वहीं अब शिव मंदिर पर ध्वजारोहण की तैयारी है। शिव मंदिर पर ध्वजारोहण मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ 29 अप्रैल को करेंगे।

आज से बदलेगा मौसम, गर्मी से मिलेगी मामूली राहत

शाह टाइम्स ब्यूरो

■ उत्तर प्रदेश में मौसम विभाग ने बताए अगले 24 से 48 घंटे में आंधी और बूंदाबांदी के आसार

लखनऊ। भीषण गर्मी और लू के प्रकोप का सामना कर रहे उत्तर प्रदेश में अगले 24 से 48 घंटे में आंधी और बूंदाबांदी के आसार हैं जिससे तापमान में मामूली गिरावट का अनुमान है।

मौसम विभाग के अनुसार प्रदेश के दक्षिणी, मध्य और पूर्वी हिस्सों में अधिकतम तापमान 44 से 46 डिग्री सेल्सियस के बीच दर्ज किया जा रहा है, जबकि कई जिलों में तापमान सामान्य से काफी ऊपर बना हुआ है। आगामी 3 से 4 दिनों तक तापमान में 2 से 3 डिग्री सेल्सियस की और बढ़ोतरी के बाद हल्की गिरावट की संभावना जताई गई है। विभाग के अनुसार 28 अप्रैल के बाद प्रदेश के अधिकांश हिस्सों में लू की चेतावनी नहीं है और तापमान में हल्की गिरावट संभव है, जिससे लोगों को कुछ राहत मिल सकती है आंचलिक मौसम विज्ञान केंद्र, लखनऊ के अनुसार कानपुर नगर, कानपुर देहात, प्रयागराज, कौशांबी, फतेहपुर, बांदा, चित्रकूट, जालौन, हमीरपुर, झांसी, ललितपुर, रायबरेली, अमेठी, सुल्तानपुर, वाराणसी, मिर्जापुर, चंदौली, गाजीपुर, जौनपुर, आजमगढ़, मऊ और बलिया समेत अनेक जिलों में लू चलने की प्रबल संभावना है। विशेष रूप से बांदा, चित्रकूट, कौशांबी, प्रयागराज, फतेहपुर, प्रतापगढ़, मिर्जापुर, वाराणसी, जालौन और हमीरपुर को अधिक संवेदनशील श्रेणी में रखा गया है। कानपुर नगर में अधिकतम तापमान 43 से 44 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहने का अनुमान है। शहर में दिन के समय तेज धूप और गर्म हवाएं लोगों को बेहाल कर रही हैं। न्यूनतम तापमान भी 28 से 30 डिग्री सेल्सियस के बीच बना हुआ है, जिससे रात में भी गर्मी से राहत नहीं मिल रही

प. बंगाल में कांग्रेस कार्यकर्ता के हत्यारे हों गिरफ्तार: राहुल

नई दिल्ली, वार्ता

कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष एवं लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने पश्चिम बंगाल में चुनावी हिंसा को लेकर तृणमूल कांग्रेस पर तीखा हमला बोला है और आरोप लगाया है कि उसके लोगों ने कांग्रेस कार्यकर्ता देबदीप चटर्जी की हत्या की है।

गांधी ने रविवार को देबदीप की हत्या पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए दोषियों को तत्काल गिरफ्तार करने की मांग की और कहा कि कांग्रेस हिंसा पर भरोसा नहीं करती और अहिंसा के सिद्धांत को कलंकित करने वाली राजनीति के सामने झुकना नहीं जानती है। गांधी ने सोशल मीडिया एक्स पर रविवार को लिखा, कांग्रेस के कार्यकर्ता देबदीप चटर्जी की तृणमूल से जुड़े गुंडों द्वारा की गई हत्या बेहद निंदनीय है। शोकाकुल परिवार के प्रति मेरी गहरी संवेदनाएं। पश्चिम बंगाल में आज लोकतंत्र नहीं, तृणमूल का गुंडा राज चल रहा है। वोट के बाद विरोधी आवाजों को डराना, मारना, मिटाना, यही टीएमसी का चरित्र बन चुका है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस की राजनीति कभी हिंसा पर नहीं टिकी और न कभी टिकेगी। हमने भी अपने कार्यकर्ता खोए हैं, फिर भी हमने हमेशा अहिंसा और संविधान का रास्ता चुना है। यही हमारी विरासत है, यही हमारा संकल्प। उन्होंने कहा कि हमारी मांग स्पष्ट है, सभी दोषियों की तत्काल गिरफ्तारी हो।

युवराज की मौत के लिए 3 पुलिसकर्मी दोषी

शाह टाइम्स ब्यूरो

■ 110 दिन की जांच में ऐसे बेदाग हुई अथॉरिटी?

नोएडा। राष्ट्रीय राजधानी से सटे नोएडा सेक्टर 150 में पानी से लबालब खुले बेसमेंट में गिरकर इंजीनियर युवराज मेहता केस की जांच के लिए गठित एसआईटी ने 100 दिन की जांच के बाद अपनी रिपोर्ट पेश कर दी है। इस रिपोर्ट में एसआईटी ने माना है कि पुलिस कंट्रोल रूम में तैनात एआरओ और आरआई समेत 3 पुलिसकर्मी दोषी हैं। एसआईटी ने इस घटना के लिए असली जिम्मेदार बताए जा रहे नोएडा प्राधिकरण, फायर ब्रिगेड और एनडीआरएफ को एक तरह से क्लीनचिट दे दी है।

माना जा रहा है कि एसआईटी अपनी जांच में इन संस्थानों की भूमिका के साथ जवाबदेही तय करेगी। जिम्मेदार अधिकारियों पर एक्शन होगा, लेकिन एक बार फिर जांच के नाम पर खानापूर्ति हो गई है। बता दें कि 16 जनवरी 2026 की रात सेक्टर 150 स्थित जलभराव वाले खुले गड्ढे में युवराज मेहता की कार गिर गई थी। इस हादसे के दौरान युवराज मदद के लिए आवाज लगता रहा, लेकिन समय पर राहत नहीं पहुंच सकी और आखिरकार कड़ाके की ठंड में युवराज ने दम तोड़ दिया था। काफी देर बाद रेस्क्यू अक्क्मरेशन शुरू हुआ और काफी मसक्कत के बाद युवराज के शव को बाहर निकाला गया। इस घटना ने न केवल नोएडा, बल्कि पूरे देश के सिस्टम पर सवाल खड़ा कर दिया था। देश भर से घटना के विरोध में आवाजें उठने लगीं। पूछा जाने लगा कि इतने खतरनाक गड्ढे को बिना मार्किंग और चेतावनी बोर्ड के खुला क्यों छोड़ा गया? समय रहते युवराज को मदद क्यों नहीं पहुंचाई गई? बाद में सीएम योगी ने खुद संज्ञान लिया और एसआम्रटी जांच के आदेश दिए। इससे उम्मीद जगी कि शायद दोषियों के खिलाफ एक्शन हो, लेकिन एक बार फिर कार्रवाई के नाम पर खानापूर्ति हो गई। 5 सदस्यीय एसआईटी ने इस घटना के बाबत करीब 700 लोगों से पूछताछ की। इनमें नोएडा पुलिस, प्राधिकरण, एनडीआरु और फायर ब्रिगेड के तमाम अधिकारी और कर्मचारी शामिल थे। 100 दिन चली जांच के बाद अब एसआईटी ने रिपोर्ट दी है। इसमें पुलिस कंट्रोल रूम की भूमिका संदिग्ध माना है और कहा है कि कंट्रोल रूम ने हादसे की सूचना को गंभीरता से नहीं लिया, इसकी वजह से रेस्क्यू दल समय रहते एक्टिव नहीं हो पाया। एसआईटी की रिपोर्ट पर पुलिस कमिश्नर ने तीनों पुलिसकर्मियों को सस्पेंड कर दिया है। जानकारों का कहना है कि कंट्रोल रूम ने मामले को गंभीरता से नहीं लिया, ऐसे में कार्रवाई होनी ही चाहिए, लेकिन एसआईटी ने कैसे नोएडा अथॉरिटी और एनडीआरएफ को क्लीनचिट दी।

उप्र में एक मई से चलेगा विशेष स्कूल चलो अभियान

लखनऊ। योगी सरकार ने शिक्षा के मोर्चे पर बड़ा और निर्णायक कदम उठाते हुए 'स्कूल चलो अभियान' को उत्तर प्रदेश में मिशन मोड में लागू कर दिया है। सरकार का स्पष्ट संदेश है कि अब कोई भी बच्चा स्कूल से बाहर नहीं रहेगा। इसी क्रम में अपर मुख्य सचिव, बेसिक एवं माध्यमिक शिक्षा, पार्थ सारथी सेन शर्मा ने प्रदेश के सभी जिलाधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि छह से 14 वर्ष तक के प्रत्येक बच्चे का नामांकन हर हाल में सुनिश्चित किया जाए। पहली मई से प्रदेशभर में विशेष अभियान चलाकर श्रमिक बस्तियों, ईंट-भट्टों और वंचित वर्गों के बच्चों को चिह्नित कर स्कूल से जोड़ा जाएगा। दिव्यांग बच्चों के नामांकन को प्राथमिकता देने, आरटीई के अंतर्गत लॉटरी के माध्यम से चयनित पात्र बच्चों का आवंटित विद्यालय में शत-प्रतिशत नामांकन कराने और कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों में बालिकाओं के प्रवेश को बढ़ाने के निर्देश भी दिए गए हैं। सरकार ने ड्रॉपआउट और आउट- ऑफ- स्कूल बच्चों की पहचान कर उन्हें पुन: शिक्षा से जोड़ने के लिए जमीनी स्तर पर रणनीति तैयार की है। कक्षा 5 से 6, 8 से 9 और 10 से 11 तक 100 प्रतिशत ट्रांजिशन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए हैं, ताकि बच्चों की पढ़ाई बीच में न छूटे और शिक्षा की निरंतरता बनी रहे।

सेंसेक्स 79273.33
निफ्टी 24576.60

सोना 153594
प्रति 10 ग्राम (24 कैरेट)

अर्थ व्यापार

चांदी रु. 250210
प्रति किलो

शेयर बाजारों में गिरावट के बाद वैश्विक कारकों पर रहेगी नजर

मुंबई, वार्ता

घरेलू शेयर बाजारों में पिछले सप्ताह रही गिरावट के बाद आने वाले सप्ताह में निवेशकों की नजर वैश्विक कारकों पर रहेगी। अमेरिका-ईरान शांति वार्ता के साथ ही होर्मुज जलडमरूमध्य को लेकर जारी गतिरोध पर निवेशक नजदीकी नजर रख रहे हैं। अमेरिकी फेडरल रिजर्व की 28 और 29 अप्रैल को होने वाली बैठक का असर भी पूरी दुनिया के शेयर बाजारों पर पड़ेगा।

घरेलू स्तर पर औद्योगिक उत्पादन के आंकड़े भी आने वाले सप्ताह में जारी होने हैं। साथ ही कंपनियों के तिमाही परिणाम बाजार को प्रभावित करना जारी रखेंगे। बीते सप्ताह पहले दो दिन बाजार में तेजी रही, लेकिन अगले तीन दिन बिकवाली हावी रही। बीएसई का सेंसेक्स 1,829 अंक (2.33 प्रतिशत) की साप्ताहिक गिरावट में 76,664.21 अंक पर बंद हुआ। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी-50 सूचकांक भी सप्ताह के दौरान 455.60 अंक यानी 1.87 प्रतिशत टूटकर शुक्रवार को 23,897.95 अंक पर बंद हुआ। मझौली कंपनियों का निफ्टी मिडकैप-50 सूचकांक भी 1.60 प्रतिशत की साप्ताहिक गिरावट में रहा। वहीं छोटी कंपनियों का स्मॉलकैप-100 सूचकांक उतार-चढ़ाव से होता हुआ अंत में लगभग स्थिर रहा। सप्ताह के दौरान आईटी कंपनियों पर भारी दबाव देखा गया। निफ्टी आईटी सूचकांक सप्ताह के दौरान 10.31 प्रतिशत लुढ़क गया।

अमेरिका ईरान में जारी तनाव से डामर संकट गहराया

लखनऊ/हमीरपुर। अमेरिका-ईरान के बीच जारी तनाव और कच्चे तेल की आपूर्ति प्रभावित होने से उत्तर प्रदेश में सड़कों के निर्माण के लिए आवश्यक डामर (बिटुमिन) का संकट गहरा गया है। इसका असर हमीरपुर जिले में लोक निर्माण विभाग की सड़क परियोजनाओं पर साफ दिखाई दे रहा है। कई सड़कें अधर में लटक गई हैं, जबकि कुछ स्थानों पर गुणवत्ता को लेकर भी सवाल उठने लगे हैं। लोक निर्माण विभाग के अधीक्षण अभियंता (एसई) सुनील कांत ने रविवार को बताया कि सड़क निर्माण में उपयोग होने वाला डामर क्रूड ऑयल से तैयार होता है और भारत में इसके लिए ईरान सहित अन्य देशों से कच्चे तेल का आयात किया जाता है।

चावल, गेहूं, चीनी में साप्ताहिक तेजी, दालों, खाद्य तेलों में घट-बढ़

नई दिल्ली, वार्ता

घरेलू थोक जिंस बाजारों में बीते सप्ताह चावल के औसत भाव बढ़ गए। चावल के साथ गेहूं और चीनी में भी तेजी रही। खाद्य तेलों और दालों में उतार- चढ़ाव का रुख देखा गया।

सप्ताह के दौरान चावल की औसत कीमत चार रुपये बढ़कर सप्ताहांत पर 3,847 रुपये प्रति क्विंटल पर पहुंच गई। गेहूं भी 10 रुपये महंगा होकर 2,780 रुपये प्रति क्विंटल पर रहा। आटे का भाव पांच रुपये बढ़कर 3,270 रुपये प्रति क्विंटल हो गया। सप्ताह के दौरान तुअर दाल की औसत कीमत 33 रुपये प्रति क्विंटल घट गई। उड़द दाल 15 रुपये और चना दाल तीन रुपये सस्ती हुई। मसूर दाल का भाव 23 रुपये और मूंग दाल का नौ रुपये प्रति क्विंटल बढ़ गया। बीते सप्ताह सरसों तेल की औसत कीमत 57 रुपये प्रति क्विंटल फिसल गई, जबकि अन्य खाद्य तेलों में तेजी रही। मूंगफली तेल 109 रुपये और सोया तेल 61 रुपये महंगा हुआ। वनस्पति का भाव 58 रुपये और पाम ऑयल का 44 रुपये बढ़ा। सूरजमुखी तेल 37 रुपया प्रति क्विंटल मजबूत हुआ। मीठे के बाजार में बीते सप्ताह गुड़ का औसत भाव 21 रुपये प्रति क्विंटल बढ़ गया। चीनी भी दो रुपये महंगी हुई। सरकारी वेबसाइट पर जारी खाद्यान्नों के औसत थोक भाव शनिवार को इस प्रकार रहे। दाल-दलहन: दाल चना 7686.02 रुपये, मसूर काली 8085.22 रुपये, मूंग दाल 10208.98 रुपये, उड़द दाल 10826.44 रुपये, तुअर दाल 11230.67 रुपये प्रति क्विंटल रही। अनाज: (भाव प्रति क्विंटल) गेहूं दड़ा 2779.79 रुपये और चावल 3847.23 रुपये प्रति क्विंटल और आटा (गेहूं) 3274.52 रुपये प्रति क्विंटल रहा। चीनी-गुड़: चीनी एस 4310.66 रुपये और गुड़ 5044.78 रुपये प्रति क्विंटल बोले गए। खाद्य तेल: सरसों तेल 17866.06 रुपये, मूंगफली तेल 18916.85 रुपये, सूरजमुखी तेल 17516.11 रुपये, सोया तेल 15002.66 रुपये, पाम ऑयल 13442.13 रुपये और वनस्पति 14965.02 रुपये प्रति क्विंटल के स्तर पर रहा।

बागी 7 राज्यसभा सांसदों की सदस्यता खत्म करने को आप ने भेजा आवेदन

नई दिल्ली, वार्ता

■ सभापति और उपराष्ट्रपति से की मांग

आम आदमी पार्टी ने राज्यसभा के सभापति और उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन से 7 सांसदों की सदस्यता खत्म करने की मांग की है। इसे लेकर आप ने सभापति से मांग की है कि जल्द से जल्द कार्रवाई करके न्यायपूर्ण फैसला दें। आप के ये सातों सांसद हाल ही में भारतीय जनता पार्टी में शामिल हो गए हैं।

आप के राज्यसभा सांसद संजय सिंह ने कहा कि पार्टी ने संवैधानिक विशेषज्ञों से सलाह ली है। इनमें वरिष्ठ वकील कपिल सिब्बल और लोकसभा के पूर्व महासचिव पीडीटी आचार्य भी शामिल हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि ये सांसद कानून के तहत अयोग्य ठहराए जा सकते हैं। संजय सिंह ने कहा कि राज्यसभा के सभापति और देश के उपराष्ट्रपति को एक शिकायत भेजी है, जिसमें संविधान की 10 वी अनुसूची के मुताबिक सातों सदस्यों की सदस्यता खत्म करने के लिए अनुरोध किया है। संजय सिंह ने कहा कि एक पार्टी से आप चुनकर आते है और एजेंसीज का दुरुपयोग करके आपको तोड़ा जाता है। आपको डराकर अपने में मिला लेती है, ये पंजाब और देश के संवैधानिक साथ धोखा है। संजय सिंह ने कहा कि दसवीं अनुसूची (एंटी-डिफेक्शन कानून) के तहत ऐसे दलबदल मान्य नहीं हैं। उन्होंने कहा कि इन सांसदों को अयोग्य घोषित किया जाना चाहिए। पार्टी सूत्रों का कहना है कि लीडरशिप को दलबदल की आशंका थी और आखिरी समय में कुछ सांसदों को रोकने की कोशिश भी की गई थी, लेकिन पार्टी नेताओं की काफी कोशिशों के बाद भी सातों राज्यसभा सांसद बीजेपी में शामिल हो गए। इस बीच पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से समय मांगा था, ताकि सांसदों को वापस बुलाया जा सके लेकिन संविधान में सांसदों या विधायकों को वापस बुलाने (रिकॉल) का कोई प्रावधान नहीं है। इस पूर मामले में कानूनी राय बंटी हुई है। आप का कहना है कि ये दलबदल असंवैधानिक है, लेकिन कई विशेषज्ञों का मानना है कि एंटी-डिफेक्शन कानून में अगर विधायी दल के दो-तिहाई सदस्य साथ हों, तो विलय (मर्जर) की अनुमति है।

दिल्ली-एनसीआर की मंडियों में रेट कंट्रोल करेगा हरदोई

■ गंगा एक्सप्रेसवे से आएगी खुशहाली, रोज पहुंचेंगी सब्जियां

लखनऊ। दिल्ली-एनसीआर वासियों को अब ताजी सब्जियां मिला करेंगी। इसके लिए हरदोई रेट नियंत्रित करेगा। 29 अप्रैल को हरदोई में गंगा एक्सप्रेसवे का उद्घाटन होने जा रहा है। इसके बाद गंगा की तराई में पैदा होने वाली हरी सब्जियों की बड़ी खेप रोज दिल्ली-एनसीआर की मंडियों में पहुंचने लगेगी। अभी परिवहन के साधनों की कमी की वजह से इन इलाकों से सब्जियों की खेप बड़ी मुश्किल से बड़ी मंडियों तक पहुंच पाती थी।

हरदोई में होटल कारोबारी रानू का कहना है कि इन सब्जियों और सलाद की डिमांड बड़े होटलों में खूब है। इसके लिए किसानों को मुंह मांगी कीमत भी मिलती है, लेकिन अभी तक इसे हरदोई के बाहर के होटलों तक पहुंचाना ही मुश्किल था। अब गंगा एक्सप्रेसवे शुरू होने के बाद दिल्ली, नोएडा, गाजियाबाद, मेरठ और प्रयागराज के 5 स्टार होटल सीधे किसानों से सलाद की फसल खरीद सकेंगे। उन्होंने उदाहरण के जरिए समझाया कि अभी हरदोई में तरबूज 8 से 10 रुपये किलो मिल रहा है, जबकि दिल्ली में 40 से 100 रुपये का भाव है। यदि यहां से तरबूज दिल्ली जाए, तो सारे खर्चे काटने के बाद भी भाव 20 रुपये से ज्यादा नहीं होगा। बड़ी बात कि यह पैसा सीधा किसान की जेब में जाएगा। गंगा एक्सप्रेसवे इन क्षेत्रों खासतौर पर शाहजहांपुर और हरदोई आदि जिलों के लिए वरदान बन सकता है।

गंगा एक्सप्रेसवे के साथ उभरेगा इंटीग्रेटेड मैन्युफैक्चरिंग हब

■ योजना के तहत 594 किमी लंबे एक्सप्रेसवे के किनारे 12 औद्योगिक नोड्स विकसित किए जा रहे

लखनऊ। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 29 अप्रैल को हरदोई में गंगा एक्सप्रेसवे को देशवासियों को समर्पित करेंगे। योगी सरकार इस परियोजना को एक्सप्रेसवे सह इंडस्ट्रियल कॉरिडोर मॉडल के रूप में आगे बढ़ा रही है। सरकार ने उत्तर प्रदेश में बुनियादी ढांचे को औद्योगिक विकास से जोड़ते हुए गंगा एक्सप्रेसवे को इंटीग्रेटेड मैन्युफैक्चरिंग एंड लॉजिस्टिक्स क्लस्टर (आईएमएलसी) के रूप में विकसित किया है।

एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण की इस योजना के तहत 594 किमी लंबे एक्सप्रेसवे के किनारे 12 औद्योगिक नोड्स विकसित किए जा रहे हैं, जिनके लिए 6,507 एकड़ भूमि चिन्हित की गई है। अब तक 987 निवेश प्रस्ताव प्राप्त हो चुके हैं, जिनके जरिए लगभग 47 हजार करोड़ रुपये के निवेश का लक्ष्य तय किया गया है। यह पूरी योजना 12 जिलों में औद्योगिक विकास का नया नेटवर्क खड़ा करेगी। आईएमएलसी योजना के तहत पूरे एक्सप्रेसवे कॉरिडोर में सभी 12 जिलों में 12 नोड्स बनाए गए हैं। इन नोड्स के लिए कुल 6,507 एकड़ भूमि चिन्हित की गई है। प्रत्येक नोड को उसकी भौगोलिक स्थिति और औद्योगिक संभावनाओं के आधार पर डिजाइन किया गया है, ताकि मैन्युफैक्चरिंग, वेयरहाउसिग और लॉजिस्टिक्स सेक्टर को एकीकृत रूप से बढ़ावा मिल सके। मेरठ से प्रयागराज तक हर नोड का लोकेशन और एरिया तय कर लिया गया है। इन नोड्स की यह स्ट्रैटेजिक प्लानिंग पूरे एक्सप्रेसवे को एक 'इकोनॉमिक ग्रोथ बेल्ट' में बदल देगी। आईएमएलसी योजना को निवेशकों से जबरदस्त रिस्पॉन्स मिला है। अब तक 987 'इंटेंट्स ऑफ इन्वेस्टमेंट' प्राप्त हुए हैं, जिनके जरिए 46,660 करोड़ रुपये के निवेश की संभावना है। यह निवेश मुख्य रूप से मैन्युफैक्चरिंग यूनिट्स, लॉजिस्टिक्स पार्क, वेयरहाउसिग, ई-कॉमर्स सप्लाई चेन और एग्री-प्रोसेसिग सेक्टर में आएगा। एक्सप्रेसवे के किनारे विकसित होने वाले आईएमएलसी नोड्स माल परिवहन को तेज और सस्ता बनाएंगे, जिससे उद्योगों की लागत घटेगी।

CMYK

शादी से पहले प्रेमी के साथ युवती फरार

लाखों की नकदी व जेवर लेकर हुई चम्पत

शाह टाइम्स ब्यूरो

अमरोहा। नौगावां सादात थाना क्षेत्र से एक युवती के प्रेमी के साथ फरार होने का मामला सामने आया है। युवती अपने साथ शादी के लिए रखे एक लाख रुपये, जेवर और कपड़े भी ले गई है। पुलिस ने परिजनों की शिकायत पर मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

क्षेत्र के एक गांव निवासी व्यक्ति ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि उनकी 21 वर्षीय 20 अप्रैल को लापता हो गई। उन्होंने आरोप लगाया कि एक युवक उनकी बेटी को बहला-फुसलाकर अपने साथ ले गया है। शिकायत के अनुसार, अपने साथ शादी के लिए रखे गए एक लाख रुपये नकद, जेवर और कपड़े भी ले गई है। पुलिस से मामले की गहनता से जांच करने और दोषियों के खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई करने की मांग की। प्रभारी निरीक्षक बालेंद्र कुमार ने शिकायत के आधार पर मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। युवती की तलाश की जा रही है, जिसे जल्द बरामद कर आरोपी युवक को गिरफ्तार कर लिया जाएगा। वहीं, चर्चा है कि दोनों के बीच प्रेम-प्रसंग चल रहा था। वहीं, परिजनों ने उसकी शादी की तैयारियां शुरू कर दी थीं, रिश्ता लगने से पहले ही युवती ने प्रेमी का साथ चुन लिया और अपनी शादी के लिए परिजनों द्वारा जोड़कर रखी के लिए रखी नकदी और खरीदे गए जेवरात लेकर घर से फरार हो गई।

ट्रेनिंग पूरी कर मैदान में उतरे नए आरक्षी

पुलिस लाइन में भव्यपासिंग परेड का आयोजन, नोएडा के उप महानिरीक्षक ने ली परेड की सलामी

शाह टाइम्स ब्यूरो

अमरोहा। रिजर्व पुलिस लाइन में रविवार को वर्ष 2025 की आरक्षी भर्ती के 194 रंगरूटों की पासिंग आउट परेड का आयोजन किया गया। आरटीसी में नौ महीने के कठिन परिश्रम के बाद ड्यूटी के लिए तैयार हुए आरक्षियों ने परेड में खूब दमखम दिखाया। पुलिस-प्रशासनिक अधिकारियों ने आरक्षियों को अनुशासन और कर्तव्यनिष्ठा का पाठ पढ़ाते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

समारोह के मुख्य अतिथि नोएडा के उपमहानिरीक्षक अजय कुमार ने परेड की सलामी ली। इस दौरान रिक्रूट्स ने शानदार तालमेल और अनुशासन का प्रदर्शन करते हुए मार्च पास्ट किया, जिसे वहां मौजूद अधिकारियों और दशकों ने खूब सराहा।उपमहानिरीक्षक अजय कुमार ने मंच से अनुशासन का पाठ पढ़ाते हुए कहा

कि पुलिस सेवा मात्र एक नौकरी नहीं है बल्कि समाज के प्रति समर्पण और जिम्मेदारी का कार्य है। उन्होंने नए जवानों को ईमानदारी, अनुशासन और संवे. दनशीलता के साथ अपनी ड्यूटी निभाने के लिए प्रेरित किया। कहा कि ये प्रशिक्षण समाप्त नहीं हुआ है बल्कि अब इसका रूप बदला गया है। हर आरक्षी जनसेवा, कानून व्यवस्था बनाए रखने के अलावा पुलिस विभाग की गरिमा को उच्च बनाए रखने के लिए समर्पित रहना होगा। इस दौरान सभी रिक्रूट आरक्षियों को देश सेवा, संविधान के प्रति निष्ठा और जनसुरक्षा की पद व गोपनीयता की शपथ दिलाई गई। विशिष्ट अतिथि डीएम नितिन गौड़ ने आरक्षियों को पूर्ण समर्पण के साथ कार्य करने का संदेश दिया। वहीं, एसपी लखन सिंह यादव ने कहा कि ऊर्जावान और प्रशिक्षित आरक्षियों का साथ मिलने से पुलिस व्यवस्था और अधिक मजबूत होगी। उन्होंने सभी से अनुशासन, सेवा भावना और टीम वर्क के साथ अपने दायित्वों का का निर्वहन करने का आह्वान किया। इस दौरान एएसपी अखिलेश भदौरिया, सीओ लाइन अवधभान सिंह भदौरिया, सीओ सिटी अभिषेक कुमार, आरआई घनश्याम सिंह समेत अन्य पुलिस-प्रशासनिक अधिकारी मौजूद रहे।

उत्कृष्ठ प्रदर्शन पर रिक्रूट सम्मानित

शाह टाइम्स ब्यूरो अमरोहा। मुख्य अतिथि उपमहानिरीक्षक नोएडा अजय कुमार द्वारा कार्यक्रम के दौरान उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले रिक्रूट आरक्षियों को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। अन्तः विषय में विभाजित समूह में नितिन कुमार, उज्ज्वल देशवाल, शिवम सैनी, कमल चौधरी, मोहम्मद इरशाद, रवि कुमार व विशाल कुमार तथा बाह्य विषय में छविकांत, अंकित कुमार, विनीत, सक्षम गिरी, अंकित कुमार, वंश कुमार यादव, विशाल कुमार, नितिन कुमार, रोहित कुमार व सिद्धार्थ चौधरी का प्रदर्शन सराहनीय रहा वहीं परेड कमांडर के रूप में अंकित कुमार, उज्जवल देशवाल व विशाल पंवार श्रेष्ठ रहे। अन्तः विषयों में उज्जवल देशवाल व बाह्य विषयों में अंकित कुमार ने प्रथम स्थान प्राप्त किया जबकि सर्वांगीण सर्वोत्तम रिक्रूट में भी उज्ज्वल देशवाल ने प्रशिक्षण के दौरान अपनी काबिलियत से सभी को चौंकाया।

दूसरे दिन 1754 ने छोड़ी होमगार्ड परीक्षा

नगर के दस केन्द्रों पर शांतिपूर्ण सम्पन्न हुई परीक्षा, गेट पर तलाशी के बाद ही मिला परीक्षा केन्द्र में प्रवेश

शाह टाइम्स ब्यूरो

अमरोहा। होगमार्ड परीक्षा के दूसरे दिन 1754 अभ्यर्थियों ने परीक्षा से किनारा कर लिया। नगर के दस परीक्षा केन्द्रों पर कड़ी सुरक्षा के बीच परीक्षा सम्पन्न करायी गयी।

नगर के दस परीक्षा केन्द्रों पर आयोजित होमगार्ड परीक्षा के दूसरे दिन बड़ी संख्या में अभ्यर्थी परीक्षा से किनारा कर रहे हैं। कड़ी सुरक्षा के बीच दो पालियों में यह परीक्षा दूसरे दिन आयोजित की गयी। पहली पाली में पंजीकृत 4705 अभ्यर्थियों में से 900 अभ्यर्थी परीक्षा देने नहीं पहुंचे जबकि 3805 ने परीक्षा दी। इसके अलावा दूसरी पालीमें पंजीकृत 4705 अभ्यर्थियों में से 3850 परीक्षा में शामिल हुए जबकि 854 अभ्यर्थी परीक्षा देने नहीं पहुंचे। अभ्यर्थियों को गेट पर तलाशी के बाद परीक्षा केन्द्र में प्रवेश दिया गया। परीक्षा केन्द्र के बाहर परीक्षार्थियों की लम्बी लम्बी लाइने लगी रहीं। सुबह दस बजे से पहली पाली शुरू हुई जबकि अभ्यर्थियों की रिपोर्टिंग समय प्रातः

आठ बजे रखा गया है। जिस कारण बड़ी संख्या में अभ्यर्थी समय से पूर्व ही परीक्षा केन्द्र पहुंच गये। परीक्षा को नकलविहिन सम्पन्न कराने के लिए प्रत्येक केन्द्र पर स्टेटिक मजिस्ट्रेट तैनात किये गये हैं। जबकि परीक्षा केन्द्र के आसपास साइबर कैफे व फोटोकापी की दुकानों को बंद रखने के निर्देश दिये गये हैं। इसके अलावा जाम से निपटने के लिए बड़े वाहनों की नो ऐन्ट्री रखी गयी है। किसी भी प्रकार की इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस या संदिग्ध सामग्री को पूरी तरह प्रतिबंधित रखा गया। परीक्षा कक्षों में सीसीटीवी कैमरे लगाए गए हैं, जिनके माध्यम से हर गतिविधि पर लगातार नजर रखी जा रही है। इसके अलावा प्रत्येक केंद्र पर पर्याप्त संख्या में पुलिस बल और प्रशासनिक अधिकारी तैनात रहे। केंद्र व्यवस्थापकों को भी स्पष्ट निर्देश दिए गए हैं कि किसी भी प्रकार की लापरवाही या अनुशासनहीनता पर तुरंत कार्रवाई की जाए। परीक्षा के दौरान सोशल डिस्टेंसिंग और अनुशासन का भी विशेष ध्यान रखा गया।

कार से कुचलकर युवक की हत्या का प्रयास

सड़क पर फिल्मी अंदाज में किया हमला

शाह टाइम्स ब्यूरो

अमरोहा। देहात क्षेत्र के मानकजुड़ी मार्ग पर एक युवक को कार से कुचलने की सनसनीखेज को. शिश का मामला सामने आया है। आरोप है कि तेज रफ्तार बलेनो कार सवारों ने पहले पीछे से टक्कर मारने की कोशिश की और असफल होने पर वाहन को पीछे लेकर दोबारा युवक को रौंदने का प्रयास किया। हालांकि सूझबूझ दिखाते हुए युवक खेत की ओर भाग गया और अपनी जान बचा ली। घटना के बाद पीड़ित की शिकायत पर पुलिस ने जांच शुरू कर दी है।

घटना क्षेत्र के मानकजुड़ी मार्ग की है। जानकारी के अनुसार, सुरजीत सिंह निवासी गांव मानकजुड़ी, शनिवार दोपहर करीब 3:15 बजे कैलसा बॉर्डर से अपने घर लौट रहे थे। जैसे ही वह कैलसा रेलवे स्टेशन से मानकजुड़ी रोड पर पहुंचे, पीछे से आ रही सफेद रंग की बलेनो कार ने अचानक तेज रफ्तार में आकर उन्हें टक्कर मारने का प्रयास किया। पीड़ित के अनुसार, उन्होंने किसी तरह खुद को संभालते हुए वाहन से बचाव किया। लेकिन आरोप है कि कार चालक यहीं नहीं रुका और उसने वाहन को पीछे लेकर दोबारा कुचलने की कोशिश की। स्थिति को भांपते हुए सुरजीत सिंह सड़क किनारे खेत की ओर भागे और अपनी जान बचाई।।घटना के दौरान सड़क पर अन्य वाहनों की आवाजाही बढ़ने लगी, जिससे घबराकर कार सवार धमकी देते हुए मौके से फरार हो गए। पीड़ित का कहना है कि कार सवारों का इरादा साफ तौर पर उन्हें जान से मारने का था। घटना के बाद पीड़ित सीधे अपने घर पहुंचा और परिजनों को पूरी जानकारी दी। इसके बाद थाना अमरोहा देहात में शिकायत दर्ज कराई। सीओ अवधभान सिंह भदौरिया ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है। जांच के आधार पर आवश्यक कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

एक नजर

यासिर अंसारी बने मोमिन अंसार सभा के प्रदेश अध्यक्ष

शाह टाइम्स ब्यूरो अमरोहा। सभासद मो. यासिर अंसारी एडवोकेट को मोमिन अंसार सभा का प्रदेश अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। यह घोषणा लखनऊ में आयोजित संस्था के 16वें राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान की गई। संस्था के राष्ट्रीय अध्यक्ष अकरम अंसारी ने मो. यासिर अंसारी की मेहनत, लगन और संगठन के प्रति समर्पण को देखते हुए उन्हें यह महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी। मो. मिन अंसार सभा एक गैर-राजनैतिक सामाजिक संस्था है, जो दबे-कुचले व पिछड़े मुस्लिम समाज की आवाज उठाने और उनकी मदद के लिए कार्य करती है। सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में उत्तर प्रदेश सरकार के मंत्री दानिश आजाद अंसारी मौजूद रहे। कार्यक्रम के दौरान संगठन को मजबूत करने और समाज के उत्थान के लिए मिलकर कार्य करने पर जोर दिया गया। मो. यासिर अंसारी की इस नियुक्ति पर अमरोहा समेत प्रदेश भर में खुशी की लहर है। उनके समर्थकों और शुभचिंतकों द्वारा लगातार उन्हें बधाइयां दी जा रही हैं।

सांसद ने शोक संतप्त परिवारों से मिलकर जताई संवेदना

शाह टाइम्स ब्यूरो अमरोहा। सांसद कुंवर सिंह तंवर ने विभिन्न गांवों में पहुंचकर शोक संतप्त परिवारों से मुलाकात की और उन्हें सांत्वना दी। सांसद कंवर सिंह तंवर सबसे पहले विधानसभा हसनपुर के ग्राम गंगेश्वरी फूलपुर पहुंचे, जहां उन्होंने दिवंगत नागर के सुपुत्र स्व. नागर (17 वर्ष) एवं विजय कसाना के सुपुत्र स्व. अतुल कसाना (22 वर्ष) के आकस्मिक निधन पर उनके परिजनों से मिलकर गहरा दुख व्यक्त किया। इसके बाद वह ग्राम गंगेश्वरी के ही आमदाबाद निवासी मनोज खड़गवंशी के आवास पर पहुंचे और उनके सुपुत्र स्व. मनोज खड़गवंशी के सड़क दुर्घटना में ट्रैक्टर पलटने से हुए निधन पर शोक संवेदना प्रकट की। इस दौरान मनोज शर्मा, महेश खड़गवंशी, अर्जुन सिंह, भगवान नागर, अशोक यादव, सचिन गुर्जर, मन्नान गुर्जर, मयंक कसाना, अंकुर त्यागी, अंकुर चौहान, मोहित खड़गवंशी आदि मौजूद रहे।

ई-रिक्शा से बैटरियां चोरी

शाह टाइम्स संवाददाता हसनपुर। इलाके में चोरों के हौसले इस कदर बुलंद हैं कि अब वे घरों के बाहर खड़े वाहनों को निशाना बनाने से भी नहीं चूक रहे हैं। ताजा मामला हैबतपुर बंजारा रोड का है। जहाँ सुहैल पुत्र शौकीन नामक व्यक्ति की ई-रिक्शा को चोरों ने अपना निशाना बनाया है। पीड़ित शौकीन के अनुसार रोज की तरह उन्होंने अपनी ई-रिक्शा घर के बाहर खड़ी की थी। रात्रि करीब 11:00 बजे अज्ञात चोरों ने मौका पाकर रिक्शा में लगी कीमती बैटरियां चोरी कर लीं। पीड़ित ने बताया कि चोरी हुई बैटरियों की कुल कीमत लगभग 25,000 है। सुबह जब शौकीन वाहन के पास पहुँचे, तो उन्हें चोरी की जानकारी हुई, जिसके बाद तुरंत पुलिस को सूचित किया गया।

स्कार्पियो सवारों ने मां-बेटे पर की फायरिंग

दिनदहाड़े फायरिंग से बागड़पुर मेंहड़कम्प

शाह टाइम्स ब्यूरो

अमरोहा। रजबपुर क्षेत्र के गांव बागड़पुर में शनिवार शाम स्कॉर्पियो सवार लोगों ने एक मां-बेटे को निशाना बनाकर गोली चलाई, हमले में दोनों बाल-बाल बच गए। निशाने से भटकी गोली घर के गेट के पास लगे सीमेंट के पिलर में जा धंसी। पुलिस ने पीड़ित पक्ष की तहरीर पर मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

पुलिस को दी गई तहरीर में गांव निवासी सर्वेश देवी ने बताया है कि शनिवार शाम करीब 6:30 बजे वह अपने घर पर थीं। तभी एक ब्लैक स्कॉर्पियो गाड़ी उनके गेट के सामने आकर रुकी। गाड़ी से उतरे गांव के ही सचिन उर्फ मुनेंद्र पुत्र सतवीर ने गाली-गलौज शुरू कर दी। विरोध करने पर आरोपी ने तमंचा निकालकर जान से मारने की नीयत से फायर कर दिया। सर्वेश देवी ने दीवार की आड़ लेकर अपनी जान बचाई। शोर सुनकर उनका बेटा मौके पर पहुंचा तो आरोपी ने उस पर भी दूसरा फायर किया, लेकिन वह भी बाल-बाल बच गया। फायरिंग के बाद आरोपी जान से मारने की धमकी देते हुए मौके से फरार हो गया। कुछ देर बाद पीड़िता के भतीजे विजेंद्र को भी फोन पर धमकी दी गई कि आज तो बच गए, कब तक बचोगे। दिनदहाड़े फायरिंग की घटना से गांव में दहशत फैल गई। घटना के बाद पीड़ित पक्ष ने तत्काल पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने आरोपी सचिन उर्फ मुनेंद्र के खिलाफ संबंधित धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया है। थाना प्रभारी संजय कुमार सिंह ने बताया कि मामले में मुक. दमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी गई है। आरोपी की तलाश में दबिश दी जा रही है, जल्द गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

होमगार्ड परीक्षा के दूसरे दिन भी जाम ने रूलाया

वाहनों की लगी लम्बी-लम्बी कतारें

शाह टाइम्स संवाददाता

अमरोहा। होमगार्ड परीक्षा के दूसरे दिन भी जाम लोगो के लिए मुसीबत बना। परीक्षा छूटने के बाद जाम ने शहर को अपनी गिरफ्त में ले लिया। भीषण गर्मी ऊपर से जाम का झंझाल लोगो के लिए आफत का सबब बना। जाम मे फंसे लोग मंजिल तक पहुंचने की जद्दोजेहद में बेहाल नजर आए और उनके पसीने छूट गए। कड़ी मशक्कत के बाद पुलिस कर्मियों ने जाम को खुलवाया। तब कही जाकर लोगों ने राहत की सांस ली।

रविवार को होमगार्ड परीक्षा के दूसरे दिन शहर के राजकीय इंटर कॉलेज, जीजीआईसी, आईएम इंटर कॉलेज, हिंदू इंटर कॉलेज समेत कई कॉलेज में परीक्षा सम्पन्न हुई। दोपहर को 12 बजे जैसे ही परीक्षा छूटी तो गांधी मूर्ति, टीपी नगर चौराहा,फ्लाई ओवर, बिजनौर रोड जाम की चपेट मै आ गए। राहगीर घंटो जाम से जूझते रहे। हर कोई अपनी मंजिल तक पहुंचने के लिए जाम से निकलने की जद्दोजेहद करता नजर आया। भीषण गर्मी ने जाम मे फंसे लोगों की मुसीबत में और इजाफा किया। गर्मी की तपिश से उनका बुरा हाल हो गया। होमगार्ड की परीक्षा देने दूर दराज शहरों से आए अभ्यर्थियों को भी जाम की मार झेलनी पड़ी। दूसरी पाली की परीक्षा में सम्मिलित होने वाले अभ्यर्थियों के दो पहिया व चार पहिया वाहन भी जाम मे फंसे रहे जिस कारण उन्हें परीक्षा केंद्र तक पहुंचने में परेशानियों का सामना करना पड़ा। कड़ी मशक्कत के बाद पुलिस व ट्रैफिक पुलिस कर्मियों ने जाम खुलवाया। तब कही जाकर यातायात व्यवस्था सुचारू हुई। तीन दिन तक चलने वाली होमगार्ड परीक्षा में अभ्यर्थियों को किसी तरह की परेशानी का सामना न करना पड़े इसको लेकर प्रशासन द्वारा रूट डाइवर्जन का खाका तैयार किया गया था। परंतु दोनों पालियों की परीक्षा के समय रूट डायवर्जन होने के बावजूद भी शहर जाम की गिरफ्त से नहीं निकल पाया। शहर जाम के झंझाल में पूरी तरह फसा हुआ है। सुबह से शाम तक लोगों को जाम से निपटने की अब तो आदत सी हो गई है। जाम की वजह से लोगों को मिनटों का सफर घंटों तय करने के साथ साथ दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है।

कार्यकर्ताओं का उत्साह ही पार्टी की ताकत: पाल

बछरायूं में सपा प्रदेश अध्यक्ष का स्वागत

शाह टाइम्स संवाददाता

बछरायूं। समाजवादी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्याम लाल पाल का रविवार को बछरायूं में पार्टी कार्यकर्ताओं ने गर्मजोशी के साथ स्वागत किया। कार्यक्रम मुजफ्फरनगर के सपा जिलाध्यक्ष जिया चौधरी के निवास 'नौबहार कोठी' पर आयोजित हुआ, जहां बड़ी संख्या में कार्यकर्ता मौजूद रहे।

प्रदेश अध्यक्ष के पहुंचते ही कार्यकर्ताओं ने समाजवादी पार्टी जिंदाबाद और अखिलेश यादव जिंदाबाद के नारे लगाए। फूल-मालाओं से लादकर उनका स्वागत किया गया। इस दौरान श्याम लाल पाल ने कहा कि कार्यकर्ताओं का प्रेम और जोश ही पार्टी की असली ताकत है। बैठक में उन्होंने आगामी राजनीतिक चुनौतियों पर चर्चा करते हुए 'मिशन-2027' का जिक्र किया। कहा कि आने वाले विधानसभा चुनाव प्रदेश के भविष्य के लिए अहम होंगे। उन्होंने कार्यकर्ताओं से बूथ स्तर तक मजबूती से काम करने और पूरी ताकत के साथ मैदान में उतरने का आह्वान किया। प्रदेश अध्यक्ष ने निर्देश दिए कि पार्टी की नीतियों और जनहित के कामों को गांव-गांव और घर-घर तक पहुंचाया जाए। उन्होंने कहा कि राजनीति में मेहनत का कोई विकल्प नहीं होता और जनता को दमन व जनविरोधी नीतियों के खिलाफ जागरूक करना जरूरी है। इस मौके पर मुजफ्फरनगर जिलाध्यक्ष जिया चौधरी, अमरोहा जिलाध्यक्ष मसतराम यादव, आलोक भारती एडवोकेट, सैफ चौधरी, अरशद हसन, मोहसिन चौधरी, बिलाल चौधरी, आदिल चौधरी, विपिन कौशिक, महताब चौधरी, खलील बगड़ी, लाखन सिंह पाल, नौशाद शेख, इश्तियाक मलिक, जितांबर यादव, जितेंद्र यादव, आलम शेख, चंद्रपाल सैनी, आमिर रजा जैदी और वरुण सिंह समेत कई नेता व कार्यकर्ता मौजूद रहे।

पीडीए की ताकत से भाजपा की सत्ता से विदाई तय

शाह टाइम्स संवाददाता, गजरौला। हाइवे स्थित एक रिसोर्ट में वैवाहिक कार्यक्रम में सम्मिलित होने आए प्रदेशाध्यक्ष श्यामलाल पाल का समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ताओं ने स्वागत किया। प्रदेशाध्यक्ष ने कार्यकर्ताओं से कहा कि, जनपद में सभी सक्रियता से अपना अपना कार्य करें। जनता वर्तमान सरकार से दुखी है। मंहगाई, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी चरम सीमा पर है। महिलाऐं, किसान, छात्र, नौजवान सभी वर्ग के लोग परेशान हैं और इस सरकार से छुटकारा चाहते हैं। उन्होंने कहा कि पीडीए की ताकत से आने वाले विधानसभा चुनावों में भाजपा की उत्तर प्रदेश से विदाई तय है। उन्होंने कहा कि जिसको भी पार्टी नेतृत्व चुनाव में उम्मीदवार बनाए, उसे सभी कार्यकर्ता एकजुट होकर चुनाव लड़ाएं और 2027 में समाजवादी पार्टी की उत्तर पदेश में सरकार बनाएं। इस मौके पर पूर्व विधायक अशफाक अली खां एडवोकेट भी मौजूद रहे।

फर्जी मुकदमे में फंसाने की साजिश में दो पकड़े

शाह टाइम्स संवाददाता हसनपुर। पुलिस ने एक बड़ी सफलता हासिल करते हुए फर्जी मुकदमे में फंसाने की साजिश रचने वाले दो शातिर आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पकड़े गये अभियुक्तों की पहचान सोहित कुमार निवासी ग्राम आलमपुर और नीरज कुमार निवासी ग्राम कुटी दौलतपुर के रूप में हुई है। पुलिस के अनुसार, इन दोनों ने किसी व्यक्ति को झूठे केस में फंसाने की योजना बनाई थी। पुलिस टीम ने तकनीकी साक्ष्यों और मुखबिर की सूचना के आधार पर जाल बिछाया और दोनों को दबिश देकर धर दबोचा। पुलिस ने मामले का खुलासा करते हुए बताया कि तकनीकी जांच में आरोपियों की साजिश उजागर हो गई। गिरफ्तारी के बाद पुलिस ने वैधानिक कार्रवाई पूरी कर दोनों आरोपियों को न्यायालय में पेश कर दिया है।

खोखे से सामान चुराने में दो पर मुकदमा

शाह टाइम्स संवाददाता हसनपुर। खोखे से टायर व अन्य सामान गायब किये जाने के मामले में पुलिस ने न्यायालय के आदेश पर दो लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है। नगर के मोहल्ला कोट पश्चिमी निवासी अरशद पुत्र जहीर रहरा मार्ग पर गोकुलधाम कॉलोनी से सेट स्थान पर टायर पंचर जोड़ने का काम करता है तथा वही उसका खोखा रखा हुआ था। कुछ दिन पूर्व कुछ लोगों ने उसके धोखे में तोड़फोड़ करते हुए उसमें रखे सामान को गायब कर दिया था। इस मामले को लेकर काफी हंगामा हुआ था। अरशद ने जिस स्थान पर खोखा रखा हुआ था उसे प्लांट बताते हुए कुछ लोगों पर कब्जा करने का आरोप लगाया था। जब के दूसरे पक्ष द्वारा खोखा स्वामी पर महिलाओं से छेड़छाड़ करने का आरोप लगाया गया था। लोनी के विधायक नंदकिशोर गुर्जर ने भी कोतवाली पहुंचकर इससे संबंधित मामले को मुद्दा बनाया था। चुके मामला राजनीतिक मुद्दा बन गया था। किसी कारण वंश इस मामले में रिपोर्ट दर्ज नहीं हुई थी। पीड़ित ने न्यायालय की शरण ली थी। कोर्ट के आदेश पर कोतवाली पुलिस ने कुलदीप व प्रदीप पुत्रगण सतवीर निवासी गोकुलधाम कॉलोनी के खिलाफ संबंधित धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया है।

प्यार की जुदाई सहन न कर सका युवक, की खुदकुशी

प्रेम कहानी का हुआ दर्दनाक अंत, युवक की मौत से मचा कोहराम

शाह टाइम्स संवाददाता

अमरोहा। नौगावां सादात थाना क्षेत्र के एक गांव में प्रेम विवाह के बाद उत्पन्न परिस्थितियों ने एक युवक की जान ले ली। पत्नी से मिलने की अनुमति न मिलने से आहत 22 वर्षीय युवक ने कीटनाशक पी लिया, जिससे उसकी मौत हो गई। घटना से परिवार में कोहराम मच गया, जबकि पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम कराकर मामले की जांच शुरू कर दी है।

घटना नौगावां सादात थाना क्षेत्र के एक गांव से जुड़ी है। यहां पर एक मजदूर का परिवार रहता है। उनके परिवार में पत्नी के अलावा अब दो बेटे और एक बेटी है। उनका 22 वर्षीय सबसे बड़ा बेटा भी पेशे से मजदूर था। बताया जा रहा है कि करीब तीन महीने पहले उसने बिजनौर जिले के स्योहारा थाना क्षेत्र के एक गांव निवासी युवती से प्रेम विवाह किया था। परिजनों के डर में कुछ दिन इधर-उधर छिपकर रहने के बाद वह इसी महीने पत्नी के साथ घर लौट आया था। उधर, युवती के परिजनों ने थाना स्योहारा में उसकी गुमशुदगी रिपोर्ट दर्ज करा दी थी। सुराग मिलने पर गांव पहुंची स्योहारा पुलिस उस वक्त युवती को अपने साथ ले गई थी लेकिन बयान दर्ज कराने के बाद पुलिस ने युवती को फिर से पति की ही सुपुर्दगी में दे दिया था। लेकिन, इसी बीच प्रेम विवाह का यह मामला हाईकोर्ट पहुंच गया। फिलहाल, खुद को पति-पत्नी बताने वाले इस जोड़े को आने वाले दिनों में हाईकोर्ट में पेश होना था। लिहाजा हाईकोर्ट का आदेश मिलने पर चार दिन पूर्व थाना पुलिस युवती को उसकी ससुराल से अपने साथ ले गई थी, महिला थाने में पेश करने के बाद उसे जिला अस्पताल में बने वन स्टॉप सेंटर में रखा गया था। जिससे मिलने की इजाजत किसी को नहीं दी गई थी। बताया जा रहा है कि शुक्रवार दोपहर में युवक, पत्नी से मिलने के लिए वन स्टॉप सेंटर पहुंचा तो गेट पर सुरक्षा में तैनात महिला पुलिसकर्मियों ने उच्चाधिकारियों के आदेश का हवाला देते हुए उसे मिलने से रोक दिया। मिन्नतों के बाद भी मुलाकात नहीं होने पर मायूस युवक घर लौट आया। इसके बाद उसने अपने कमरे में जाकर कीटनाशक का सेवन कर लिया। थोड़ी देर में ही उल्टियां शुरू होने पर परि. जनों में हड़कंप मच गया। तबियत बिगड़ती देख आनन-फानन में परिजनों ने युवक को निजी अस्पताल में भर्ती करा दिया, जहां डॉक्टर ने कीटनाशक पीने की पुष्टि करते हुए उपचार शुरू कर दिया लेकिन युवक की तबियत सुधरने के बदले बिगड़ती चली गई और उसी रात में उसकी मौत हो गई। सूचना पर पहुंची थाना पुलिस ने पंचायतनामा की कार्रवाई करते हुए शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। शनिवार को परिजनों ने शव का अंतिम संस्कार कर दिया।

व्यापारियों में झड़प से मची अफरा तफरी

घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल

शाह टाइम्स संवाददाता

हसनपुर। बर्तन व्यापारियों के बीच विवाद होने से अफरा तफरी मच गई। सरेराह लोहे की रॉड से हमला करते हुए वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है।

नगर में मुख्य बाजार में उस वक्त अफरा-तफरी मच गई। जब मामूली विवाद के बाद दो बर्तन व्यापारियों के बीच हिंसक झड़प हो गई। विवाद इतना बढ़ गया कि एक पक्ष ने दूसरे की दुकान पर धावा बोल दिया। सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहे एक वीडियो में दो भाई हमलावर रुख अपनाये नजर आ रहे हैं। वीडियो में साफ देखा जा सकता है कि एक युवक हाथ में लोहे की रॉड लेकर दूसरे की दुकान की पटरी पर प्रहार कर रहा है। और खुलेआम जान से मारने की धमकी दे रहा है। दिनदहाड़े बाजार में हुए इस हंगामे से अन्य व्यापारियों और ग्राहकों में दहशत का माहौल है। स्थानीय व्यापारियों ने इस घटना पर कड़ा रोष व्यक्त किया है। नगर की जनता और व्यापारिक संगठनों ने पुलिस प्रशासन से सुरक्षा की गुहार लगाते हुए आरोपियों के खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की मांग की है।

ठेकेदार के पिता ने लगाई न्याय की गुहार

■ मीडिया के माध्यम से बयां किया अपना दर्द

शाह टाइम्स संवाददाता, गजरौला। सिंचाई विभाग के ठेकेदार देवऋषि के पिता सेवानिवृत्त शिक्षक अतरपाल सिंह ने मीडिया के माध्यम से पुलिस तक अपनी बात पहुंचकर न्याय दिलाने की गुहार लगाई है। उनका कहना है कि उनके पुत्र और चालक की हत्या की गई है, न्यायालय के आदेश पर मुकदमा भी दर्ज है मगर पुलिस ने अभी तक कोई कार्रवाई नहीं की है।

रविवार को नगर के मौहल्ला शुक्लपुरी स्थित अपने आवास पर अतरपाल सिंह ने मीडिया से बताया कि उनके बेटे दीपक उर्फ देवऋषि गौतम (42) सिंचाई विभाग में ठेकेदार थे। उनके बेटे और उनके चालक चौबारा निवासी इंद्रपाल के शव 29 मई की सुबह मौहल्ला अवंतिका नगर स्थित कार्यालय परिसर में मिले थे। ठेकेदार के पिता अतरपाल सिंह ने दोनों को जहर देकर मारने का संदेह जताया था, लेकिन पुलिस द्वारा कोई कार्रवाई नहीं करने का आरोप लगाते हुए अतरपाल सिंह ने कोर्ट के आदेश पर दीपक की पत्नी रेखा व उसके परिजनों के साथ साथ दूसरे चालक विशाल आदि पर हत्या का संदेह जताते हुए मुकदमा दर्ज कराया था। बीच में उन्होंने विवेचना भी बदलवाई। अतरपाल सिंह का कहना है कि मुकदमा दर्ज कराए हुए तीन माह का समय बीत गया है, मगर अभी तक उन्हें इंसाफ नहीं मिला है। विवेचक ने हत्यारोपितों के घर पर एक दबिश तक भी नहीं दी है। उन्होंने शनिवार को विधायक राजीव तरारा से भी भेंट करके न्याय की गुहार लगाई। अतरपाल सिंह ने बताया कि विधायक ने उन्हें न्याय दिलाने का भरोसा दिया है। साथ ही अतरपाल सिंह ने पुलिस अधीक्षक से भी हत्यारोपियों के विरूद्ध कार्रवाई की मांग की है।

राजमिस्त्री की लापरवाही से फटा लेंटर

विरोध पर झूठे मुकदमे में फंसाने की धमकी

शाह टाइम्स संवाददाता

हसनपुर। गाँव काला खेड़ा में निर्माण कार्य के दौरान राजमिस्त्री की बड़ी लापरवाही का मामला सामने आया है। यहाँ के निवासी उवैस ने अपने घर के लेंटर का कार्य गाँव के ही एक मिस्त्री को इस भरोसे पर सौंपा था कि वह गुणवत्ता का विशेष ध्यान रखेगा। पीड़ित का कहना है कि उन्होंने निर्माण से पहले ही मजबूती और बेहतर सामग्री पर जोर दिया था।

हालाँकि, जैसे ही लेंटर की शटरिंग हटाई गई तो गृह स्वामी के होश उड़ गये। लेंटर कई जगह से फटा हुआ था। जिससे पूरे मकान की मजबूती पर सवालिया निशान लग गया है। जब उवैस ने इस घटिया निर्माण का विरोध किया और मिस्त्री से शिकायत की, तो आरोप है कि मिस्त्री ने अपनी गलती मानने के बजाय उल्टा पीड़ित को ही झूठे मुकदमे में फंसाने की धमकी दे डाली। मिस्त्री के अड़ियल रवैये और धमकी से डरे हुए पीड़ित उवैस ने अब स्थानीय थाने का दरवाजा खटखटाया है। उन्होंने पुलिस को तहरीर देकर अपनी जान-माल की सुरक्षा की गुहार लगाई है और आरोपी मिस्त्री के खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की मांग की है।

बच्चे परिवार ही नहीं देश का भी भविष्य: महबूब

आदर्श इंटर कालेज के वार्षिकोत्सव में बोले सदर विधायक

शाह टाइम्स संवाददाता

जोया। लोक लेखा समिति के सभापति एवं सदर विधायक महबूब अली ने कहा कि बच्चे न सिर्फ परिवार बल्कि देश का भविष्य भी होते हैं। इसलिए अभिभावकों को चाहिए कि वे अपने बच्चों की शिक्षा पर विशेष ध्यान दें।

आदर्श इंटर कॉलेज नसिरपुर में आयोजित वार्षिक उत्सव कार्यक्रम में सदर विधायक एवं पूर्व कैबिनेट मंत्री महबूब अली शामिल हुए। इस दौरान उन्होंने विद्यार्थियों को शिक्षा के महत्व के बारे में बताते हुए उज्ज्वल भविष्य के लिए प्रेरित किया।रविवार को आयोजित कार्यक्रम में विधायक महबूब अली ने कहा कि बच्चे न सिर्फ परिवार बल्कि देश का भविष्य भी होते हैं। इसलिए अभिभावकों को चाहिए कि वे अपने बच्चों की शिक्षा पर विशेष ध्यान दें। उन्होंने कहा कि पढ़ा-लिखा समाज ही तरक्की करता है और आने वाले समय में यही बच्चे देश का नाम रोशन करेंगे। उन्होंने आगे कहा कि समाज में आगे बढ़ने के लिए शिक्षा बेहद जरूरी है और शिक्षित समाज ही देश के विकास में अहम भूमिका निभा सकता है। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में अभिभावक और छात्र-छात्राएं मौजूद रहे। इस मौके पर हरिओम सिंह, शहपाल सिंह, मास्टर नौशाद, करण सिंह, रणवीर सिंह, अल्ताफ, शाहरोज प्रधान, रिहान प्रधान, अबरार, तहसीन, मास्टर समरपाल, जीशान मास्टर, मुजाहिर समेत कई लोग उपस्थित रहे।

कुत्ते के हमले में दो बच्चे घायल

शाह टाइम्स संवाददाता जोया। क्षेत्र में आवारा कुत्तों का आतंक थमने का नाम नहीं ले रहा है। देर शाम घर के बाहर खड़े दो मासूम बच्चों पर एक कुत्ते ने अचानक हमला कर दिया। घटना में जकीजावेद पुत्र जावेद अहमद (उम्र 10 वर्ष) निवासी पलौला तथा हैदर अली पुत्र मोहम्मद आरिफीन (उम्र 5 वर्ष) गंभीर रूप से घायल हो गए। परिजनों में घटना के बाद अफरा-तफरी मच गई और दोनों घायलों को तुरंत जोया सीएचसी में भर्ती कराया गया। प्राथमिक उपचार के बाद डॉक्टरों ने दोनों बच्चों की हालत को देखते हुए उन्हें जिला अस्पताल रेफर कर दिया। बताया जा रहा है कि हमला करने वाला कुत्ता आवारा था।

टक्कर मारकर चालक कार छोड़कर फरार

शाह टाइम्स संवाददाता, गजरौला। कुमराला चौकी के निकट निर्माणाधीन पुलिस क्षेत्राधिकारी कार्यालय की दीवार में मंडी धनौरा दिशा से आ रही तेज रफ्तार कार ने टक्कर मार दी, जिससे दीवार टूट गयी और मलबा बिखर गया। घटना के बाद चालक कार छोड़कर फरार हो गया। पुलिस कार चालक की तलाश में जुटी है। बता दें कि कुमराला पुलिस चौकी के पास पुलिस क्षेत्राधिकारी (सीओ) का कार्यालय और आवास का निर्माण कार्य चल रहा है। शनिवार रात करीब 10 बजे धनौरा की दिशा से आ रही तेज रफ्तार कार ने निर्माणाधीन कार्यालय की दीवार में टक्कर मार दी। टक्कर लगने से दीवार टूट गई, साथ ही कार भी क्षतिग्रस्त हो गई। सूचना पाकर पुलिसकर्मी पहुंच गए , वहां पर चालक नहीं मिला। प्रभारी निरीक्षक मनोज कुमार ने बताया कि कार की टक्कर से पुलिस क्षेत्राधिकारी के निर्माणाधीन कार्यालय की दीवार टूट जाने का मामला सामने आया है। कार कब्जे में है, लेकिन उसका चालक हाथ नहीं लगा है। गाड़ी नंबर के आधार पर जानकारी कराई जा रही है।

सांसद व विधायक ने किया लघु सेतु कार्य का श्री गणेश

पुल बनने से क्षेत्रा के लोगों को आवागमन में मिलेगा लाभः तंवर

शाह टाइम्स संवाददाता,

मंडी धनौरा। अमरोहा लोकसभा के सांसद कँवर सिंह तंवर एवं विधायक राजीव तरारा ने रविवार को धनौरा विकास खंड के गाँव पपसरी खादर से पहाड़पुर मार्ग पर वाह नदी के ऊपर के लघु सेतु एवं अतिरिक्त पहुंच मार्ग के निर्माण कार्य का भव्य शुभारंभ किया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सांसद ने कहा कि "डबल इंजन सरकार" के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश में विकास कार्य अभूतपूर्व गति से आगे बढ़ रहे हैं। यह सेतु केवल एक निर्माण नहीं, बल्कि क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन का मजबूत आधार बनेगा, जिससे ग्रामीण अंचलों को मुख्यधारा से जोड़ने का मार्ग और सशक्त होगा, साथ ही इस पुल के निर्माण से क्षेत्र के हजारों लोगों को आवगमन में सहूलियत मिलेगी। विधायक ने कहा कि यहाँ के लोगों की पुल की मांग वर्षों से लंबित थी। इस पुल के निर्माण होने के बाद क्षेत्र के किसानों, व्यापारियों और आमजन के लिए आवागमन सरल होगा। इस अवसर पर पूर्व शिक्षक विधायक संजय मिश्रा, मंडलाध्यक्ष कपिल भड़ाना, जिला उपाध्यक्ष सतवीर सिंह, जिला मंत्री राजीव अग्रवाल, युद्धवीर सिंह, सतपाल पाल, अशोक कुमार, प्रधान परमपाल सिंह, कैलाश सिंह, गंगा शरण सिंह, भजन सिंह, कविंदर, बनारसी दास, कैलाश पाल, जबर सिंह समेत लोक निर्माण विभाग के एक्सईएन, जेई आदि मौजूद रहे।

गृहक्लेश के चलते युवक ने फांसी लगाकर जान दी

मचा कोहराम, बिना कार्रवाई के अन्तिम संस्कार

शाह टाइम्स संवाददाता

रहरा। गृहकलह से आहत युवक ने फांसी लगाई लगाकर जान दे दी। घटना से परिजनों में कोहराम मचव गया। पिता की मौत से दो मासूम बच्चों के सिर से पिता का साया उठ गया। जानकारी के अनुसार, युवक पिछले कुछ समय से घरेलू विवादों से जूझ रहा था। शनिवार रात उसने अपने घर के कमरे में पंखे के कुंडे से साड़ी के सहारे फांसी लगा ली। काफी देर तक कमरे का दरवाजा बंद रहने पर परिजनों को शक हुआ। दरवाजा खोलने पर युवक का शव लटका मिला, जिसे देखकर परिवार में कोहराम मच गया। घटना की सूचना मिलते ही आसपास के लोग भी मौके पर पहुंच गए। बताया जा रहा है कि मृतक अपने पीछे दो छोटे बच्चों को छोड़ गया है, जिनकी उम्र करीब 5 वर्ष और 3 वर्ष है। परिजनों ने इस मामले में किसी भी प्रकार की कानूनी कार्रवाई से इंकार करते हुए शव का अंतिम संस्कार कर दिया।

बिना अनुमति के खेत से कराया खनन

शाह टाइम्स संवाददाता, गजरौला। थाना क्षेत्र के गांव में खेत स्वामी माँ-बेटे ने बिना अनुमति के ही अपने खेत की मिट्टी का खनन कर व्यावसायिक लाभ प्राप्त किया। जिला खनन अधिकारी ने माँ-बेटे के विरुद्ध रिपोर्ट दर्ज कराई है। जानकारी के अनुसार थाना क्षेत्र के गांव सुल्तानठेर मौहम्मदपुर में छतरपाल पुत्र देवकी व उसकी मां नन्ही पत्नी देवकी के नाम से खेत दर्ज है। खेत स्वामियों द्वारा बिना विभागीय अनुमति के ही मिट्टी का खनन कराए जाने की सूचना मिलने पर जिला खनन अधिकारी केबी सिंह ने मौके पर जांच के लिए टीम भेजी। टीम ने मौके पर जांच की तो वहां पर बड़े पैमाने पर लगभग 1002 घन मीटर खनन हुआ मिला। जांच में सामने आया कि खेत स्वामी द्वारा व्यावसायिक लाभ कमाने के उद्देश्य से मिट्टी का खनन अवैध रूप से कराया गया है। इस मामले में जिला खनन अधिकारी केबी सिंह ने थाने में तहरीर देकर आरोपी छतरपाल और उसकी माँ नन्हीं के विरुद्ध रिपोर्ट दर्ज कराई है।

दिन निकलते ही सूरज हो रहा आग बबूला

पंखे व कूलर से भी लोगों को नहीं मिल रही राहत

शाह टाइम्स संवाददाता

अमरोहा। सूरज की आग उगल रही किरणों से रविवार को धरती धधकती रही । चिलचिलाती धूप और लू के थपेड़ो ने दोपहर में लोगों का घर से निकलना मुश्किल कर दिया है। घर के अंदर भी भीषण गर्मी लोगो को बैचेन कर रही है। कूलर और पंखों में भी लोगों का पसीना नहीं सूख रहा। गर्मी के तेवर इस सीजन में इतने तल्ख है कि लोगों का बुरा हाल है। रविवार को पारा 40 डिग्री पर टिका रहा।

दिन निकलते ही सूरज आग बबूला हो रहा है। सुबह से ही आसमान से आग बरस रही है। दोपहर में चल रही हवाओं से हर कोई बेहाल नजर आ रहा है। ऐसे में गर्मी का प्रचंड रूप लोगो को डरा रहा है। आलम यह है कि धूप में कुछ देर खड़ा होना तो दूर लोगो घरों से बाहर निकलते हुए भी घबरा रहे है। तपिश इस कदर है कि लोगों को धूप में खड़े होने पर चक्कर आने लगे। घर से निकलने वाले लोग मिनटों में पसीना पसीना हो रहे है। कूलर और पंखों भी लोगों को राहत देने में नाकाफी साबित हो रहे है। दोपहर के समय दुकानें सूनी पड़ी है जबकि दुकानदार ग्राहकों के इंतजार में है। बहुत जरूरी काम वाले लोग ही दुकानों पर पहुंच रहे है। मजबूरी में बाहर निकलने वाले लोग छांव की तलाश करते है या पेय पदार्थ पीकर खुद को राहत पहुंचा रहे है। दोपहर के समय स्कूल से लौटने वाले लौटने वाले बच्चों को सबसे ज्यादा परेशान होना पड़ रहा है

भीषण गर्मी से बचने को शीतल पेय का सहारा

गन्ने का जूस व नीबू पानी की बढ़ी मांग

शाह टाइम्स संवाददाता

अमरोहा। तेज धूप और तपिश से लगातार बढ़ रहीं गर्मी ने शीतल पेय पदार्थों की मांग बढ़ा दी है। ठंडे पानी, आइसक्रीम, गन्ने का रस, जलजीरा की बिक्री चार गुना तक बढ़ गई है। शहर के हर मोहल्ले में पेयजल वाले जार के वाहन दौड़ते दिख रहे है। दुक. ानों पर पानी की बोतल खरीदने वालों की भीड़ नजर आ रही है। लोग गर्मी से राहत पाने के लिए इन शीतल पेय का सहारा ले रहे है। अप्रैल महीने मे पड़ रही जून जैसी गर्मी से लोग बेहाल है। दिन निकलते ही आसमान से बरस रही आग और धूप की तेज तपिश लोगों के जनजीवन पर पूरी तरह असर डाल रही है। गर्मी बढ़ने के साथ साथ शीतल पेय की मांग भी बढ़ गई है। बाजारों में शीतल पेय गन्ने का रस, बेल का शरबत, नींबू पानी, आम का जूस आदि की मांग बढ़ गई है। यही वजह है कि स्थानीय बाजार में इनकी पेय पदार्थों कीदुकानें सज गई है।लोग खुद को गर्मी से राहत देने और ठंडक पाने के लिए कोल्ड ड्रिंक, जूस व आइसक्रीम का सहारा ले रहे है। ठंडे पानी की बोतल और कोल्डड्रिंक की बिक्री भी खूब हो रही है। पिछले कुछ दिनों के मुकाबले बिक्री में चार गुना इजाफा हुआ है। खासकर युवाओं व बच्चों में अलग अलग फ्लेवर की आइसक्रीम और ठंडे पेय पदार्थों की।मांग ज्यादा है।

बैंकेट हाल के बाहर खूनी संघर्ष

शाह टाइम्स ब्यूरो अमरोहा। डिडौली क्षेत्र के गांव चौधरपुर में शादी समारोह में शामिल होने आए एक युवक पर पुरानी रंजिश के चलते चाकू से हमला कर दिया गया। हमले में युवक गंभीर रूप से घायल हो गया, जिसे उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घटना के बाद इलाके में हड़कंप मच गया, जबकि पुलिस ने तहरीर के आधार पर आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। घटना डिडौली क्षेत्र के गांव चौधरपुर की है। क्षेत्र के गांव सहसपुर अली नगर निवासी मोहम्मद सादिक गांव में रहने वाले अपने दोस्त इरफान की बहन की शादी में शामिल होने आया था। शाम करीब पांच बजे वह घर लौट रहा था। आरोप है कि बैंक्वेट हॉल के बाहर रास्ते में संभल जिले के असमोली थाना क्षेत्र के गांव राजा का गालमपुर का रहने वाला शोएब ने घेर लिया। पुरानी रंजिश को लेकर दोनों में हाथापाई शुरू हो गई। इसी बीच शोएब ने चाकू से हमला कर दिया। बचाव में चेहरे और कान पर हुए उछटते वार से मोहम्मद सादिक लहूलुहान हो गया। शोर मचाने पर लोगों की भीड़ जमा हो गई, आरोप है कि उसी दौरान शोएब और उसके तीन भाई जान से मारने की धमकी देते हुए भाग गए। घायल मोहम्मद सादिक ने कोतवाली पहुंचकर आरोपियों के खिलाफ तहरीर दी, इसके बाद पुलिस ने उसे मेडिकल के लिए भेज दिया। प्रभारी निरीक्षक जितेंद्र बालियान ने बताया कि घायल युवक को जोया सीएचसी में भर्ती कराया गया है। तहरीर के आधार पर आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर घटना की जांच शुरू कर दी गई है।

जयकारों के साथ निकली भगवान परशुराम शोभायात्रा

भक्तिमय हुआ नगर, चेयरमैन व एमएलएने पूजन कर किया शुभारंभ

शाह टाइम्स संवाददाता

मंडी धनौरा। भगवान परशुराम जयंती के मौके पर रविवार को शहर आस्था, उल्लास और भक्ति के रंग में डूबा नजर आया। ब्राह्मण समाज के तत्वावधान में निकली भगवान परशुराम की भव्य शोभायात्रा ने नगर के प्रमुख मार्गों पर श्रद्धा की ऐसी छटा बिखेरी कि हर ओर जय श्री परशुराम के जयकारे गूंज उठे।

मोहल्ला महादेव स्थित परशुराम धाम से शोभायात्रा का शुभारंभ विधिवत पूजा-अर्चना के साथ नगर पालिका अध्यक्ष प्रवीण अग्रवाल और भाजपा जिलाउपाध्यक्ष अभिनव कौशिक व एमएलए ने किया। जैसे ही भगवान परशुराम की सजी-धजी झांकी रथ पर विराजमान होकर आगे बढ़ी, श्रद्धालुओं का उत्साह देखते ही बनता था। युवा, बुजुर्ग और बच्चे सभी श्रद्धा के साथ रथ को खींचते नजर आए। शोभायात्रा बाईपास मार्ग, अहिंसा स्तंभ चौराहा, कंचन बाजार, हरदेव बाजार, अग्रसेन बाजार, पुराना स्टेट बैंक तिराहा, कटरा और तिकोना स्कूल होते हुए आगे बढ़ी। रास्तेभर जगह-जगह स्वागत मंच सजाए गए थे, जहां श्रद्धालुओं ने पुष्पवर्षा कर शोभायात्रा का भव्य स्वागत किया। कई स्थानों पर शीतल जल, शर्बत और प्रसाद की व्यवस्था भी की गई, जिससे राहगीरों और श्रद्धालुओं को राहत मिली। बैंड-बाजों की गूंज और ढोल-नगाड़ों की थाप पर युवाओं की टोलियां थिरकती रहीं, वहीं महिलाओं ने भी पारंपरिक वेशभूषा में भाग लेकर शोभायात्रा की गरिमा बढ़ाई। आकर्षक झांकियों ने लोगों का मन मोह लिया और कई श्रद्धालु मोबाइल में इस पल को कैद करते नजर आए। शोभायात्रा के समापन पर विधिवत आरती की गई और प्रसाद वितरित किया गया। पूरे आयोजन के दौरान पुलिस प्रशासन भी पूरी तरह सतर्क रहा। थाना प्रभारी निरीक्षक अमरपाल सिंह पुलिस बल के साथ लगातार भ्रमणशील रहे और सुरक्षा व्यवस्था पर नजर बनाए रखी। इस अवसर पर पूर्व एमएलसी संजय मिश्रा, नगर अध्यक्ष राजीव दीक्षित, शिवकुमार त्रिवेदी, अनिल शर्मा, प्रत्यक्ष शर्मा, नरेंद्र शर्मा, हरिओम त्रिवेदी, मुकेश शर्मा, एमपी शर्मा, दीपक शर्मा, विशाल कौशिक, अरुण दीक्षित, हेमंत सारस्वत, विजय शर्मा, वरुण शर्मा, ज्ञानेश शर्मा, निपुण दीक्षित, तरुण शर्मा, पीयूष शर्मा सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे। शोभायात्रा ने न केवल धार्मिक आस्था का संदेश दिया, बल्कि नगर में सामा. जिक एकता और उत्साह का भी अद्भुत उदाहरण पेश किया।

चौपला चौकी के पास महिला का पर्स छीना

■ बस से उतरकर पैदल पैदल जा रहा था परिवार

शाह टाइम्स संवाददाता,

गजरौला। बस से उतरकर चौपला चौराहे की ओर जा रही एक महिला के हाथ से बाइक सवार दो युवक पर्स छीनकर फरार हो गए। कुछ कदम पीछे चल रहे पति ने युवकों को पकड़ने की को. शिश भी की मगर तब तक आरा. पी फरार हो गए थे। घटना की सूचना चौपला स्थित पुलिस चौकी में दी गई है।

जानकारी के अनुसार जनपद रामपुर के बिलासपुर कस्बे के मौहल्ला साहुकारा निवासी विनीत रस्तौगी अपनी पत्नी रोशनी रस्तौगी, माता किरन रस्तौगी, पुत्री रिया रस्तौगी व पुत्र आरव रस्तौगी के साथ नगर के फायर स्टेशन के सामने मौहल्ला जवाहरननगर निवासी दिनेश रस्तौगी के यहां जाने के लिए बीती रात करीब सवा 12 बजे बस से चौपला के पास उतरे। ई-रिक्शा न मिलने के कारण वे बस से उतरकर पैदल पैदल चौपला चौराहे की ओर जा रहे थे। कुछ दूर चलने पर इनके पीछे चार युवक भी चलने लगे, इन्हें उनकी गति. विधियों पर कुछ संदेह हुआ। युवकों से दूरी बढ़ाते हुए विनीत व उनके परिवार के सदस्य तेज तेज चलने लगे। इसी बीच पीछे से बाइक सवार दो युवक आए और विनीत की पत्नी रोशनी के हाथ से पर्स छीनकर भाग गए। पति ने युवकों को पकड़ने की कोशिश भी की मगर तब तक आरोपित फरार हो गए थे। घटना की सूचना चौपला स्थित पुलिस चौकी में दी गई है। पर्स में तीन हजार रूपये नकद व चांदी के आभूषण थे। प्रभारी निरीक्षक मनोज कुमार ने बताया कि घटना संज्ञान में आई है। घटना में शामिल आरोपियों को जल्द ही पकड़ा जाएगा।

नाम परिवर्तन सूचना

मैंने अपना नाम Rajpurush से बदलकर Rajpurush Agarwal कर लिया है। भविष्य में मुझे इसी नाम से जाना जाए।

राजपुरुष अग्रवाल पुत्र सरदेश कुमार मौहल्ला कायस्थान अलंकार सिनेमा के पास हसनपुर जिला अमरोहा।

अमानगढ़ टाइगर रिजर्व में घायल अवस्था में मिले वृद्ध की मौत

हाथी के हमले की आशंका, शुक्रवार से था लापता

शाह टाइम्स संवाददाता

रेहड़। अमानगढ़ टाइगर रिजर्व के वन क्षेत्र में घायल हालत में मिले बुजुर्ग की अस्पताल में मौत हो गई। घटनास्थल पर उसकी साइकिल भी पड़ी मिली है।

प्राप्त समाचार के अनुसार मृतक अख्तियार हुसैन (65 वर्ष) पुत्र नन्हे शाह उत्तराखंड के जिला उधम सिंह नगर के जसपुर थाना क्षेत्र के ग्राम रामनगर वन का निवासी है। मृतक के पुत्र नसीम शाह ने बताया कि उसके पिता अख्तियार हुसैन प्रतिदिन साइकिल से अमानगढ़ टाइगर रिजर्व में स्थित एक मजार पर इबादत करने जाते थे। शुक्रवार को भी उसके पिता साइकिल से अमानगढ़ टाइगर रिजर्व में स्थित मजार पर गए थे परंतु वापस नहीं

लौटे। शनिवार सुबह परिजन अमानगढ़ टाइगर रिजर्व पहुंचे और वन दरोगा रवि कुमार को अख्तियार हुसैन के लापता होने की सूचना देकर उन्हें तलाश कराने का अनुरोध किया। जिस पर वन कर्मियों ने परिजनों और ग्रामीणों के साथ लापता हुए अख्तियार हुसैन की तलाश शुरू की। इस दौरान आज सुबह करीब साढ़े नौ बजे अमानगढ़ टाइगर रिजर्व के कक्ष संख्या 17 में स्थित तालाब के पास अख्तियार हुसैन झाड़ियों के बीच बेहोश और घायल पड़े मिले। वहीं पर उनकी साइकिल भी पड़ी थी। परिजन और ग्रामीण अख्तियार हुसैन को जसपुर के एक निजी अस्पताल ले गए जहां चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। परिजनों ने अख्तियार हुसैन के ऊपर हाथी द्वारा हमला करने की आशंका व्यक्त की है।

मृतक अपने पीछे पत्नी आसमा खातून, तीन पुत्रों व तीन पुत्रियों को रोता बिलखता छोड़ गया है।

जसपुर कोतवाल राजेंद्र सिंह डांगी ने बताया कि परिजनों की सूचना पर पंचायतनामा भरकर शव को पोस्टमार्टम के लिए काशीपुर भेज दिया गया है।

मानियावाला में निराश्रित गोवंश पशुओं का आतंक

शाह टाइम्स संवाददाता

अफजलगढ़। सड़क पर अचानक सामने आए गोवंश से टकराकर बाइक सवार युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। घायल को परिजनों ने कासमपुर गढ़ी स्थित निजी अस्पताल में भर्ती कराया, जहां से प्राथमिक उपचार के बाद हायर सेंटर रेफर कर दिया गया। आक्रोशित ग्रामीणों ने प्रशासन से सड़कों पर घूम रहे आवारा गोवंश को पकड़कर गौशाला में भेजने की मांग की है।

प्राप्त समाचार के अनुसार क्षेत्र के ग्राम मानियावाला निवासी मोहम्मद अरबाज (24 वर्ष) पुत्र इरफान बीती देर रात बाइक से अफजलगढ़ से घर वापस आ रहा था। गांव के बाहर मुख्य मार्ग पर घूम रहे आवारा गौवंश से बाइक की टक्कर हो गई। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि अरबाज उछलकर सड़क पर जा गिरा और उसके सिर व पैर में गंभीर चोटें आईं।

मौके पर राहगीरों की भीड़ जमा हो गई। सूचना पर पहुंचे परिजनों ने घायल अरबाज को कासमपुर गढ़ी स्थित एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया, युवक के सिर में गंभीर चोट है। घायल को प्राथमिक उपचार के बाद हायर सेंटर रेफर कर दिया गया।

आक्रोशित ग्रामीणों ने प्रशासन से की सड़कों पर घूम रहे आवारा गोवंश को पकड़कर गौशाला में भेजने की मांग

गंभीर अवस्था में परियोजना द्वारा घायल को काशीपुर स्थित एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया जहां पर उसकी हालत चिंताजनक बनी हुई है।

गौरतलब है कि मानियावाला अफजलगढ़ राजमार्ग व ग्राम बादीगढ़ से लेकर भूतपुरी रामगंगा पुल तक राष्ट्रीय राजमार्ग पर निराश्रित गोवंश झुंड में घूमते या बैठे रहते हैं। प्रशासन की जिम्मेदार है कि गोवंश को बेसहारा सड़कों पर छोड़ने वाले पशुपालकों के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही करनी चाहिए। इस गोवंश से टकराकर कई दुपहिया वाहन चालक अपनी जान गवा बैठे हैं या गंभीर रूप से घायल होकर अपंग बन जाते हैं। गौ रक्षक दल भी मौन धारण किए हुए हैं। गोवंश बछड़े और सांड भी किसानों की मेहनत की खेती को नुकसान पहुंचाते हैं।

इस संबंध में बीडीओ अफजलढ़ ने बताया कि मामला संज्ञान में है। पशु पकड़ने वाली टीम को निर्देशित किया गया है। जल्द ही अभियान चलाकर मार्गों से बेसहारा पशुओं को पकड़कर नजदीकी गौशाला भिजवाया जाएगा।

उन्होंने ग्रामीणों से भी अपील की है कि अपने पालतू पशुओं को खुला सड़क पर न छोड़ें अन्यथा उनके विरुद्ध कानून कारवाई की जाएगी।

एम.ए. (एजुकेशन) तृतीय सेमेस्टर का परीक्षाफल घोषित

शाह टाइम्स ब्यूरो

बिजनौर। एमजेपी रूहेलखंड विश्वविद्यालय बरेली द्वारा एमए (एजुकेशन) तृतीय सेमेस्टर के घोषित परिणाम में कृष्णा कॉलेज ऑफ साइंस एंड इंफोमेशन टैक्नोलॉजी के विद्यार्थियों का परीक्षाफल शत प्रतिशत रहा।

एमए (एजुकेशन) तृतीय सेमेस्टर की भावना गुप्ता ने 77.50 प्रतिशत अंकों के साथ प्रथम, रिया प्रजापति ने 72.30 प्रतिशत अंकों के साथ द्वितीय तथा शिवानी रानी व कनु सिंह ने संयुक्त रुप से 70 प्रतिशत अंक प्राप्त कर तृतीय स्थान प्राप्त किया। महाविद्यालय परिवार इन सभी विद्यार्थियों के उज्जवल भविष्य की कामना करता है।

कृष्णा कॉलेज के प्रबंधक मनोज कुमार ने सभी उत्तीर्ण छात्राओं को बधाई देते हुए कहा

भावना गुप्ता रही प्रथम स्थान पर

कि कृष्णा कॉलेज का परिणाम सदैव ही अत्युत्तम रहा है। हमारा निरंतर यही प्रयास रहता है कि विद्यार्थियों को कॉलेज में आधुनिक व शैक्षिक वातावरण मिले जिससे कि वह प्रोफेशनल एजुकेशन को बेहतर रुप से समझ सकें व अपने जीवन में उपयोग कर लाभांवित हो सकें। कॉलेज के संस्थापक निदेशक राजीव कुमार, प्रबंधक मनोज कुमार, निदेशक पवन कुमार, कॉलेज प्राचार्या डा. सीमा शर्मा, विभागध्यक्ष एमएस अंसारी, सहायक प्रवक्ता डा. दीप शिखा अग्रवाल, सुनील कुमार, अंशिका राव ने विद्यार्थियों को उत्कृष्ट परिणाम के लिए बधाई दी और इनके उज्जवल भविष्य की कामना की।

20 दिन बाद हरकत में आया रेलवे

नहटौर फाटक पर दिन-रात काम शुरू

शाह टाइम्स संवाददाता

धामपुर। नगर के नहटौर रेलवे फाटक के लंबे समय से बंद रहने से परेशान लोगों के लिए राहत की खबर सामने आई है। करीब 20 दिनों से बंद पड़े इस फाटक को लेकर लगातार उठ रही शिकायतों और जनसमस्याओं के बाद अब रेलवे विभाग हरकत में आ गया है।

रेलवे द्वारा फाटक क्षेत्र में मरम्मत कार्य को तेज करते हुए दिन-रात काम शुरू कर दिया गया है। मौके पर बड़ी मशीनों और मजदूरों की टीम लगातार ट्रैक सुधार कार्य में जुटी हुई है। पिछले 24 घंटे से बिना रुके कार्य जारी है, जिससे जल्द ही फाटक खोलने की उम्मीद जताई जा रही है।

गौरतलब है कि नहटौर रेलवे फाटक पिछले 20 दिनों से बंद पड़ा था, जिससे स्थानीय लोगों को भारी परेशानी का सामना

करना पड़ रहा था। रोजाना हजारों लोगों को तहसील, एसडीएम कार्यालय, सीओ कार्यालय एवं सरकारी अस्पताल जाने के लिए लंबा रास्ता तय करना पड़ रहा था।

फाटक बंद होने के कारण खासकर पैदल राहगीरों और दोपहिया वाहन चालकों को अधिक दिक्कतें उठानी पड़ रही थीं। लोगों का कहना था कि उन्हें कई किलोमीटर अतिरिक्त दूरी तय करनी पड़ रही है, जिससे समय के साथ-साथ खर्च भी बढ़ रहा है।

स्थानीय निवासियों ने बताया कि यह समस्या नई नहीं है। इससे पहले भी नवंबर और मार्च माह में 15 से 20 दिनों तक फाटक बंद रहा था, जिससे लोगों को इसी तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ा था। बार-बार फाटक बंद होने से लोगों में रेलवे विभाग के प्रति नाराजगी भी बढ़ रही थी।

इस मुद्दे को शाह टाइम्स द्वारा प्रमुखता से उठाए जाने के बाद अब रेलवे विभाग ने गंभीरता दिखाते हुए कार्य में तेजी ला दी है। अधिकारी भी लगातार मौके पर नजर बनाए हुए हैं और कार्य को जल्द पूरा करने के निर्देश दिए गए हैं।

रेलवे अधिकारियों के अनुसार ट्रैक मरम्मत कार्य अंतिम चरण में है और जल्द ही फाटक को खोल दिया जाएगा, जिससे क्षेत्र के लोगों को बड़ी राहत मिलेगी।

'स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत' कागजों तक सीमित?

शाह टाइम्स ब्यूरो

बिजनौर। केंद्र सरकार के 'स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत' और 'एक कदम सफाई की ओर' जैसे अभियानों की गूंज भले ही काग. जों और बैठकों में सुनाई दे रही हो, लेकिन जमीनी स्तर पर स्थिति इसके विपरीत नजर आ रही है। जनपद में सफाई व्यवस्था को लेकर उठ रहे सवाल अब धीरे-धीरे खुलकर सामने आने लगे हैं।

सूत्रों और कर्मचारियों के अनुसार, जो सफाई कर्मी वास्तव में डघूटी पर तैनात हैं, उन्हें उनके मूल कार्य से हटाकर अन्य कार्यों में लगाया जा रहा है। आरोप है कि किसी को कंप्यूटर ऑपरेटर बना दिया गया है, किसी को जनरेटर चलाने में लगा दिया गया, तो कुछ को दफ्तरों और निजी कार्यों में व्यस्त रखा जा रहा है। इसका सीधा असर गांवों की सफाई व्यवस्था पर पड़ रहा है, जो कमजोर होती दिखाई दे रही है।

एक कर्मचारी ने नाम न प्रकाशित करने की शर्त पर बताया कि जिन कर्मचारियों को मूल कार्य से हटाकर अन्य जगहों पर लगाया जाता है, उनसे कथित रूप से 'सुविधा शुल्क' लिए जाने की भी चर्चा है। कर्मचारी का आरोप है कि बिना किसी लाभ के अधिकारियों की 'मेहरबानी' मिलना मुश्किल है। हालांकि इन आरोपों की आधिकारिक पुष्टि नहीं हो सकी है।

इस संबंध में जब अधिकारियों से संपर्क करने का प्रयास किया जाता है, तो अक्सर स्पष्ट जवाब नहीं मिल पाता। कभी फोन रिसीव नहीं होता, तो कभी 'मुझे जानकारी नहीं' कहकर मामला दूसरे अधिकारी पर डाल दिया जाता है। इससे विभागीय पारदर्शिता और जवाब. देही पर सवाल खड़े हो रहे हैं।

एक तरफ स्वच्छता अभियान को लेकर बड़े-बड़े दावे किए जा रहे हैं, वहीं दूसरी ओर जमीनी स्तर पर सामने आ रहे आरोप इन दावों की पोल खोलते नजर आ रहे हैं। अब देखना यह होगा कि जिम्मेदार अधिकारी इन गंभीर आरोपों को लेकर क्या कदम उठाते हैं।

राष्ट्रीय सम्मेलन में विशेषज्ञों ने साझा किए विचार

शाह टाइम्स ब्यूरो

बिजनौर। कृष्णा स्कूल ऑफ नर्सिंग द्वारा आज राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन का विषय 'समुदाय-आधारित हस्तक्षेप के माध्यम से व्यवहारिक स्वास्थ्य आपात स्थितियों के बोझ को कम करना।' रहा। कार्यक्रम में चिकित्सा एवं नर्सिंग क्षेत्र के अनेक प्रतिष्ठित विशेषज्ञों ने भाग लेकर अपने विचार साझा किए।

कार्यक्रम के मुख्य संरक्षक राजीव कुमार (संस्थापक निदेशक) ने संस्थान की प्रगति तथा स्वास्थ्य सेवाओं में नर्सिंग की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के सम्मेलन ज्ञान-विनिमय के लिए अत्यंत आवश्यक होते हैं। मनोज कुमार ने अपने सम्बोधन संस्थान की प्रतिबद्धता को दोहराते

हुए कहा कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करना उनका मुख्य उद्देश्य है।

सह-संरक्षक डा.सीमा शर्मा ने सम्मेलन की रूपरेखा एवं उद्देश्यों पर विस्तार से प्रकाश डाला और इसे विद्यार्थियों के लिए अत्यंत लाभकारी बताया। डा. नीतू देवी (नर्सिंग कंसल्टेंट, उ.प्र.स्टेट मेडिकल फैकल्टी, लखनऊ) ने व्यवहारिक स्वास्थ्य से संबंधित चुनौतियों एवं उनके समाधान पर महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की। उन्होंने सामुदायिक भागीदारी के महत्व पर विशेष जोर दिया।

विशिष्ट अतिथि सीएमओ डा. कौशलेंद्र सिंह ने स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार एवं आपात स्थितियों के प्रभावी प्रबंधन पर अपने विचार व्यक्त किए।

डा. सफिया खानम (प्राचार्य, कृष्णा स्कूल ऑफ नर्सिंग, डा. राजेश कुमार शर्मा (प्रो.हिमालयन कॉलेज ऑफ नर्सिंग, देहरादून) डा. मेहविश खालिद (प्राचार्य, डीन, स्कूल ऑफ नर्सिंग, देवभूमि उत्तराखंड विश्वविद्यालय, देहरादून), डा.जसलीन एम (प्राचार्य, तीर्थंकर महावीर कॉलेज ऑफ नर्सिंग, मुरादाबाद) डा. सुमा वशिष्ट (विभागाध्यक्ष, मानसिक स्वास्थ्य नर्सिंग विभाग, तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद) ने भी अपने विचार रखे।

सम्मेलन के दौरान विभिन्न सत्रों, चर्चाओं एवं प्रस्तुतियों के माध्यम से प्रतिभागियों को व्यवहारिक स्वास्थ्य आपात स्थितियों के प्रभावी प्रबंधन पर सामुदायिक स्तर पर उनके समाधान के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई।

ठेकेदार के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराने की मांग

पैसा लेकर काम न करने का आरोप

शाह टाइम्स संवाददाता

नजीबाबाद। मौहल्ला हवेलीतला निवासी मुफ्ती उवैस अहमद पुत्र स्व. रईस अहमद ने एसपी को भेजे प्रार्थना पत्र में कहा है कि उन्होंने अपने आशियाना कालोनी नजीबाबाद में स्थित एक मकान का निर्माण कराने के लिए 130 रूपए स्कवायर फिट के हिसाब से मौहल्ला निवासी महबूब अहमद ठेकेदार को निर्माण कराने को 1 सितम्बर 2024 को ठेका दिया था। इस कार्य के लिए उन्होंने ठेकेदार को करीब 9 लाख रूपए कैश दे दिये थे। जिसके बाद ठेकेदार ने कुछ निर्माण करा दिया है। बाद में ठेकेदार ने उनका काम बीच में छोड़ दिया जिससे उन्होंने विवश होकर अपना काम दूसरे ठेकेदार से कराया। अब उक्त ठेकेदार उनके पैसे नहीं लौटाना चाहता, अगर वह पैसे मांगने जाते है तो उनके साथ गाली-गलौच व मारपीट कर धमकी देता है। ठेकेदार की धमकी से उनमें व उनके परिवार वालों में डर का माहौल बना हुआ है। पीड़ित ने कहा कि ठेकेदार की नीयत में खोट आ गई है। उन्होंने एसपी से थाना प्रभारी नजीबाबाद को आरोपी ठेकेदार के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर कार्रवाई कराने के लिए आदेशित किए जाने की मांग की।

एक नजर

सुन मां अंजनी के लाल मुझे तेरा एक सहारा

धामपुर। राजपूत विहार कॉलोनी स्थित अनंत श्री शिव शक्तिपीठ मंदिर एवं संस्कार शाला आश्रम पर श्रीमद् हनुमद् भक्ति प्रचार मंडल के वैभव तले साप्ताहिक शनिवारीय सात बार हनुमान चालीसा पाठ का आयोजन किया गया। उसके बाद भजनों के माध्यम से बजरंगबली बाबा का गुणगान किया गया। इस अवसर पर श्रीमद् हनुमत भक्तिप्रचार मंडल ने आचार्य श्री को श्रीश्री 108 मंडलेश्वर उपाधि मिलने की खुशी में स्मृति चिन्ह भेंट किया। साथ ही नगर के प्रसिद्ध वयोवृद्ध डा. एके सक्सेना ने पगड़ी और पट्का पहनाकर आशीर्वाद लिया। कार्यक्रम के अंत में श्रीश्री 108 मंडलेश्वर आचार्य डा. दिनेश चंद्र भारद्वाज श्रीशिवशक्ति पीठाधीश्वर ने कहा कि हमें प्रभु ने धर्म प्रचार के लिए चुना है अत: हमें निरंतर धर्म पालन में तत्पर रहना चाहिए। धर्म का मूल गौ सेवा है गौ की सेवा, सुरक्षा, सम्मान के लिए हमें निरन्तर आवाज उठानी चाहिए। आचार्य श्री ने कहा कल (आज) गौ सम्मान आह्वान अभियान कार्यक्रम चलाया है। इसके अंतर्गत देश में प्रत्येक तहसील में सम्बंधित अधिकारी को मुख्यमंत्री, प्रधान मंत्री तथा राष्ट्रपति के नाम एक ज्ञापन देना है। धामपुर तहसील में एक विशाल यात्रा के साथ ढोल-नगाड़ों के बीच कीर्तन भजन करते हुए, गौ माता की जै जैकार करते हुए आएंगे। हनुमान चालीसा पाठ में प्रीतम सैनी विजय शर्मा, सुनील कुमार, रामप्रकाश वर्मा, नंदकिशोर, सतीश रस्तौगी, सतेंद्र शर्मा, पप्पू चौहान, संदीप भारद्वाज, को परवेंद्र सिंह चौहान, गौ सेवक गौतम गिरि, गौ सेवक शौर्य अत्रि, पंडित निकुंज शर्मा, पंडित प्रणव भारद्वाज, भूमिका भारद्वाज, कविता भारद्वाज, मनु चौहान, सोनम शर्मा आदि उपस्थित रहे। सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन निखिल अरोड़ा ने किया। अंत में बजरंगबली बाबा की आरती कर प्रसाद ग्रहण कर सब ने धर्म लाभ कमाया।

मोटर साईकिल चोरी की रिपोर्ट दर्ज

कासमपुर गढ़ी। बादीगढ़ चौराहे के निकट बाइक खड़ी कर बाजार गए व्यक्ति की बाइक चोरी हो गई। काफी तलाश के बाद बाइक न मिलने पर उसने पुलिस से शिकायत कर बाइक बरामद करने की मांग की है। जनपद मुरादाबाद के थाना भोजपुर क्षेत्रांतर्गत ग्राम रानी नांगल निवासी मुन्ना अली पुत्र अब्दुल कलाम ने थाना रेहड़ को दिए प्रार्थना पत्र में बताया कि 16 अप्रैल को वह धामपुर से आता हुआ बादीगढ़ रुका और एक बाग के पास अपनी बाइक खड़ी कर बादीगढ़ बाजार में सामान लेने के लिए चला गया। जब वह सामान खरीद कर लौटा, तोब मौके पर बाइक नहीं थी। काफी तलाश किया गया, मगर कोई अता-पता नहीं लग पाया। थानाध्यक्ष रेहड़ राजीव कुमार वर्मा ने बताया कि मुन्ना अली द्वारा दी गई तहरीर के आधार पर उसकी बाइक चोरी की रिपोर्ट दर्ज कर ली गई है और बरामदगी के प्रयास जारी हैं।

अग्रवाल प्रशिक्षण एवं समाज सेवा संस्थान का वार्षिकोत्सव

गमले बनाने की प्रतियोगिता में केपीएस इंटर कॉलेज की 100 से अधिक छात्राओं को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया

शाह टाइम्स ब्यूरो

बिजनौर। अग्रवाल प्रशिक्षण एवं समाज सेवा संस्थान के 30 वर्ष एवं अग्रवाल विवाहिकी पत्रिका के 20 वर्ष पूर्ण होने पर नजीबाबाद मार्ग स्थित एक प्रतिष्ठान में वार्षिकोत्सव का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सीडीओ रणविजय सिंह, विशिष्ट अतिथि जिला परियोजना अधिकारी रहे।

कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों ने महाराजा अग्रसेन की समक्ष दीप प्रज्वलन कर किया। सीडीओ रणविजय सिंह ने कहा कि यदि स्वयं वे, संस्थाएं एवं सरकार मिलकर कार्य करें तो अभी समाज में बहुत कुछ हासिल किया जा सकता है। उन्होंने अग्रवाल प्रशिक्षण एवं समाज सेवा संस्थान के बारे में प्रशंसा करते हुए कहा कि यदि कोई संस्था पिछले 30 वर्षों से बिना किसी सरकारी

सहायता के निरंतर चल रही है। तो यह संस्थान की ईमानदारी एवं निरंतरता को दर्शाता है। डा.पंकज भारद्वाज ने संस्थान की 30 वर्ष पूर्ण होने पर कहा कि वे पिछले लंबे समय से संस्थान द्वारा किए गए कार्यों के स्वयं साक्षी हैं। वैश्य मंच द्वारा संस्थान की संस्थापिका सविता अग्रवाल एवं टीम को 30 वर्ष पूर्ण होने पर प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। पत्रकार अवनीश गौड़ ने कहा कि उनके पास बहुत से समाचार आते हैं। संस्थान के बारे में प्रारंभ में उनका नजरिया था कि कोई संस्था इतना कार्य नहीं कर सकती है, परंतु जब उन्होंने प्रत्यक्ष में संस्था के 30 वर्ष के निरंतर कार्यों को देखा, तो उन्होंने महसूस किया कि यह एक मिसाल है। उन्होंने एक बार सविता अग्रवाल के स्वास्थ्य के बारे में भी सुना कि उनका स्वास्थ्य बहुत खराब है। उसके बावजूद वे निरंतर इतनी ऊर्जा के साथ कार्य कर रही हैं। उन्होंने श्रीमती अग्रवाल के देहदान करने

के संकल्प की भी सराहना की। पत्रकार राहुल चौधरी ने भी संस्थान की बहुत प्रशंसा की। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे ईश्वर सिंह ने संस्थान सदस्यों को 30 वर्ष पूर्ण होने पर हार्दिक बधाई प्रेषित की एवं कहा कि वे प्रयास कर रहे हैं कि शीघ्र ही एक वेब सीरीज का निर्माण बिजनौर की धरती पर किया जाए। कार्यक्रम का सुंदर संचालन देवेश अग्रवाल साथ कार्य कर रही हैं। उन्होंने द्वारा किया गया। इसके अतिरिक्त राजीव अग्रवाल नजीबाबाद, सरिता अग्रवाल, रामपुर, राज. कुमार गोयल, जगदीश अग्रवाल, राजवर्धन भटनागर, विवेक गुप्ता, विभोर जैन आदि ने भी संस्थान को 30 वर्ष पूर्ण होने पर बधाई दी एवं अपने-अपने विचार रखे। इस वर्ष के श्रेष्ठ कार्यकर्ता सर्वेश कुमार गुप्ता एवं अलका अग्रवाल दोनों को ट्रॉफी देकर सम्मानित किया गया। इस दौरान अनुपयोगी बोतलों से गमले बनाने की प्रतियोगिता में केपीएस इंटर कॉलेज की 100 से अधिक छात्राओं को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में वरिष्ठ पत्रकार डा. पंकज भारद्वाज, वैश्य सभा के प्रदेश कार्यकारिणी से राजकुमार गोयल, अजय गोयल, दीपक अग्रवाल, राजकुमार अग्रवाल, मुकेश अग्रवाल उर्फ टिंकू, हरिद्वार शनि धाम ट्रस्ट के अध्यक्ष जगदीश अग्रवाल, राजीव गोयल नजीबा. बाद, विवेक गुप्ता, राजीव अग्रवाल, कौशल अग्रवाल गंज, सविता अग्रवाल गंज, अनुराग गुप्ता, संजय विश्नोई, अरविंद कुमार, सजल अग्रवाल, ओम अग्रवाल, नेहा अग्रवाल, अजय अग्रवाल कनिष्क ज्वैलर्स , तरुण गुप्ता, सुमन चौधरी, गुरुकुल नवलपुर के प्राचार्य सविता आर्य एवं संस्थान के सभी सदस्य एवं पदाधिकारी एवं वर्षा अग्रवाल, मीना बक्शी, राजुल त्यागी मौजूद रहे।

खेत में काम कर रहे भाइयों पर हमला, ताबड़तोड़ फायरिंग से दहशत

20-25 हमलावरों का धावा, कई राउंड गोलियां चलने से सहमे ग्रामीण

शाह टाइम्स सवांददाता,

खतौली। कोतवाली क्षेत्र के गांव शाहपुर में रविवार सुबह उस समय अफरा-तफरी मच गई, जब खेत में काम कर रहे दो सगे भाइयों पर हथियारबंद युवकों ने हमला कर दिया। करीब 20-25 हमलावरों ने अचानक धावा बोलते हुए ताबड़तोड़ फायरिंग शुरू कर दी, जिससे पूरे इलाके में दहशत फैल गई।

मिली जानकारी के अनुसार, गांव निवासी लक्ष्य और आशीष पुत्र राजकिशोर सुबह लगभग 10 बजे अपने खेत में गन्ना काट रहे थे। तभी कई बाइक और पैदल पहुंचे हमलावरों ने दोनों को घेर लिया और गाली-गलौच करते हुए जानलेवा हमला कर दिया। देखते ही देखते हमलावरों ने लगातार कई राउंड फायरिंग शुरू कर दी। अचानक हुई इस घटना से आसपास के खेतों में काम कर रहे लोगों में भगदड़ मच गई। इसी दौरान वहां से गुजर रहा युवक वंश पुत्र सचिन भी बाल-बाल बच गया। फायरिंग के बीच दोनों भाइयों ने सूझबूझ दिखाते हुए गन्ने के घने खेत में छिपकर अपनी जान बचाई, जिससे बड़ा हादसा टल गया। कुछ देर तक दहशत फैलाने के बाद हमलावर मौके से फरार हो गए। घटना की सूचना मिलते ही कोतवाली पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू की। पुलिस ने घटनास्थल से साक्ष्य जुटाए और आसपास के लोगों से पूछताछ की, लेकिन हमलावरों का कोई सुराग नहीं लग सका।पीड़ित पक्ष ने कोतवाली पहुंचकर नामजद आरोपियों के खिलाफ तहरीर दी है और सुरक्षा की मांग की है। पुलिस का कहना है कि मामले की गंभीरता से जांच की जा रही है और आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए दबिश दी जा रही है। प्रारंभिक जांच में आपसी रंजिश की आशंका जताई जा रही है। घटना के बाद शाहपुर और आसपास के गांवों में भय का माहौल बना हुआ है। ग्रामीणों ने पुलिस से सुरक्षा बढ़ाने और आरोपियों की जल्द गिरफ्तारी की मांग की है।

लोई के सावेज बने पुलिस विभाग में सिपाही

नसीम कुरैशी

बुढ़ाना। ब्लाक बुढ़ाना क्षेत्र के गांव लोई के इनाम कुरैशी के पुत्र सावेज कुरैशी उत्तर प्रदेश पुलिस विभाग में पुलिस कांस्टेबल बन गये हैं। उन्होंने रविवार के दिन उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद जिले में आयोजित एक भव्य दीक्षांत समारोह के दौरान यूपी पुलिस में सेवा करने का संकल्प लिया। सावेज की इस उपलब्धि से ना केवल उनके परिवार में बल्कि पूरे बुढ़ाना तहसील क्षेत्र का मान बढ़ा है। इस दीक्षांत समारोह में सावेज कुरैशी द्वारा पुलिस विभाग को चुनने पर उपस्थित गणमान्य लोगों ने तालियों से उनका उत्साहवर्धन किया। यह क्षण उनके परिवार के लिए गर्व का विषय रहा। बुढ़ाना क्षेत्र के लोगों में भी खुशी का माहौल है। सावेज के पिता इनाम और मां मुन्नी ने सावेज की इस उपलब्धि पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि उन्हें अपने बेटे पर गर्व है और वे चाहते हैं कि वह ईमानदारी और निष्ठा के साथ ही अपने कर्तव्यों का निर्वहन करें। उनका पुत्र सावेज बचपन से ही

अनुशासित और मेहनती छात्र रहा है। उन्होंने अपनी पढ़ाई के साथ साथ हमेशा समाज और देश सेवा का सपना देखा था। यूपी पुलिस में शामिल होने का उनका निर्णय अब क्षेत्र के युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत बन गया है। स्थानीय लोगों, जनप्रतिनिधियों और शुभचिंतकों ने सावेज को बधाई दी है और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की है। बुढ़ाना क्षेत्र में इस उपलब्धि को लेकर उत्साह है और यह युवाओं को कड़ी मेहनत कर देश सेवा में योगदान देने के लिए प्रेरित कर रहा है। उधर मुरादाबाद में रविवार की सुबह परेड ग्राउंड पर गर्व, अनुशासन और देशभक्ति का अद्भुत संगम देखने को मिला। आउटडोर व इनडोर की अंतिम परीक्षा पास करने के बाद छह प्रशिक्षण संस्थानों के कुल 4941 प्रशिक्षु सिपाही जब कदमताल करते हुए पासिंग आउट परेड में शामिल हुए तो पूरा माहौल भावुक और उत्साह से भर गया। सुबह ठीक 8 बजे बैंड की धुन पर शुरू हुई परेड में फुल ड्रेस में सजे रंगरूटों की सधी हुई चाल और दमदार प्रस्तुति ने सभी का मन मोह लिया। वर्दी में अपने बेटों बेटियों को देखकर परिजनों की आंखें खुशी से छलक पड़ीं। कई माताओं ने भावुक होकर तिरंगे के साथ अपने बच्चों को सलाम किया। परेड का निरीक्षण वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों ने किया। सलामी के बाद सभी नव आरक्षियों को देशसेवा, कर्तव्यनिष्ठा और अनुशासन की शपथ दिलाई गई। मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में कहा वर्दी सिर्फ सम्मान नही बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। जनता की सेवा, सुरक्षा और कानून का राज स्थापित करना ही आपका पहला धर्म है। मुरादाबाद स्थित छह प्रशिक्षण संस्थानों से कुल 4941 प्रशिक्षु सिपाही प्रशिक्षण पूरा कर यूपी पुलिस का हिस्सा बने हैं। महीनों की कड़ी ट्रेनिंग, शारीरिक दक्षता, हथियार चलाने का अभ्यास और कानून की बारीकियों को सीखने के बाद ये जवान अब फील्ड में प्रदेश की कानून-व्यवस्था संभालेंगे। परेड के दौरान रंगरूटों ने हथियार ड्रिल, एंटी रायट ड्रिल और अनआर्म्ड कॉम्बैट का शानदार प्रदर्शन कर अपनी तैयारी का परिचय दिया। लोई गांव से सावेज के भाई जावेद कुरैशी, शादाब, हासिर, दानिश आदि ने कहा कि भाई सावेज को पुलिस की वर्दी में देखकर हम सभी का सीना गर्व से चौड़ा हो गया। आज हमारे परिवार का सपना पूरा हुआ। भाई ने पुलिस विभाग में जाकर पूरे गांव लोई का नाम रोशन कर दिया। कार्यक्रम के समापन पर बैंड की मधुर धुन के साथ जवानों ने मार्च पास्ट किया और एक स्वर में भारत माता की जय का उद्घोष किया।

दीक्षांत समारोह में चमका पीपलहेड़ा का नाम, हर्ष राणा यूपी पुलिस सेवा के लिए तैयार

शाह टाइम्स संवाददाता

खतौली। क्षेत्र के गांव पीपलहेड़ा के लिए गर्व का क्षण उस समय देखने को मिला, जब गांव के पूर्व प्रधान एवं 'खतौली की चौपाल' के संस्थापक सदस्य श्रीवीर राणा के सुपुत्र हर्ष राणा ने मुरादाबाद में आयोजित दीक्षांत समारोह के दौरान उत्तर प्रदेश पुलिस में सेवा देने के लिए अपनी तैयारी पूरी कर ली। दीक्षांत समारोह में हर्ष राणा की इस उपलब्धि पर परिजनों व क्षेत्रवासियों में खुशी का माहौल है। उनकी सफलता को गांव और क्षेत्र के युवाओं के लिए प्रेरणादायक बताया जा रहा है। खतौली की चौपाल' की ओर से हर्ष राणा को उज्ज्वल भविष्य और कर्तव्यनिष्ठ सेवा के लिए हार्दिक शुभकामनाएं दी गईं। चौपाल के सदस्यों ने विश्वास जताया कि हर्ष अपनी मेहनत, ईमानदारी और समर्पण से पुलिस विभाग में उत्कृष्ट कार्य करेंगे और क्षेत्र का नाम रोशन करेंगे।

चौकीदार हत्याकांड में पुलिस के हाथ खाली

- **एसएसपी पहुंचे मौके पर, जल्द खुलासे का दिया आश्वासन**

शाह टाइम्स संवाददाता

चरथावल। नगर मे छपार-रोहना रोड स्थित किड्स हेवन पब्लिक स्कूल के भीतर चौकीदार की हत्या के करीब 36घंटे से अधिक समय बीतने के बाद भी पुलिस के हाथ खाली नजर आ रहे हेस गत दिवस जहाँ सुबह सवेरे ही किड्स हेवन पब्लिक स्कूल के चौकीदार की धारदार हथियारों से हत्या कर दी गयी थी हत्या से क्षेत्र मे हड़कम्प मच गया था।

वही स्कूल प्रागण के अंदर चौकीदार की हुई बेरहमी से हत्या ने जहाँ पुलिस की कार्यप्रणाली और कानून व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए थे वही क्षेत्र मे इतनी बड़ी वारदात के घटित होने और घटना को अंजाम देने के बाद आरोपियों के आराम से फरार होने पर पुलिस द्वारा क्षेत्र मे की जा रही रात्रि गश्त की पूरी तरह पोल खुल गयी थे और क्षेत्र मे वारदात का खुलासा न होने से भारी रोष हे वही सीओ सदर ने चरथावल थाने पहुंचकर मामले मे छानबीन की और हर पहलू पर बारीकी से नजर दौड़ाकर जल्द से जल्द घटना को खोलने की कोशिश की लेकिन सूत्रों के अनुसार अभी पुलिस के हाथ खाली नजर आ रहे है और घटना का कोई कलु पुलिस के हाथ अभी तक न लगने की चर्चा है।

पुलिस की रडार पर आए लोगों से पूछताछ की: चरथावल पुलिस ने आसापस लगे सीसीटीवी केमरो को खूब खगाला और जो भी जरा भी रोड से गुजर रहा सँदिग्ध नजर आया उससे वहा से गुजरने सहित पुरे विवरण के साथ पूछताछ की लेकिन पुलिस के हाथ कोई सुराग अभी तक न लगने की चर्चा है वही पुलिस द्वारा हर पहलू पर नजर दौड़ाकर पुरे दिन इसी कड़ी मे लगकर घटना को खोलने के हर सम्भव प्रयास करती नजर आयी।

खुलासे के लिए लगी तीन टीमें: हत्याकांड के बाद जहाँ घटना को खोलने के लिए एसपी सिटी द्वारा तीन टीमें गठित की गयी थी वही तीनो टीमें हत्याकांड के खुलासे के लिए अपने अपने स्तर पर जानकारी जुटाकर घटना से जुड़े हर पहलू पर जहाँ बारीकी से नजर दौड़ाती नजर आयी वही घटना से जुडी हर चीज पर गहन नजर दौड़ाकर घटना के खुलासे की कोई कड़ी मिलने की पूरी को शिश करती नजर आयी वही सूत्रों के अनुसार अभी तक पुलिस हवा मे ही तीर चला रही है।

गन्ने की फसल में चोटी बे धक कीट का प्रकोप

- **किसान और प्रबंधन ने चलाया अभियान**

शाह टाइम्स संवाददाता

मंसूरपुर। मंसूरपुर शुगर मिल के गन्ना महा प्रबंधक उत्तम कुमार वर्मा ने बताया कि गन्ने की फसल चोटी बे धक कीट से प्रभावित हो गई है।

इसको समाप्त करने के लिए किसानों तथा मिल प्रबंधन ने अभियान चलाया है। उन्होंने बताया कि जिस खेत में चोटी बेधक कीट का प्रभाव दिखाई दे उस पौधे क। चोटी बे धक पौधे को खेत सेकाट कर लाने पर किसानों को प्रोत्साहन राशि के रूप में मिल की तरफ से 2 प्रति पौधा दिया जा रहा है।

उन्होंने किसानों से खेतों में फेरोमैन ट्रैप उपकरण भी लगाने की सलाह दी है। इससे चोटी बेधक मादा कीट की गंध निकलती है। गंध सूंघकर नर कीट इसकी ओर आकर्षित होते हैं और इसमें गिर कर मर जाते हैं। इस प्रकार उनकी आबादी फैलने से रुक जाती है।

कार्यकर्ताओं संग पूर्व विधायक उमेश ने सुनी मन की बात

शाह टाइम्स संवाददाता

बुढ़ाना। देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के लोकप्रिय मासिक कार्यक्रम मन की बात को रविवार को बुढ़ाना विधानसभा क्षेत्र में पूरे उत्साह के साथ सुना गया। बुढ़ाना विधानसभा क्षेत्र के पूर्व विधायक उमेश मलिक ने मंडल बुढ़ाना के बूथ नंबर 90 पर दर्जनों कार्यकर्ताओं एवं पदाधिकारियों के साथ बैठकर प्रधानमंत्री के संबोधन को सुना।

इस अवसर पर यहां पूर्व विधायक उमेश मलिक ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मन की बात कार्यक्रम के माध्यम से समाज के अंतिम व्यक्ति तक

पहुंचकर सकारात्मक ऊर्जा का संचार करते हैं। उनके विचार युवा, किसान, महिला और हर वर्ग के लिए प्रेरणादायक हैं।

उन्होंने कार्यकर्ताओं से आह्वान किया कि पीएम मोदी के संदेश को बूथ स्तर तक हर घर तक पहुंचाएं।

कार्यक्रम में मंडल अध्यक्ष मोनू ठाकुर, भूमि विकास बैंक चेयरमैन विनोद सैनी, कुलदीप बागड़ी, पुनीत पंवार, शिवम निमेष, मुकेश शर्मा, सोनू कुमार, प्रमोद गर्ग, सचिन गुर्जर समेत बड़ी संख्या में पार्टी पदाधिकारी और कार्यकर्ता मौजूद रहे।

इस कार्यक्रम के बाद समस्त कार्यकर्ताओं ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा बताए गए स्वच्छता, जल संरक्षण और आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को धरातल पर उतारने का संकल्प लिया। पूर्व विधायक उमेश मलिक ने यहां पर कहा कि बूथ सशक्तीकरण ही पार्टी की सबसे बड़ी ताकत है और मन की बात कार्यक्रम इसमें अहम भूमिका निभा रहा है।

परशुराम जयंती पर उमड़ा आस्था का सैलाब

शाह टाइम्स सवांददाता

खतौली। रविवार को कस्बे में भगवान परशुराम जयंती पूरे श्रद्धा भाव और उत्साह के साथ मनाई गई। वैदिक मंत्रोच्चार और धार्मिक अनुष्ठानों के बीच शुरू हुए इस आयोजन में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लिया। भगवान परशुराम की प्रतिमा के विधिवत पूजन से हुई। श्रद्धालुओं ने माल्यार्पण कर उनके आदर्शों और समाज के प्रति योगदान को स्मरण किया। इसके बाद अखिल भारतीय ब्राह्मण महासभा के तत्वावधान में शोभायात्रा निकाली गई, जो थानेवर महादेवालय से प्रारंभ होकर बुढ़ाना मार्ग, जीटी रोड, इंद्रा मूर्ति और जानसठ तिराहे से होते हुए परशुराम भवन पर संपन्न हुई। शोभायात्रा में बैंड-बाजों, डीजे और आकर्षक झांकियों ने सभी का ध्यान खींचा। भगवान परशुराम, शिव-पार्वती, शिव तांडव, श्रीराम-सीता और हनुमान जी के जीवंत स्वरूप विशेष आकर्षण का केंद्र रहे। मार्ग में जगह-जगह श्रद्धालुओं ने पुष्पवर्षा कर यात्रा का स्वागत किया, जबकि साधु-संत भजन-कीर्तन करते हुए आगे बढ़ते रहे। महिलाओं और पुरुषों की बड़ी भागीदारी ने आयोजन को और भव्य बना दिया। भीषण गर्मी के बीच विभिन्न सामाजिक संगठनों ने सेवा भाव दिखाते हुए जलपान और शीतल जल की व्यवस्था की। बुढ़ाना तिराहे, कीर्ति स्तंभ और जानसठ तिराहे पर अलग-अलग संगठनों द्वारा श्रद्धालुओं की सेवा की गई। कार्यक्रम के दौरान सुरक्षा व्यवस्था चाक-चौबंद रही। उप जिलाधिकारी ललित मिश्रा, क्षेत्राधिकारी रूपाली राव और कोतवाली प्रभारी निरीक्षक दिनेश चंद्र बघेल के नेतृत्व में पुलिस बल तैनात रहा। मुख्य अतिथि पंडित राम अवतार शर्मा ने भगवान परशुराम के जीवन से प्रेरणा लेने का संदेश दिया। इस अवसर पर विभिन्न राजनीतिक और सामाजिक संगठनों के पदाधिकारी एवं नागरिक उपस्थित रहे।

नाबालिग को बहला-फुसलाकर ले जाने वाले आरोपी को गिरफ्तार कर भेजा जेल

शाह टाइम्स संवाददाता

बुढ़ाना। पुलिस ने नाबालिग लड़की को बहला फुसलाकर ले जाने के मामले में कार्रवाई करते हुए आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। पकड़ा गया आरोपी सागर पुत्र अशोक निवासी काशीराम कॉलोनी बुढ़ाना का रहने वाला है। प्राप्त जानकारी के अनुसार कुछ दिन पूर्व काशीराम कॉलोनी निवासी एक व्यक्ति ने कोतवाली में तहरीर देकर आरोप लगाया था कि सागर उसकी नाबालिग बेटी को बहला फुसलाकर अपने साथ ले गया है। परिजनों की शिकायत को गंभीरता से लेते हुए कोतवाली प्रभारी सुभाष बाबू अत्री ने तत्काल एक टीम गठित कर आरोपी की तलाश शुरू कर दी थी। पुलिस टीम ने संभावित ठिकानों पर दबिश देकर सघन तलाशी अभियान चलाया था। तब मुखबिर की सूचना पर पुलिस ने आरोपी सागर को कस्बे से ही गिरफ्तार कर लिया। खबर है कि किशोरी को नारी निकेतन भेजा गया है। पुलिस ने आरोपी सागर के खिलाफ संबंधित धाराओं में मुकदमा दर्ज किया। मेडिकल व अन्य कानूनी प्रक्रिया पूरी करने के बाद आरा. पी को न्यायालय में पेश किया गया जहां से उसे न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया। कोतवाली प्रभारी सुभाष बाबू अत्री ने बताया कि महिला व बच्चों से जुड़े अपराधों में जीरो टॉलरेंस की नीति अपनाई जा रही है। ऐसे मामलों में तत्काल मुकदमा दर्ज कर सख्त से सख्त कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने समस्त अभिभावकों से भी अपील की कि वे अपने बच्चों की गतिविधियों पर नजर रखें और किसी भी संदिग्ध स्थिति में तुरंत पुलिस को सूचना दें।

सपा नेता डॉक्टर सत्येन्द्र पाल ने लिया स्वामी का आशीर्वाद

शाह टाइम्स संवाददाता

बुढ़ाना। समाजवादी पार्टी शिक्षक सभा के प्रदेश उपाध्यक्ष डॉक्टर सत्येन्द्र पाल के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल ने मेरठ जनपद प्रवास के दौरान शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती महाराज से शिष्टाचार भेंट करते हुए उनका आशीर्वाद प्राप्त किया।

इस दौरान यहां पर शिक्षा, समाज और राष्ट्रहित से जुड़े हुए विभिन्न समसामयिक मुद्दों पर भी चर्चा हुई। स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद महाराज ने प्रतिनिधिमंडल को धर्म, शिक्षा और संस्कारों के माध्यम से समाज निर्माण का भी संदेश दिया।

उन्होंने कहा कि शिक्षक ही राष्ट्र के वास्तविक निर्माता हैं और समाज को दिशा देने में उनकी भूमिका सबसे

अहम है। प्रतिनिधिमंडल में समाजवादी पार्टी मुजफ्फरनगर के जिला सचिव अनेश कुमार, वरिष्ठ सपा नेता अनुराग पाल, रविन्द्र पाल, डॉक्टर सत्येन्द्र पाल के प्रतिनिधि पुष्पेन्द्र बालियान, गुलशन चौहान एवं वितीत कुमार शर्मा प्रमुख रूप से शामिल रहे। सभी ने स्वामी से आशीर्वाद लिया और उनके विचारों को जन जन तक पहुंचाने का संकल्प दो. हराया।

शिक्षक समाज को जागरूक करने और सामाजिक समरसता बढ़ाने के लिए संकल्पित है। भेंट सौहार्दपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुई।

शुकदेव संस्कृत विद्यालय के मेधावी सम्मानित

शाह टाइम्स संवाददाता

मोरना। शुकतीर्थ में स्थित शुकदेव संस्कृत उत्तर माध्यमिक विद्यालय, शुकतीर्थ के संस्कृत विद्यार्थी अक्षय शर्मा को पूर्व मध्यमा (दसवीं) में 81 प्रतिशत अंक के साथ मण्डल में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर पीठाधीश्वर स्वामी ओमानंद महाराज ने सम्मानित किया। उन्होंने कहा भारतीय संस्कृति के संस्कृत वांग्मय में संस्कृत भाषा का बहुत बड़ा योगदान है। संस्कृत सभी भाषाओं की आत्मा और प्राण है।

भागवत पीठ शुकदेव आश्रम में आयोजित मेधावी सम्मान कार्यक्रम में पीठाधीश्वर स्वामी ओमानन्द महाराज ने कहा कि संस्कृत के उत्थान के बिना श्रेष्ठ भारत की कल्पना नहीं की जा सकती। संस्कृत देव भाषा है, वेद भाषा है, भारत की भाषा है और ऋषि मुनियों की भाषा है। भारत की पहचान है संस्कृत भाषा, जो सभी भाषाओं की जननी है। संस्कृत ने सब भाषाओं को समृद्ध किया है। सम्मानित मेधावी विद्यार्थियों में शामली निवासी दीप शर्मा ने उत्तर मध्यमा (बाहरवीं) में 71.33 प्रतिशत मंडल में तीसरा तथा

मुजफ्फरनगर में पहला स्थान हासिल किया है। बिजनोर के नूरपुर निवासी छात्र देव कौशिक ने उत्तर मध्यमा प्रथम (11वीं) में 74.83 प्रतिशत अंक के साथ प्रथम पाया। विद्यालय के 25 अन्य मेधावी संस्कृत विद्यार्थियों को पीठाधीश्वर ने सम्मानित किया। स्वामी जी ने सभी उत्तीर्ण छात्रों को अंगवस्त्र पहनाकर सफल यशस्वी जीवन के लिये आशीर्वाद दिया। ट्रस्टी ओमदत्त देव, प्रधानाचार्य गिरीश चंद्र उप्रेती, आचार्य अरुण मौजूद रहे।

जन्नताबाद की बस्ती में बहने लगी विकास की ब्यार

शाह टाइम्स संवाददाता

जानसठ। कस्बे के वार्ड न 13 मे लगभग 15 वर्षों से अपेक्षा की शिकार अपनी बदहाली पर आंसू बहाती हुई मौहल्ला जन्नताबाद स्थित कॉलोनी के दिन अब बहुरने लगे और यहां विकास की ब्यार बहने लगी है।

चेयरमैन डॉ.आबिद हुसैन के नेतृत्व में वार्ड 13 के सभासद मोहम्मद अहसान ने दौरा कर बस्ती का जायजा लिया था। तो वही 15 वर्षों से पेयजल,और सड़क नाली विहीन बस्ती में अपनी जिंदगी बसर कर रहे लोगों को अब उम्मीद की किरण नजर आने लगी है क्योंकि उक्त विकास विहीन बस्ती को विकास की किसी तरह की कोई उम्मीद नहीं थी, लेकिन अब उनके दिन फिरने लगे हैं। अब वे भी विकास की मुख्यधारा से जुड़ रहे हैं। उनकी मूलभूत सुविधाओं के लिए विशेष पहल की गई है। जिसमें स्वच्छ पेयजल के लिए पाइपलाइन, पक्की सड़कें, विद्युत जैसी बुनियादी सुविधाओं की पहुंच सुनिश्चित की जा रही है। चेयरमैन डॉ.आबिद हुसैन के नेतृत्व में वार्ड 13 के सभासद मोहम्मद अहसान ने कॉलोनी में

विकास कार्य शुरू कराते हुए कॉलोनी में पेयजल के लिए पाइपलाइन बिछाई जाने का कार्य शुरू करा दिया गया है, उन्होंने कहा, कि जल्द ही यहां भी पक्की सड़कें बनवाकर कॉलोनी वासियों की गंभीर समस्या का समाधान कराया जाएगा। चेयरमैन डॉ.आबिद हुसैन व सभासद मोहम्मद अहसान ने संयुक्त रूप से कहा, कि जल्द से जल्द सड़क निर्माण का कार्य भी बस्ती में शुरू करा दिया जाएगा। इस दौरान मुख्य रूप से चेयरमैन डॉ.आबिद हुसैन, सभासद मोहम्मद अहसान, इकराम खां, कफील, रहीस खां, अहसान टेलर्स, आफताब फरीदी सोनू, सईद, साजिद आदि मौजूद रहे।

बाबा साहब की प्रतिमा से छेड़छाड़

आक्रोशित लोगों ने गिरफ्तारी की मांग को दिया धरना, आश्वासन पर समाप्त

शाह टाइम्स संवाददाता

नागल। थाना क्षेत्र के गांव बड़ूली मे अज्ञात असामाजिक तत्वों ने बाबा साहब डॉ. अंबेडकर की प्रतिमा से छेड़छाड़ कर अपमान करने का घिनौना कार्य किया।

ग्रामीण सूरज कुमार, शिव. राज, सचिन, श्याम सिंह आदि के अनुसार गांव बड़ूली में गत दिवस डॉ. अंबेडकर भवन के सामने ग्राम समाज की भूमि पर बाबासाहब की प्रतिमा को स्थापित कर दिया गया था। जिसको सुबह होते ही किसी अज्ञात द्वारा गांव की फिजा खराब करने की नियत से कूड़े के ढेर पर लिटा दिया। दिन निकलते ही जब ग्रामीणों ने इस कृत्य को देखा तो यह खबर आग की तरह फैल गई जिसको लेकर अनुयायियों में रोष पनप गया। गुस्साए लोगों ने गांव में ही धरना प्रदर्शन कर आरोपियों की पहचान कर गिरफ्तारी की मांग की। जानकारी मिलते ही घटनास्थल पर पहुंचे कार्यवाहक थाना प्रभारी योगेंद्र सिंह ने बामुश्किल स्थिति को संभालते हुए बाबासाहब की प्रतिमा को सुरक्षित स्थान पर रखवाया और धरना दे रहे ग्रामीणों से बात कर उचित कार्यवाही और शीघ्र आरोपियों की गिरफ्तारी का आश्वासन दिया। जिसपर ग्रामीणों ने धरना समाप्त कर दिया। इस दौरान भीम आर्मी कार्यकर्ता विनोद कुमार, जॉनी कुमार, बुल्ला शाह, आशीष, अंकुर, श्रीकांत, अर्जुन बिंदल, नितिन, अक्षय दुबे, संयम, अमरदीप, राहुल, गुलाब व पंकज समेत आदि मौजूद रहे।

दो नशा तस्कर दबोचे

शाह टाइम्स ब्यूरो

सहारनपुर। थाना देहात कोतवाली पुलिस ने मादक पदार्थों की तस्करी करने वाले दो शातिर नशा तस्करों को दबोच लिया।

मिली जानकारी के अनुसार डीआईजी अभिषेक सिंह के निर्देश पर परिक्षेत्र के तीनों जनपदों की पुलिस द्वारा नशे के अवैध कारोबार, प्रतिबंधित दवाओं की तस्करी एवं बिक्री पर रोक लगाने के लिए ऑपरेशन सवेरा–नशे के अंधकार से जीवन के उजाले की ओर अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान के तहत थाना देहात कोतवाली पुलिस ने प्रभारी निरीक्षक देवेश कुमार शर्मा व उपनिरीक्षक राज. कुमार के नेतृत्व में चौकिंग के दौरान दो शातिर नशा तस्कर बाबर पुत्र कलीम व बिलाल उर्फ समीर पुत्र दिलावर निवासीगण नूरबस्ती थाना कोतवाली नगर को इकरा स्कूल के सामने कब्रिस्तान के पास से गिरफ्तार कर लिया।

घर में फंदे पर लटका मिला युवती का शव

शाह टाइम्स संवाददाता

रामपुर मनिहारान। थानाक्षेत्र के एक गांव में एक युवती का शव उसके घर में फंदे पर लटका मिलने से सनसनी फैल गई। घटना की सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और फॉरेंसिक टीम को भी बुलाया गया।पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

मिली जानकारी के मुताबिक ग्राम हरडेकी निवासी लगभग 20 वर्षीय युवती चाहना पुत्री बॉबी का शव दोपहर लगभग एक बजे घर में फंदे पर लटका मिला। परिजनों द्वारा सूचना दिए जाने पर कोतवाली प्रभारी इंस्पेक्टर उम्मेद कुमार पुलिस टीम के साथ तत्काल मौके पर पहुँचे और घटना की जानकारी ली।मामला संदिग्ध है। हालांकि यह स्पष्ट नहीं हो पाया है कि युवती ने आत्महत्या की है या इसके पीछे कोई अन्य कारण है। पुलिस सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए गहनता से जांच कर रही है। फॉरेंसिक टीम भी मौके पर पहुँची और साक्ष्य जुटाए। पुलिस ने शव का पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

कोतवाली प्रभारी इंस्पेक्टर उम्मेद कुमार का कहना है कि घटना की जाँच की जा रही है। पोस्टमार्टम की रिपोर्ट आने के बाद आगे की जानकारी मिलेगी।

24 घंटे बीतने के बाद भी पुलिस खाली हाथ

शाह टाइम्स संवाददाता

नकुड़। जामा मस्जिद में चोरी की घटना के खुलासे को लेकर पुलिस के 24 घंटे बीत जाने के बावजूद भी हाथ खाली हैं। जामा मस्जिद में दिनदहाड़े गल्ला तोड़कर चोरी की सनसनीखेज वारदात ने पुलिस व्यवस्था पर भी गंभीर सवाल खड़े हो रहे हैं। बेखौफ अज्ञात बदमाश वारदात को अंजाम देकर आसानी से फरार हो गया। वहीं मस्जिद कमेटी ने तहरीर देकर आरोपी के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की है।

देर शाम को कमेटी से जुड़े मुहम्मद अली खान ने थाना पुलिस को दी गई तहरीर में बताया कि शनिवार सुबह करीब साढ़े नौ बजे एक संदिग्ध युवक मस्जिद में दाखिल हुआ। जहां पर विगत तीन वर्षों से जमा चंदे की रकम चोरी कर आसानी से फरार हो गया। मस्जिद परिसर में संदिग्ध युवक को गल्ले के साथ छेड़छाड़ करते हुए आसपास के लोगों ने जब देखा तो उन्होंने शोर मचाया लेकिन आरा. पी मौके से भाग निकला। मुहम्मद अली के अनुसार गल्ले में अनुमा. नित 10 से 15 हजार रुपये की नकदी मौजूद थी। जामा मस्जिद के आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों में आरोपी की गतिविधियां तथा भागते हुए उसके फुटेज कैद बताई गई है जो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल है। घटना के बाद क्षेत्र में रोष व्याप्त है। नगर वासियों का कहना है कि मस्जिद से चंद कदमों की दूरी पर पुलिस पिकेट मौजूद रहने के बावजूद इस तरह की घटना होना सुरक्षा व्यवस्था की पोल खोलता है। नगर वासियों ने आरोपी की शीघ्र गिरफ्तारी और धार्मिक स्थलों की सुरक्षा व्यवस्था मजबूत करने की मांग की है।

■ जामा मस्जिद में चोरी की घटना, सीसीटीवी कैमरे में आरोपी की गतिविधि हुई कैद

पुलिस मुठभेड में गौकश घायल, हथियार बरामद

शाह टाइम्स संवाददाता

बेहट। कोतवाली पुलिस ने वाहन चेकिंग के दौरान मुठभेड़ में एक गोकश आरोपी को घायल अवस्था मे गिरफ्तार किए है। पुलिस ने उस के कब्जे से बाइक तथा अवैध हथियार भी बरामद किया है। पुलिस ने घायल को सी एच सी बेहट भर्ती करा कर कानूनी कार्यवाही में लग गई है।

कोतवाली प्रभारी निरीक्षक जितेन्द्र सिंह दिखीत ने बताया कि को पुलिस फोर्स के साथ शाकंभरी मार्ग पर जसमोर के पास पर संदिग्ध व्यक्तियों और वाहनों की चेकिंग कर कर रहे थे तभी जसमोर की ओर से एक मोटरसाइकिल पर सवार एक व्यक्ति आता दिखाई दिया तो पुलिस ने उसे संदिग्ध मानते हुए रुकने का इशारा किया मगर बाइक सवार व्यक्ति नहीं रुका और पुलिस को देखकर मोटरसाइकिल मोड़कर चड्ढा फॉर्म की तरफ भागने लगा पुलिस ने उसका पीछा किया कुछ दूरी पर जाकर उसकी मोटरसाइकिल सड़क किनारे गड्ढे में गिरकर फिसल गई और वह गिर गया पुलिस को अपने ओर आता देखकर आता देख संदिग्ध व्यक्ति ने पुलिस टीम पर जान से मारने की नीयत से फायरिंग कर दी पुलिस ने भी अपनी आत्म रक्षा के लिए जवाबी कार्रवाई की गई तो मुठभेड़ मे बदमाश के पैर में जा लगी पुलिस ने घायल अवस्था में उसे गिरफ्तार कर लिया गया और कोतवाली ले आयी। पुलिस ने घायल व्यक्ति से जब उससे पूछताछ की गई तो उसने अपना नाम इंतजार पुत्र पीरु निवासी ग्राम पथरवा थाना बेहट जनपद सहारनपुर बताया है। पुलिस ने उसके कब्जे से एक बाइक एक अवैध तमंचा कारतूस तथा गो. कशी के उपकरण भी बरामद किए है।पुलिस ने घायल इंतजार को उपचार के लिए सरकारी अस्पताल बेहट में भर्ती कराया।

सीओ/ए एसपी एस एन वैभव पांडे ने बताया कि घायल गोकश इंतजार बेहट कोतवाली में दर्ज गौकशी के मुकदमे मुकदमे में वांछित चल रहा था पुलिस ने चे. कंग के दौरान उसे रोकने का इशारा किया मगर वह कच्चे रास्ते की ओर भागने लगा उसने पुलिस टीम पर गोली चलाई पुलिस ने भी अपनी रक्षा में जवाबी कार्रवाई की जिससे वह घायल हो गया उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ कानूनी कार्यवाही करते हुए सक्षम न्यायालय मे पेश किया है।

इंस्पेक्टर वीरेंद्र ने संभाली थाने की कमान

शाह टाइम्स संवाददाता

छुटमलपुर। फतेहपुर थाने में कानून व्यवस्था को और अधिक धारदार व चुस्त–दुरुस्त बनाने के उद्देश्य से एसएसपी अभिनंदन सिंह ने एक बार फिर अनुभवी और कड़क अफसर वीरेंद्र सिंह राणा पर भरोसा जताया है। राणा की तैनाती से स्थानीय स्तर पर शांति व्यवस्था बहाल होने की उम्मीदों को बल मिला है।

वीरेंद्र सिंह राणा पुलिस महकमे का एक ऐसा चेहरा हैं जो अपनी कार्यकुशलता और बेदाग कार्यशैली के लिए जाने जाते हैं बागपत बरेली और बदायूं जैसे चुनौतीपूर्ण जनपदों में बतौर थानाध्यक्ष और चौकी प्रभारी अपनी सेवाएं दे चुके राणा ने हर जगह अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई है। नए थानाध्यक्ष के रूप में वीरेंद्र सिंह राणा की प्राथमिकताओं में कोई फेरबदल नहीं है वे जीरो टॉलरेंस नीति पर चलेंगे उन्होंने स्पष्ट कर दिया है कि नशा तस्करी और गोकशी पर पूर्णत: लगाम लगाते हुए क्षेत्र में अवैध नशे के सौदागरों और गोकशी जैसी गतिविधियों को कतई बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। वीरेंद्र सिंह राणा की तेजतर्रार कार्यप्रणाली के चलते, जो अपराधी अब तक अपनी रणनीति बनाने में मशगूल थे। अब उनके लिए फतेहपुर में टिकना मुश्किल हो गया है। निश्चित रूप से, उनकी यह नई तैनाती क्षेत्र में एक सुरक्षित और भयमुक्त वातावरण निर्मित करेगी।

रक्तदान से तीन लोगों को मिलता है नया जीवन: अतहर

शाह टाइम्स संवाददाता

छुटमलपुर। अलावलपुर रोड स्थित शाही मस्जिद में दारुस्थिफाह हेल्थ केयर के बैनर तले एक भव्य रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया इस शिविर का शुभारंभ कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एवं समाजसेवी मोहम्मद अतहर ने किया कार्यक्रम में बड़ी संख्या में युवाओं ने बढ़–चढ़कर भाग लिया और रक्तदान कर मानवता की मिसाल पेश की

शिविर को संबोधित करते हुए समाजसेवी मोहम्मद अतहर ने कहा रक्तदान जाति और मजहब की दीवारें तोड़कर मानवता को जोड़ने का काम करता है। यह सबसे बड़ा इंसानियत का कार्य है, जिससे शरीर में नई ऊर्जा का संचार होता है और किसी जरूरतमंद को नया जीवन मिलता है।

समाजसेवी मोहम्मद दानिश गौड़ ने रक्तदान को महादानश बताते हुए उपस्थित युवाओं से इसे नियमित अभियान बनाने की अपील की। उन्होंने कहा कि रक्तदान पूरी तरह सुरक्षित और लाभकारी है, जिससे समाज में फैली भ्रांतियों को दूर करना आवश्यक है।

कार्यक्रम के अंत में सभी रक्तदाताओं को सम्मान पत्र और शील्ड देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर डॉ. रिजवान अहमद, डॉ. मुकीम, मोहम्मद दानिश, मोहम्मद अबुजर, मोनिश गाड़ा, रिजवान इस्लाम सचिन और रमेश सहित क्षेत्र के अनेक गणमान्य लोग मौजूद रहे।

शिविर में युवाओं की भीड़ और सक्रिय भागीदारी ने यह साबित कर दिया कि छुटमलपुर की नई पीढ़ी समाज सेवा के प्रति पूरी तरह प्रतिबद्ध है।

हिमाचल पुलिस की छापेमारी

चिलकाना। ग्राम गोवर्धनपुर ढुलानी में एक मैडिकल स्टोर संचालक के घर पर छापेमारी करते हुए हिमाचल पुलिस टीम ने भारी मात्रा में प्रतिबंधित नशीले कैप्सूल ट्रामाडोल बरामद किए हैं। पुलिस मेडिकल संचालक के पिता को गिरफ्तार कर अपने साथ ले गई।

हिमाचल प्रदेश के थाना पांवटा साहिब पुलिस ने प्रतिबंधित नशीली दवाईयों की तस्करी करते हुए जिला सहारनपुर के कस्बा बेहट निवासी आरोपी नशा तस्कर विकास को गिरफ्तार किया था। आरोपी विकास ने पुलिस पूछताछ में यह नशीली दवाईयां थाना चिलकाना की पुलिस चौकी पठेड़ क्षेत्र के ग्राम गोवर्धनपुर ढुलानी निवासी गुफरान उर्फ बिल्ला पुत्र गफ्फार से खरीदना बताया।

जिसके बाद हिमाचल पुलिस ने आरोपी विकास की निशानदेही पर थाना चिलकाना पुलिस टीम को साथ लेकर गुफरान अली उर्फ बिल्ला के घर पर छापेमारी की। इस दौरान पुलिस टीम द्वारा ग्राम प्रधान, अन्य जिम्मेदार लोगों तथा आरोपी गुफरान के पिता की मौजूदगी में घर की तलाशी ली गई तो प्लास्टिक के एक कट्टे में दवाई के 31 बॉक्स पाए गए। जिसमे से 7440 प्रतिबंधित नशीले कैप्सूल ट्रामाडोल बरामद हुए।

जबकि आरोपी गुफरान पुलिस की छापेमारी से पहले ही घर से फरार हो गया था। पुलिस टीम द्वारा आरोपी के पिता गफ्फार पुत्र रशीद को मौके पर ही गिरफ्तार कर लिया गया।

विवादित भूमि में निर्माण कार्य का आरोप

चिलकाना। नगर निवासी पीड़ित ने विपक्षियों पर एसडीएम कोर्ट के आदेशों की अवेहलना करते हुए विवादित भूमि में जबरन निर्माण कार्य करने की कोशिश करने का आरोप लगाया है।

पीड़ित नवाब अली पुत्र जिन्दा हसन निवासी मौहल्ला जाकिर हुसैन कस्बा व थाना चिल. काना हाल निवासी मकान नम्बर 23 डिफेन्स कालोनी बेहट रोड सहारनपुर ने विपक्षीगण फुरकान पुत्र जिन्दा हसन, कुरबान उर्फ सोनू पुत्र फुरकान, गोहर जहां पत्नि इकबाल व सलमान पुत्र इकबाल निवासीगण मोहल्ला मजहर हसन कस्बा व थाना चिल. काना के खिलाफ थाना पर तहरीर दी है। पीड़ित ने बताया है कि एक भूमि जो कि मोहल्ला मजहर हसन कस्बा चिलकाना में स्थित है। उक्त भूमि के सम्बन्ध न्यायालय उपजिलाधिकारी सहारनपुर के न्यायालय मे विपक्षीगण की ओर से एक वाद अन्तर्गत धारा 144 उत्तर प्रदेश राजस्व संहिता फुरकान आदि बनाम नौशाद अली आदि योजित कर रखा है। जिसमें विपक्षीगण ने उक्त भूमि के सम्बन्ध मे स्थगन आदेश 14 फरवरी 2025 को प्राप्त कर रखे है। जिसमे न्यायालय द्वारा अग्रिम आदेशो तक उपरोक्त भूमि को खुर्द बुर्द न करने तथा मौके पर यथास्थिति बनाये रखने के आदेश पारित कर रखे है। आरोप है कि विपक्षीगण स्वयं न्यायालय के आदेशों की खुली अवलहेना करते हुए मौके पर निर्माण कार्य कर पीड़ित के कब्जे मे हस्ताक्षेप करने की कोशिश कर रहे हैं। पीड़ित की गैर मौजूदगी मे विपक्षियो ने मौके पर रेत बजरी आदि भी डलवा दिया है। पीड़ित कहना है यदि विपक्षीगण मौके पर किसी भी प्रकार से स्थिति को परिवर्तित करते है तो न्यायालय के स्थगन आदेश का खुल्लम खुल्ला उल्लघंन होगा। पीड़ित ने न्यायालय के स्थगन आदेश का हवाला देते हुए पुलिस से उपरोक्त विपक्षीगण को मौके पर उसके कब्जे मे किसी भी प्रकार का हस्ताक्षेप करने से रोके जाने तथा विपक्षियों के खिलाफ कानूनी कार्यवाही किये जाने की मांग की है।

शांति भंग में दो को जेल

शाह टाइम्स ब्यूरो

सहारनपुर। कोतवाली रामपुर मनिहारान पुलिस ने शांति भंग के आरोप में तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया।

मिली जानकारी के अनुसार रामपुर मनिहारान कोतवाली पुलिस ने प्रभारी निरीक्षक उम्मेद सिंह, उपनिरीक्षक अरूण कुमार व उपनिरीक्षक पुष्पेंद्र चौधरी के नेतृत्व में तीन आरोपियों को आपस में पैसों के लेनदेन को लेकर विवाद करने एवं शांति व्यवस्था भंग के आरोप में गिरफ्तार कर लिया। प्रभारी निरीक्षक उम्मेद सिंह ने बताया कि आरोपी साजिद पुत्र इस्लाम एवं फरमान पुत्र इस्लाम निवास. ीगण चुनहैटी थाना रामपुर मनिहारान आपस में पैसे के लेनद. ेन को लेकर झगड़ा कर रहे थे।

मकान की दूसरी मंजिल पर लाखों की नगदी व जेवर चोरी

शाह टाइम्स संवाददाता

नागल। थाना क्षेत्र के गांव सरसीना में बीती रात एक मकान की दूसरी मंजिल पर बने कमरों को निशाना बनाकर चोर करीब दस लाख रुपए के जेवर व नकदी चोरी कर ले गये। चोरों द्वारा अंजाम दी गयी इस घटना से ग्रामीण खौफजदा है।

मिली जानकारी के मुताबिक गांव सरसीना निवासी मोहित कुमार पाल हरिद्वार की किसी निजी कंपनी में काम करता है। घटना की रात घर पर उसकी मां व पत्नी थी जो नीचे मकान मे सो रही थी। रात के समय अज्ञात चोर सीढी लगाकर मकान की उपरी मंजिल पर पहुंच गये और वहां घुसकर कमरे में रखी अलमारी का ताला तोड़ दिया। अलमारी रखी करीब 50 हजार रुपये की नकदी समेत सोने–चांदी के कीमती आभूषण चोरी कर लिए। चोरी हुए सामान में सोने की चेन, पांच अंगूठियां, दो मंगलसूत्र, तीन जोड़ी पाजेब तथा कानों के कुंडल शामिल बताए गए हैं। घटना का पता रविवार सुबह उस समय चला जब मोहित की मां करीब पांच बजे उठी और उसने मकान के बाहर दीवार पर सीढी लगी देखी। उपर जाने पर देखा कि कमरे का ताला टूटा पडा था और सामान अस्त व्यस्त था। चोरी की घटना देखकर परिजनों मे हड़कंप मच गया और देखते ही देखते मौके पर ग्रामीणों की भीड़ जमा हो गई। पीड़ित परिवार के अनुसार चोरी गए आभूषणों की कीमत करीब दस लाख रुपये बताई जा रही है। सूचना मिलने पर कार्यवाहक थानाध्यक्ष योगेंद्र सिंह मौके पर पहुंचे और घटना निरीक्षण कर किया। उल्लेखनीय है कि पिछले करीब एक माह से क्षेत्र मे लगातार चोरी की घटनाएं बढ़ रही है। चोरी की बढती घटनाओं ने पुलिस व्यवस्था की पोल खोल दी है। बढ़ती चोरियों की घटनाओ से ग्रामीण भी परेशान है। ग्रामीणों ने पुलिस प्रशासन से घटनाओ का खुलासा करने की मांग की है।

दो पालियों में शांतिपूर्वक कराई गयी होमगार्ड परीक्षा

शाह टाइम्स ब्यूरो

सहारनपुर। उप्र पुलिस भर्ती एवं प्रोन्नति बोर्ड द्वारा होमगार्ड्स एनरोलमेंट–2025 की लिखित परीक्षा जिले के विभिन्न परीक्षा केंद्रों पर शांतिपूर्वक संपन्न कराई गई। परीक्षा दो पालियों में आयोजित हुई, जिसमें अभ्यर्थियों की उपस्थिति संतोषजनक रही।

प्रथम पाली में कुल 9840 पंजीकृत अभ्यर्थियों में से 7623 अभ्यर्थी उपस्थित रहे, जबकि 2217 अनुपस्थित रहे। इस प्रकार कुल उपस्थिति 77.47 प्रतिशत दर्ज की गई। प्रमुख परीक्षा केंद्रों में आर्य कन्या इंटर कॉलेज, खालापारय पीडी बाजोरिया इंटर कॉलेज, चकराता रोडय केएएस इंटर कॉलेज, मिशन कंपाउंडय गिरी शंकर इंद्रपाल सिंह इंटर कॉलेजय राजकीय कन्या इंटर कॉलेज, लिंक रोडय राजकीय इंटर कॉलेज, कैलाशपुरय राजकीय इंटर कॉलेज, नेहरू मार्केटय गुरु नानक कन्या इंटर कॉलेज, गांधी पार्कय गुरु नानक इंटर कॉलेज, अंबाला रोडय एचवी इंटर कॉलेज, भाटागढ़य इंडस्ट्रियल मुस्लिम गर्ल्स इंटर कॉलेजय इस्लामिया इंटर कॉलेजय जेवी जैन इंटर कॉलेजय हिन्दू कन्या इंटर कॉलेज, रायवालाय जनता इंटर कॉलेज, पिलखनीय जैन कॉलेज, प्रद्युम्न नगरय महाराज सिंह महाविद्यालयय खेमका गर्ल्स कॉलेजय राजकीय इंटर कॉलेज, कमेला रोडय एसबीबीए इंटर कॉलेजय एसडी इंटर कॉलेजय एसएएम इंटर कॉलेजय सावित्रीबाई फुले महिला पॉलिटेक्निक तथा दिगंबर जैन कन्या इंटर कॉलेज शामिल रहे। इसी तरह द्वितीय पाली में कुल 9840 अभ्यर्थियों में से 7769 उपस्थित रहे, जबकि 2071 अनुपस्थित रहे। इस पाली में उपस्थिति प्रतिशत 78.95 रहा, जो पहली पाली से अधिक रहा। दूसरी पाली के परीक्षा केंद्र आर्य कन्या इंटर कॉलेज, बीजी बाजोरिया इंटर कॉलेज, बीएएस इंटर कॉलेज, इंद्रपाल सिंह इंटर कॉलेज, राजकीय कन्या इंटर कॉलेज, कैलाशपुर इंटर कॉलेज, नेहरू मार्केट इंटर कॉलेज, गुरु नानक कन्या इंटर कॉलेज, गुरु नानक इंटर कॉलेज, एबी इंटर कॉलेज, इंडस्ट्रियल मुस्लिम गर्ल्स इंटर कॉलेज, इस्लामिया इंटर कॉलेज, जेवी जैन इंटर कॉलेज, हिन्दू कन्या इंटर कॉलेज, जनता इंटर कॉलेज, जैन कॉलेज, महाराज सिंह महाविद्यालय, खेमका गर्ल्स कॉलेज, राजकीय इंटर कॉलेज कमेला रोड, एसबीबीए इंटर कॉलेज, एसडी इंटर कॉलेज, एसएएम इंटर कॉलेज, सावित्रीबाई फुले पॉलिटेक्निक और दिगंबर जैन कन्या इंटर कॉलेज प्रमुख रहे। परीक्षा पूरी तरह से शांतिपूर्ण एवं व्यवस्थित ढंग से संपन्न हुई।

शोभित में आयोजित डीएनए दिवस समारोह

गंगोह। शोभित विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ बायोलॉजिकल इंजीनियरिंग एंड साइंसेज विभाग द्वारा डीएनए दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में विभाग के छात्र छात्राओं ने बढ़–चढ़कर प्रतिभाग लिया।

कार्यक्रम का शुभारंभ डीन रिसर्च एंड एसबीईएस प्रो. डॉ. राजीव दत्ता ने मां सरस्वती व बाबू विजेंद्र की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलन कर किया। डीन रिसर्च एंड एसबीईएस ने विषय पर एक जानक. ारीपूर्ण परिचय दिया, जिसमें उन्होंने आधुनिक विज्ञान में डीएनए के महत्व पर प्रकाश डाला और बताया कि डीएनए रिसर्च कैंसर के इलाज, सटीक चिकित्सा, और आनुवंशिक घटनाओं को समझने में नई उम्मीदें जगा रही है। छात्रों ने डॉ. ऋषभ चित्रवंशी और पारुल द्वारा आयोजित पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन और एक क्विज प्रतियोगिता में सक्रिय रूप से भाग लिया। कुलपति प्रो. डॉ. रणजीत सिंह ने कहा कि ऐसे कार्यक्रम वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देने, शोध के प्रति रुचि जागृत करने तथा विद्यार्थियों को आधुनिक जैव–विज्ञान की उपलब्धियों से परिचित कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि डीएनए मानव जीवन की मूलभूत संरचना को समझने का आधार है और इसके अध्ययन से चिकित्सा, कृषि एवं फॉरेंसिक विज्ञान जैसे क्षेत्रों में क्रांतिकारी परिवर्तन संभव हुए हैं।

कुलसचिव प्रो. डॉ. महिपाल सिंह ने कहा कि आज के युग मे जीनोमिक्स और बायोटेक्नोलॉजी के क्षेत्र में तेजी से हो रहे विकास ने विज्ञान की नई दिशाएं खोली हैं। ऐसे आयोजनों के माध्यम से युवा पीढ़ी को नवीनतम तकनीकों से अवगत कराने के साथ–साथ उनमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण, नवाचार की भावना तथा अनुसंधान के प्रति रुचि विकसित की जा सकती है। विभागाध्यक्ष डॉ. विनय कुमार ने कार्यक्रम के महत्व से सभी को परिचित कराया। कार्यक्रम संयोजक डॉ. सरिता शर्मा रही। विशिष्ट अतिथियों और निर्णायक मंडल में डॉ. जुल्फिकार और डॉ. शिवानी ने प्रतिभागियों के प्रदर्शन का मूल्यांकन किया और उनका उत्साह बढ़ाया। अंकुर कुमार के नेतृत्व में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह के दौरान विज. ेताओं को पुरस्कृत किया गया।

अवैध खनन रोकने को ड्रोन व डीजीपीएस से मैपिंग शुरू

नेटवर्क ध्वस्त करने के लिये जिला प्रशासन ने लिया अत्याधुनिक तकनीक का सहारा, कमेटी भी बनाई

शाह टाइम्स ब्यूरो

सहारनपुर। अवैध खनन रो. कने के लिये ड्रोन और डीजीपीएस तकनीक से खनन क्षेत्रों की डिजिटल मैपिंग शुरू की गई। अवैध खनन के नेटवर्क को ध्वस्त करने और खनन कार्यों में पूर्ण पारदर्शिता लाने के लिए जिला प्रशासन ने अब अत्याधुनिक तकनीक का सहारा लिया है।

जिलाधिकारी के सख्त आद. शों के बाद जिले के प्रमुख खनन क्षेत्रों में ड्रोन और डीजीपीएस मशीनों के जरिए व्यापक सर्वे और पुनर्गठन की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व की अध्यक्षता में एक उच्च स्तरीय सब-डिविजनल कमेटी का गठन किया गया है। इस कमेटी की विशेषता यह है कि

इसमें राजस्व, वन, सिंचाई, खनन और प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड जैसे महत्वपूर्ण विभागों के अधिकारियों को एक साथ लाया गया है, ताकि जांच में कोई भी पहलू छूट न जाए। कम्पनी द्वारा नियम-23 के तहत चिन्हित किए गए पांच वर्षीय खनन पट्टों पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। सर्वे के दायरे में आने वाले मुख्य क्षेत्र डिक्काकलां, बरथा कोरसी, असलमपुर बरथा, नुनियारी, हैदरपुर, हिन्दुवाला शामिल हैं। प्रशासन इस बार केवल कागजी कार्यवाही तक सीमित नहीं है। री-प्लेनिशमेंट (पुनः पूर्ति) अध्ययन के माध्यम से यह पता लगाया जा रहा है कि नदियों में कितना खनिज उपलब्ध है और कितना निकाला जा सकता है। इससे पूरे क्षेत्र की वास्तविक भौगोलिक स्थिति और खनन की गहराई का सटीक डेटा प्राप्त हो रहा है। इस तकनीक से खनन पट्टों की सीमाओं का डिजिटल निर्धारण किया जा रहा है, जिससे पट्टा धारक अपनी तय सीमा से बाहर जाकर खनन न कर सकें।यह पूरी कवायद भारत सरकार के पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (2020) की गाइडलाइंस के साथ-साथ उच्चतम न्यायालय और राष्ट्रीय हरित अधिकरण के निर्देशों के तहत की जा रही है।

इसका मुख्य उद्देश्य खनन के साथ-साथ शिवालिक की पहाड़ियों और नदियों के पारिस्थितिक तंत्र को बचाए रखना है। जांच के दौरान टीम ने विभिन्न स्थलों के फोटोग्राफ लिए और मौके पर ही रिपोर्ट तैयार की। इस महत्वपूर्ण कमेटी में डॉ. नवीन कुमार दास (अपर निदेशक, भूतत्व एवं खनिकर्म), शुभम सिंह (प्रभागीय निदेशक, सामाजिक वानिकी), विपुल सिंघल (वनाधिकारी, शिवालिक) और बेहट, सदर व नकुड़ के उपजिलाधिकारी सहित अन्य विशेषज्ञ शामिल रहे।

ऐतिहासिक होगी जयंत की जनसभा: चौ.नीरपाल

शाह टाइम्स ब्यूरो

सहारनपुर। राष्ट्रीय लोकदल खेल प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय अध्यक्ष पूर्व राज्यमंत्री चौ नीरपाल सिंह ने कहा कि दो मई को जयंत चौधरी की होने वाली जनसभा ऐतिहा सिक होगी।

चौ.नीरपाल सिंह जयंत चौधरी के आगमन की तैयारियों के संबंध में भुल्लन सिंह के आवास पर किसानों से संवाद कर रहे थे। उन्होंने कहा कि 2 मई को गुरुकुल नारसन के गांव हरजौली जट्ट में किसानों के महान नेता पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न चौधरी चरण सिंह की मूर्ति का अनावरण करने के लिए केंद्रीय मंत्री जयंत चौधरी आ रहे है। मूर्ति अनावरण के अवसर पर जयंत चौधरी विशाल जनसभा को संबोधित करेंगे। अपने नेता के ओजस्वी विचार सुनने के लिए अधिक से अधिक संख्या में पहुंचकर कार्यक्रम को सफल बनाएं अपने नेता का जबरदस्त स्वागत करे। उन्होंने कहा कि उत्तराखंड में राष्ट्रीय लो. कदल को संजीवनी देने के लिए और राष्ट्रीय लोकदल को मजबूत करने के लिए आ रहे है।

इस अवसर पर वरिष्ठ नेता मुकेश चौधरी, राजवीर ढाका,सोनू कुमार, रहमान, सुहेल, दीपचंद, विवेक उपस्थित रहें।

बैंड मास्टर की मौत

गंगोह। रिश्तेदार की मौत की सूचना पर वहां ट्रेन द्वारा दुख व्यक्त करने जा रहे एक बैंड मास्टर की उसकी चपेट में आने से मौत हो गई। परिजनों ने देर रात शव को लाकर उसे सुपुर्द-ए-खाक कर दिया।

मृतक बैंड मास्टर के बेटे मुनव्वर ने बताया कि उनके पिता 65 वर्षीय मोहम्मद इरशाद शुक्रवार को देवबंद रिश्तेदारी में गए हुए थे। शनिवार को खतौली निवासी एक रिश्तेदार की मौत हो गई। सूचना मिलने पर इरशाद देव. बंद से ही ट्रेन द्वारा खतौली जाने के लिए बैठ गए। खतौली में न उतर पाने के कारण वह अगले किसी स्टेशन पर उतर रहे थे, लेकिन अचानक वह नीचे गिर कर ट्रेन की चपेट में आ गए जिससे मौके पर ही मौत हो गई।

चौ. मांगेराम ने लगाई चौपाल

शाह टाइम्स संवाददाता

नागल। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मन की बात सुनने को लेकर गांव सीडकी स्थित एक कृषि फार्म पर एक चौपाल का आयोजन किया गया जिसमे जिला पंचायत अध्यक्ष मांगेराम चौधरी सहित क्षेत्र के गणमान्य नागरिक शामिल रहे।

इस अवसर पर उपस्थित नागरिकों ने प्रधानमंत्री की मन की बात को ध्यान से सुना। जिला पंचायत अध्यक्ष ने उपस्थित ग्रामीणों से कहा कि वे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के उस आह्वान पर अमल करे जिसमे उन्होने किसानों से गैर परम्परागत उर्जा का उत्पादन करे। कृषि उत्पादन के साथ साथ बांस का उत्पादन भी करे क्योंकि आज के समय मे बांस व इससे निर्मित वस्तुओं का वैश्विक बाजार बढ रहा है।

इस अवसर पर मुख्य रूप से पपिन चौधरी,सतेंद्र वैदिक, सुनील चौधरी, इन्द्र सिंह मलिक, मेमपाल, जयवीर राणा, इसरार, अमित आर्य, इसमपाल नंबरदार, संजील आर्य, सुनीता आर्य, रवि चौधरी, रचना आर्य, रंजीता चौधरी, सत्यम चौधरी आदि ग्रामीण उपस्थित रहे।

शासन के निर्देशों का पालन करें: डा.प्रवीण

शाह टाइम्स ब्यूरो

सहारनपुर। आई.एम.ए. अध्यक्ष डा.प्रवीण शर्मा ने कहा कि सभी चिकित्सक अपने हॉस्पिटल में फायर से संबंधित शासन के निर्देशों का पालन अवश्य कराये।

डा.प्रवीण शर्मा जी.पी.ओ. रोड स्थित होटल के सभागार में आईएमए की मासिक वैज्ञानिक गोष्ठी को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि शासन के निर्देशों का पालन करना हमारे और मरीज दोनों के हित में है। गाजियाबाद से आए डॉ राजेश ने कहा कि यदि किसी मरीज का लीवर पूरी तरह से खराब हो जाए तो उसका ईलाज लीवर ट्रांसप्लांटेशन ही है,क्योंकि ऐसी स्थिती मे कोई दवाई काम

नही करती है। डॉ ख्याति भाटिया ने बताया कि अब गले के कैंसर से कठिन कैंसर की सर्जरी भी कार्वन डाई आक्साइड लेजर तथा ट्रान्सरोबोटिक सर्जरी के द्वारा आसानी से की जा सकती है। इन सर्जरी मे ब्लीडिंग कम होती है तथा मरीज को अस्पताल मे कम समय के लिए रुकना पडता है।

सचिव डॉ नीरज आर्य ने सभी चिकित्सकों का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन वैज्ञानिक सचिव डॉक्टर कलीम अहमद के द्वारा किया गया।

गोष्ठी में डा. अनुपम मलिक कोषाध्यक्ष, डा. मोहन सिंह, डा. मनदीप सिंह, डा. डी.के. गुप्ता, डा. नरेश नौसरान, डा. महेश ग्रोवर, डा. महेश चन्द्रा, डा. विकास अग्रवाल, डा. रेणु शर्मा, डा. साक्षी मलिक, डा. ननीता चन्द्रा, डा. संजय यादव, डा. संदीप गर्ग, डा.अनिल मलिक, डा. सुधीर अग्रवाल, डा. संजीव अग्रवाल, डा. रजनीश सिंघल, डा. राहुल सिंह, डा. शशिकांत, डा. रविकांत, डा. वी. एस.पुण्डीर, डा. अतुल जैन, डा. प्रशान्त खन्ना, डा. आर.एस.पंवार, डा. विक्रांत मेहदीरत्ता, डा. राज खन्ना, डा. विजय अग्रवाल, डा. सत्यानंद साथी आदि चिकित्सक मुख्य रूप से उपस्थित थे।

मेगा कैंप में हजारों उपभोक्ताओं की समस्याओं का निस्तारण

शाह टाइम्स ब्यूरो

सहारनपुर। विद्युत उपकेंद्र घंटाघर परिसर में विद्युत सेवा महा अभियान' के अंतर्गत आयोजित मेगा कैंप के दूसरे दिन बड़ी संख्या में उपभोक्ताओं ने समस्याओं का समाधान कराया।

कैंप के दौरान 41 स्मार्ट प्रीपेड मीटरों के बिलों में संशोधन किया गया, जबकि 276 स्मार्ट मीटर ऐप से संबंधित समस्याओं का समाधान किया गया। इसके अलावा 190 उपभोक्ताओं के स्मार्ट मीटर डिस्कनेक्शन व री-कनेक्शन के कार्य भी मौके पर ही संपन्न किए गए। 181 उपभोक्ताओं के मोबाइल नंबर अपडेट किए गए, वहीं 111 उपभोक्ताओं के संयोजन की भार वृद्धि कर उनकी शिकायतों का त्वरित समाधान किया गया। इस अवसर पर विभागीय अधिकारियों ने उपभोक्ताओं को स्मार्ट प्रीपेड मीटर और स्मार्ट मीटर ऐप के लाभों के बारे में भी जागरूक किया। अधिकारियों का कहना है कि इस तरह के कैंपों से उपभोक्ताओं को राहत मिलती है और उनकी समस्याओं का तेजी से समाधान संभव हो पाता है। संच. ालन अधिशासी अभियंता संजीव कुमार विद्युत नगरीय वितरण खंड वाणिज्य-द्वितीय के निर्देशन में किया गया।

धूमधाम से निकाली श्री खाटू श्याम पालकी

शाह टाइम्स ब्यूरो

सहारनपुर। राधा विहार स्थित चमत्कारी श्री खाटू श्याम मंदिर वार्षिकोत्सव उपलक्ष में खाटू श्याम पालकी नगर यात्रा पैरामाउंट टाउनशिप कॉलोनी से शुभारंभ अवसर पर स्वामी कालेंद्रानंद जी महाराज ने कहा खाटू श्याम जन-जन का कल्याण करने वाली जागृत देव हैं।

श्री रामकृष्ण विवेकानंद संस्थान के तत्वाधान में आयोजित चमत्कारी श्री खाटू श्याम मंदिर राधा विहार से वार्षिक उत्सव उपलक्ष में दिल्ली रोड पैरामाउंट टाउनशिप से प्रारंभ हुई। बाबा खाटू श्याम की छवि स्वर्ण पालकी में विराजित हुई और सभी ने पुष्पों

की वर्षा की। पालकी दिल्ली रोड न्यू आवास विकास संजीव चौधरी के निवास पर पूजन हुआ जहां गुलाब के फूलों से बाबा का भव्य स्वागत किया गया, स्टेट बैंक कॉलोनी होते हुए बलिया खेड़ी ब्लाक विजय विहार सुभाष सैनी बीडीओ के निवास पर पूजन हुआ, हसनपुर चुंगी होते हुए राजीरी गार्डन में भूपेंद्र सिंह पुंडीर के यहां बाबा श्याम की पालकी को विश्राम दिया गया। खाटू श्याम की महिमा का वर्णन करते हुए स्वामी कालेंद्रानंद महाराज ने कहा खाटू श्याम पालकी नगर यात्रा धार्मिक जागृति एवं भक्ति भाव को प्रकट करने के लिए नगर के साथ-साथ गांव में भी निकाली जा रही है महाराज श्री ने बताया इसका उद्देश्य यह है सभी के मनोभाव में श्याम बाबा के निस्वार्थ समर्पण एवं सेवा एवं निस्वार्थ दान का भाव जागृत हो।

इस अवसर पर राजेंद्र धीमान संजय राणा अनिल नारंग सनी का मौज उपेंद्र चौधरी अंशुल शांडिल्य सुभाष सैनी जॉनी सैनी दिग्विजय सिंह पुंडीर प्रेमवती शर्मा उमा चौधरी शिवानी सैनी संगीता पुंडीर लोकेश त्यागी कोमल सैनी जगनिता चौधरी कुसुम शर्मा आदि मौजूद रहे।

दहेज उत्पीडन का लगाया आरोप

चिलकाना। क्षेत्र के गांव निवासी एक महिला ने अपने ससुरालियों पर दहेज उत्पीड़न का आरोप लगाया है। वहीं महिला के ससुर ने इन सभी आरोपों को मिथ्या बताते हुए नकारा है।

माहेश्वरी कलां निवासी महिला अंजुम पत्नी जाहिद ने थाना पर तहरीर देते हुए बताया कि उसकी शादी लगभग छह वर्ष पूर्व ग्राम माहेश्वरी कलां निवासी जाहिद के साथ हुई थी। मायके वालों ने कार के अलावा घर में इस्तेमाल होने वाला सभी सामान दिया था। आरोप है कि पीड़िता की नन्द व सास दहेज से खुश नहीं हैं। जो कम दहेज लाने का ताना मारते हुए मारपीट करती रहती हैं और मायके से कार लेकर आने की मांग करती रहती हैं। पीड़िता ने उसकी जान माल की सुरक्षा करते हुए कानूनी कार्यवाही किये जाने की गुहार लगाई है।

वहीं महिला के ससुर ने सभी आरोपों को नकारते हुए बताया कि उसने अपने दो बेटों की शादी कर रखी है, जो कि अपनी पत्नियों के साथ अलग रहते हैं। जबकि उसकी दो जवान बेटियां घर में बैठी हैं, उसका हाल ही में ऑपरेशन हुआ है। दोनो बेटों द्वारा घर में कोई भी सहयोग राशि नहीं दी जाती। जिस कारण वह अपने बेटों व उनकी पत्नियों को अपनी चल अचल संपत्ति से बेदखल कर रहा है तथा प्रतिक्रिया चल रही है। इसी बोखलाहट में बेटे की पत्नी ने मनगढ़त आरोप लगाया है।

खेड़ी शिकोहपुर सड़क निर्माण की खुली पोल

शाह टाइम्स संवाददाता

छटमलपुर। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत छटमलपुर से खेड़ी शिकोहपुर तक बनाई जा रही नई सड़क फिलहाल विकास की जगह भ्रष्टाचार का प्रतीक बनकर रह गई है।

पिछले दो महीनों से जारी निर्माण कार्य अभी पूरा भी नहीं हुआ है कि सड़क ने दम तोड़ना शुरू कर दिया है। सड़क की बदहाली का आलम यह है कि बिछाई गई बजरी अब जगह-जगह से उखड़ने लगी है और किनारे की पटरियों में मजबूत सामग्री के बजाय केवल कींचड़ व रेतीली मिट्टी डालकर खानापूर्ति की जा रही है.

ग्रामीणों में इस घटिया निर्माण को लेकर गहरा आक्रोश है।अलावलपुर निवासी निशु कुमार का कहना है कि यह सड़क पूरी तरह से अधिकारियों और ठेकेदारों की मिलीभगत और बंदरबांट की भेंट चढ़ गई है। उन्होंने बताया कि

कई बार शिकायतें की जा चुकी हैं, लेकिन साठगांठ के चलते विभागीय अधिकारी कोई भी ठोस कार्रवाई करने को तैयार नहीं हैं। वहीं, खेड़ी शिकोहपुर के निवासी तालिब ने अपना दुख जताते हुए कहा कि तीस सालों के इंतजार के बाद मिली यह सड़क इतनी खराब बनाई गई है कि अभी पूरी तरह बनी भी नहीं कि टूटने लगी है।

इस मामले में जब विभागीय अधिकारियों से सवाल किया गया, तो वे अपने चिर-परिचित अंदाज में गोलमोल जवाब देकर पल्ला झाड़ते नजर आए। वहीं, जब इस बारे में विभाग के चीफ से संपर्क साधने की कोशिश की गई, तो रविवार को अवकाश होने के कारण पक्ष नहीं मिल सका। ग्रामीणों ने अब मीडिया के जरिए उच्चाधिकारियों से गुहार लगाई है, ताकि इस प्रशासनिक लापरवाही और भ्रष्टाचार की जांच हो सके और उन्हें एक सुरक्षित सड़क नसीब हो सके।

30 यूनिट रक्तदान

गंगोह। जयहिंद समाजिक संस्था द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में 30 रक्तवीरों ने रक्तदान किया।

शिव चौक स्थित पंचायती धर्मशाला रामलीला भवन में आयोजित रक्तदान शिविर का शुभारंभ संस्था के अध्यक्ष दिनेश सैनी, सचिव आदित्य शर्मा, कोषाध्यक्ष दानिश ने मां सरस्वती के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित कर किया। हिन्दू राष्ट्रीय इंटर कालेज के पूर्व प्रधानाचार्य अनिल मित्तल ने रक्तदान को महादान बताते हुए कहा कि इससे किसी की जान को बचाया जा सकता है। इस कार्य में लगे लोग भाग्य शाली होते हैं कि उन्हें सेवा का अवसर मिल रहा है। शिविर में 30 लोगों द्वारा ही रक्तदान किया।

सब रजिस्ट्रार कार्यालय नई तहसील में शिफ्ट

शाह टाइम्स संवाददाता

रामपुर मनिहारान। अधिवक्ताओं और आम जनता की लंबे समय से चली आ रही मांग को पूरा करते हुए सब रजिस्ट्रार कार्यालय नई तहसील भवन में शिफ्ट कर दिया गया है। इससे आम जनता को बड़ी राहत मिलेगी।

गौरतलब है कि सब रजिस्ट्रार कार्यालय अस्थाई तहसील मंडी समिति के पुराने परिसर में होने के कारण लोगों को भारी परेशानियों और भागदौड़ का सामना करना पड़ता था।इस कार्यालय को नई बिल्डिंग में स्थानांतरित कराने के लिए तहसील बार एसोसिएशन द्वारा लगातार मांग की जा रही थी।रविवार को अवकाश होने के बावजूद अधिवक्ताओं की उपस्थिति में नई तहसील बिल्डिंग में सब रजिस्ट्रार कार्यालय का विधिवत हवन-पूजन संपन्न हुआ अधिवक्ताओं ने प्रशासन के इस फैसले का स्वागत किया। सब रजिस्ट्रार कार्यालय नई तहसील में शिफ्ट होने से आम जनता को इधर उधर भागदौड़ नहीं करनी पड़ेगी।

शिविर में व्यापारियों ने किया रक्तदान

सहारनपुर। नेहरू मार्केट व्यापार मंडल के तत्वाधान में एफबीडी संस्था के सहयोग से आयोजित रक्तदान शिविर में भारी संख्या में व्यापारियों ने रक्तदान किया।

महानगर के जुबली पार्क में आयोजित शिविर का उद्घाटन व्यापार मंडल के अध्यक्ष अभिषेक चावला, चेयरमैन विजय चावला, संयोजक अनिल गुप्ता, महामंत्री विजय कुमार एवं संरक्षक मास्टर भाई एहसान द्वारा फीता काटकर विधिवत रूप से किया गया। रक्तदान शिविर के संयोजक विशाल लूथरा, सरदार गगनदीप सिंह, सरदार परविंदर सिंह एवं कोषाध्यक्ष अमित गुलाटी ने कार्यक्रम को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कार्यक्रम का संचालन विजय शर्मा एवं रोहित गुलाटी की देखरेख में किया गया। इस अवसर पर नेहरू मार्केट के अनेक व्यापारियों ने रक्तदान कर मानव सेवा के इस पुनीत कार्य में अपनी भागीदारी सुनिश्चित की। साथ ही, व्यवस्था में भी सक्रिय सहयोग देकर कार्यक्रम को सफल बनाने में योगदान दिया। रक्तदान शिविर में उत्साहपूर्ण भागीदारी ने समाज में सेवा और सहयोग की भावना को और मजबूत करने का संदेश दिया।

पेंशन को आयकर मुक्त करे सरकार: अविनाश

शाह टाइम्स ब्यूरो

सहारनपुर। भारत पेंशनर्स समाज के अविनाश राजपूत ने कहा कि पेंशनर्स के हित में पेंशन को पूर्णत आयकर मुक्त किया जाये।

अविनाश राजपूत आज रेलवे पेंशनर्स समाज के 13 वें वार्षिक सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने सरकार से सभी कर्मचारियों के लिए पुरानी पेंशन योजना लागू करने, कोरोना काल में रोके गए महंगाई भत्ता को प्रदान करने, वित्त अधिनियम 2025 में संशोधन करने, सेवानिवृत्ति की तिथि के आधार पर आठवें वेतन आयोग का लाभ देने के विभेदकारी प्रावधान को समाप्त करने, पेंशनर्स की बढ़ती उम्र एवं उनके खर्चों को देखते हुए

अतिरिक्त पेंशन 80 वर्ष की उम्र के स्थान पर 65 वर्ष की उम्र से प्रदान करने आदि की मांग की।

अखिल भारतीय सीनियर सिटीजन वेलफेयर सोसाइटी संस्थापक एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष के एल अरोड़ा ने कहा कि बुजुर्ग सिर्फ बीते हुए समय की यादें नहीं, बल्कि जीवन के अनुभवों की ऐसी किताब है, जो हमें आज सही राह दिखाते हैं। एडीएमओ डॉ गौरव शर्मा ने वरिष्ठ नागरिकों को स्वस्थ रहने के टिप्स दिए। संस्थापक आर सी शर्मा ने संस्था के गठन 2013 से अब तक 13 वर्ष की गतिविधिओं एवं उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। अध्यक्ष जे एन शर्मा ने अतिथियों एवं प्रतिनिधिओं का स्वागत किया। महामंत्री एन एस चौहान ने वर्ष 2025- 2026 की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। आर के धीगड़ा ने वर्ष 2025-2026 का वित्त विवरण प्रस्तुत किया। संचालन मूल चंद रंगड़ा ने किया।

मनोनीत चुनाव अधिकारी प्रकाश चंद ने संस्था की वर्ष 2026- 2027 के लिए चयनित प्रबंध कार्य कारिणी समिति की घोषणा की। जिसमे संस्थापक रमेश चंद शर्मा, अध्यक्ष जय नारायण शर्मा, महामंत्री नरेंद्र सिंह चौहान, कोषाध्यक्ष राम प्रकाश शर्मा, उपाध्यक्ष जगदीश प्रकाश शर्मा, मूलचंद रांगड़ा, स्वतंत्र भारद्वाज, विनोद त्यागी, इकबाल अजीम, मंत्री देवेंद्र कुमार, अमरनाथ त्यागी, विजय त्यागी, इंद्रजीत कुमार, निसार अहमद, सह कोषाध्यक्ष विजय तलवार, ऑडिटर संजीव छाबड़ा, सरक्षक राज कुमार धीगड़ा, अरविंद शर्मा, अशोक शर्मा, अजय शर्मा, जवाहर सिंह, अजीत राणा, मीना कटारिया, प्रदीप गिलोत्रा, जय देव सिंह, अमरनाथ, सदस्य-विजेंद्र कुमार शर्मा, हरीश चंद्र राम, बलजीत जायसवाल एवं वेद प्रकाश को घोषित किया गया।

सम्मेलन में बीपीएस उपाध्यक्ष हंसराज माही, अविनाशी गुप्ता, वरुण देव मिश्रा, कुलदीप सिंह,ए एस धारिया, स्टेशन मैनेजर अनिल त्यागी, सीडब्ल्यूआई अरुन कुमार, फार्मासिस्ट निखिल कुमार, अनुपम महाजन विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद रहे।

कदम ताल मिलाकर निकलीं महिला जवान, दिया नारी सशक्तीकरण का आदेश

पुलिस लाइन में हुई दीक्षांत परेड, महिलाओं ने दिखाया जज्बा

शाह टाइम्स संवाददाता

रामपुर। आखिरकार वह दिन आ ही गई जिसका सभी को इंतजार रहता हैं। पासिंग आउट परेड यह ऐसी परेड है जिसका सपना हर खाकी वाले के लिए होता है। आज वह दिन था जिसका सभी को इंतजार रहता है। कई माह से प्रशिक्षण हासिल कर रही महिला रिक्रूटष्स का आज प्रशिक्षण पूरा हो गया। इसी के तहत पुलिस लाइन में पासिंग आउट परेड का आयोजन किया गया। परेड की सलामी संयुक्त पुलिस आयुक्त कमिश्नरेट लखनऊ अपर्णा कूमार ने लीष्

पुलिस लाइन्स जनपद रामपुर में 21.07.2025 से प्रचलित महिला प्रशिक्षु नागरिक पुलिस का आधारभूत प्रशिक्षण में 590 प्रशिक्षुओं को गहन प्रशिक्षण प्रदान किये जाने के उपरान्त आज दिनांक 26 अप्रैल को रिजर्व पुलिस लाइन, जनपद रामपुर के प्रांगण में 'दीक्षांत परेड समारोह 2025-26श का अत्यंत गरिमामय और

भव्य आयोजन संपन्न हुआ। इस गौरवशाली अवसर पर रिक्रूट महिला आरक्षियों ने अपने कठिन प्रशिक्षण के उपरांत शानदार परेड का प्रदर्शन किया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि अपर्णा कुमार संयुक्त पुलिस आयुक्त, कमिश्नरेट लखनऊ रहीं। मुख्य अतिथि द्वारा परेड की सुसज्जित टोलियों का निरीक्षण किया और उनके द्वारा दी गई सलामी स्वीकार की।

मुख्यमंत्री जी का संबोधन एवं सजीव प्रसारण

समारोह के दौरान माननीय मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश, योगी आदित्यनाथ जी के संबोधन का सजीव प्रसारण किया गया। रिक्रूट महिला आरक्षियों ने मुख्यमंत्री जी के संदेश को ध्यानपूर्वक सुना, जिसमें उन्होंने पुलिस बल को आधुनिक, संवेदनशील और अपराध के प्रति सख्त होने का आह्वान किया।

पद एवं गोपनीयता की शपथ:-

समारोह के अंतिम चरण में सभी रिक्रूट महिला आरक्षियों को देश की सेवा, संविधान के प्रति निष्ठा और जनसुरक्षा की पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई गई।

प्रशिक्षण विवरण एवं उत्कृष्ट सम्मान

इस अवसर पर प्रशिक्षण के अन्त: कक्ष व बाहय विषय की विभिन्न परीक्षाओं में उत्तीर्ण प्रशिक्षुओं को पुरूस्कृत किया गया। बाहय विषय के योग में प्रथम कैडेट नं0-472 रेणूका रानी, अन्त: विषय के योग में प्रथम कैडेट नं0-19 अजंली चतुर्वेदी एवं सर्वांग सर्वोतम कैडेट नं0-392 शिवानी तथा परेड कमाण्डर प्रथम कैडेट नं0-41 आस्था, परेड कमाण्डर द्वितीय कैडेट नं0-351 शारदा पाण्डेय, परेड कमाण्डर तृतीय कैडेट नं0-151 कंचन तथा सर्वश्रेष्ट प्रशिक्षक अध्यापक निरीक्षक हरेन्द्र सिंह, आईटीआई आरक्षी ब्रजेश कुमार, पीटीआई जगराम सिंह, आरटीसी मेजर, आईटीआई पवन कुमार व उद्घोषक सुहैल खान को भी पुरस्कृत किया गया।

शपथ ग्रहण के उपरांत टोलियों ने गौरवपूर्ण तरीके से प्रस्थान किया।

पिता के निधन के बाद भी आस्था ने निभाया कर्तव्य

शाह टाइम्स संवाददाता

रामपुर। पुलिस लाइन्स में दीक्षांत परेड समारोह 2025-26 का आयोजन किया गया। इस समारोह में परेड कमांडर आस्था ने अपने पिता के निधन के दो दिन बाद भी कर्तव्य का पालन किया। उन्होंने व्यक्तिगत दुख को पीछे छोड़ते हुए परेड का नेतृत्व किया।

सहारनपुर जिले के ब्राह्मण मझरा गांव की निवासी आस्था के पिता राजवीर सिंह का 24 अप्रैल को निधन हो गया था। यह दीक्षांत परेड उनके पिता के निधन के महज दो दिन बाद आयोजित की गई। परेड के दौरान आस्था ने कमांडर के रूप में अपनी टुकड़ी का दृढ़ता से नेतृत्व किया। उन्होंने अपने पिता के सपने को पूरा करने के लिए इस कर्तव्य को निभाया। आस्था ने बताया कि उनके पिता मजदूरी करते थे और हमेशा चाहते थे कि उनकी बेटी वर्दी पहनकर देश की सेवा करे। आस्था ने अपने पिता के इस सपने को पूरा किया। परेड के दौरान आस्था ने कमांडर के रूप में

अपनी टुकड़ी का दृढ़ता से नेतृत्व किया। उन्होंने अपने पिता के सपने को पूरा करने के लिए इस कर्तव्य को निभाया। आस्था ने बताया कि उनके पिता मजदूरी करते थे और हमेशा चाहते थे कि उनकी बेटी वर्दी पहनकर देश की सेवा करे। आस्था ने अपने पिता के इस सपने को पूरा किया।

मसवासी में एचटी लाइन मे ब्रेकडाउन,नगर सहित क्षेत्र गांवों की बिजली घंटो रही गुल

शाह टाइम्स संवाददाता

मसवासी हाई टेंशन लाइन में ब्रेकडाउन होने से मसवासी नगर समेत आसपास के गांवों की बिजली आपूर्ति करीब दस घंटे तक बाधित रही। अचानक आपूर्ति ठप होने से क्षेत्रवासियों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ा। बताया जाता है कि रविवार को 33 हजार केबी लाइन में टांडा दढ़ीयाल के बीच तेज हवा के चलते पेड़ों की टहनियां एचटी लाइन से टकरा गईं। इससे लाइन में फाल्ट आ गया और बिजली आपूर्ति ठप हो गई।

इस दौरान मसवासी नगर के अलावा भूबरा, चाउपुरा, बिजार खाता, मानपुर उत्तरी, सीतारामपुर, खानपुर उत्तरी, रहमतगंज, पट्टी कला, करीमपुर, घोसीपुरा, कुंदनपुर, मुकुंदपुर, हसनपुर उत्तरी, मंस. रपुर, सेमरा लाडपुर, धर्मपुर उत्तरी, किशनपुर, मौलागढ़, शिकारपुर, शि. वनगर, बब्बरपुरी, लोहार, इनायत गंज, गागन नगली, खोद शरीफ, मजरा हसन समेत दर्जन भर गांवों की बिजली आपूर्ति प्रभावित रही। शाम करीब 6:30 बजे तक भी आपूर्ति बहाल नहीं हो सकी थी, जिससे लोगों में नाराजगी देखी गई। अवर अभियंता श्याम सिंह ने बताया कि फाल्ट को तलाशने के लिए लाइनमैन को हाई टेंशन लाइन पर पेट्रोलिंग के निर्देश दिए गए हैं। जल्द ही खराबी दूर कर बिजली आपूर्ति सुचारु कर दी जाएगी।

कार्यकाल बढ़ाने को लेकर प्रधानों ने मुख्यमंत्री को भेजा ज्ञापन

- जिलाध्यक्ष पर दर्ज मुकदमे के खिलाफ भी आवाज उठाई

शाह टाइम्स संवाददाता

रामपुर। राष्ट्रीय पंचायतीराज ग्राम प्रधान संगठन ने जिलाधिकारी के माध्यम से मुख्यमंत्री को भेजे ज्ञापन में कार्यकाल बढ़ाने की मांग की है। प्रधानों ने संगठन के जिलाध्यक्ष हरजीत सिंह पर दर्ज मुकदमे के खिलाफ भी आवाज उठाई है।

संगठन के प्रतिनिधिमंडल ने जिला उपाध्यक्ष काशिफ खां, चमरौआ ब्लॉक अध्यक्ष मनीष लोधी और सैदनगर ब्लॉक अध्यक्ष जवाब हुसैन के नेतृत्व में जिलाधिकारी कार्यालय पहुंचकर मुख्यमंत्री को संबोधित ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में कहा गया है कि उत्तर प्रदेश में पंचायत चुनाव आगे बढ़ाए जाने की संभावना व्यक्त की जा रही है, जिसको लेकर प्रदेश के सभी ग्राम प्रधान चिंतित हैं। वर्तमान ग्राम प्रधान लोकतांत्रितक प्रक्रिया के तहत निर्वाचित हुए हैं और ग्राम पंचायत के विकास को गति देने में लगातार सक्रिय हैं। वर्तमान प्रधान अपनी अपनी ग्राम पंचायतों में जनता से जुड़ी समस्याओं से भी परिचित हैं। प्रधान विकास कराने व समस्याओं के निस्तारण कार्य का भी अनुभव रखते हैं। ज्ञापन में मांग की गई है कि प्रधानों का कार्यकाल समाप्त होने पर ग्राम पंचायतों में प्रशासकों की नियुक्ति के बजाय वर्तमान ग्राम प्रधानों का ही कार्यकाल आगे बढ़ाया जाना चाहिए। पूर्व में प्रशासक नियुक्ति किए जाने की व्यवस्था सफल नहीं रही है। ग्राम प्रधान ही पूरी तरह से अपने कर्तव्यों के प्रति ईमानदार और जवाबदेह हैं। इसलिए मौजूदा प्रधानों का ही कार्यकाल बढ़ाया जाना उचित रहेगा।

प्रधानों के प्रतिनिधिमंडल ने पुलिस अधीक्षक को भी ज्ञापन दिया, जिसमें संगठन के जिलाध्यक्ष हरजीत सिंह पर दर्ज मुकदमे में निष्पक्ष कार्रवाई की मांग की गई है। प्रधानों ने जिलाध्यक्ष पर दर्ज मुकदमे को गलत बताया है।

जेईई (मेन) में सफलता: वृंदा चिरंजीव ने जेईई (एडवांस) के लिए किया क्वालीफाई

शाह टाइम्स संवाददाता

रामपुर। जिले की होनहार छात्रा वृंदा चिरंजीव ने देश की प्रतिष्ठित इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षा जेईई (मेन) में शानदार सफलता हासिल करते हुए 93.42 परसेंटाइल प्राप्त किए हैं। इस उपलब्धि के साथ ही उन्होंने आगामी 17 मई को आयोजित होने वाली जेईई (एडवांस) परीक्षा के लिए भी क्वालीफाई कर लिया है।

ज्ञात हो कि देश के सभी 21 आईआईटी तथा आईआईएससी बेंगलुरु में स्नातक स्तर के इंजीनियरिंग पाठ्यक्रमों में प्रवेश जेईई (एडवांस) के माध्यम से ही होता है। वृंदा की इस सफलता से परिवार और क्षेत्र में खुशी का माहौल है। वृंदा ने अपनी हाईस्कूल की

वृंदा चिरंजीव

शिक्षा सेंट मैरी स्कूल, रामपुर से प्राप्त की है, जबकि इंटरमीडिएट की परीक्षा इस वर्ष डायमंड पब्लिक स्कूल, मुरादाबाद से दी है, जिसका परिणाम शीघ्र घोषित होने की उम्मीद है।

उनके पिता चिरंजीव गुड्डू कंपोजिट स्कूल घाटमपुर में शिक्षक हैं, जबकि माता संगीता भाटिया गृहिणी हैं। परिवार में शिक्षा का माहौल पहले से ही रहा है। उनकी बड़ी बहन गौरी चिरंजीव ने वर्ष 2024 में जेईई (मेन) में सफलता प्राप्त की थी और वर्तमान में बेंगलुरु से कंप्यूटर साइंस में इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रही हैं। वृंदा की इस उपलब्धि पर उनके माता-पिता ने खुशी व्यक्त करते हुए बेटी को आगामी जेईई (एडवांस) परीक्षा के लिए शुभकामनाएं दी हैं।

रामपुर में मुख्यमंत्री आरोग्य मेले में 1168 मरीजों का हुआ उपचार, 234 बने गोल्ड कार्ड

शाह टाइम्स संवाददाता

रामपुर। जिले में आयोजित मुख्यमंत्री आरोग्य मेले के तहत स्वास्थ्य सेवाओं का व्यापक लाभ लोगों को मिला। जनपद के कुल 38 पीएचसी/यूपीएचसी केंद्रों पर 38 कैंप लगाए गए, जिनमें 44 डॉक्टरों और 197 पैरामेडिकल स्टाफ ने सेवाएं दीं।

मेले में कुल 1168 मरीजों का उपचार किया गया, जिसमें 479 पुरुष, 537 महिलाएं और 152 बच्चे शामिल रहे। इस दौरान 234 आयुष्मान गोल्ड कार्ड बनाए गए, जबकि 47 लोगों की आभा आईडी भी जनरेट की गई। स्वास्थ्य जांच के दौरान 122 बुखार के मरीज, 109 गैस्ट्रो, 106 डायबिटीज, 262 त्वचा रोग, 74 हाईपरटेंशन, 19 लीवर से संबंधित और 36 टीबी संदिग्ध मरीज चिन्हित किए गए। इसके अलावा 14 एनीमिया और 12 नेत्र परीक्षण के केस भी सामने आए।

मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य सेवाओं के तहत 173 एएनसी जांच की गईं, जबकि 4 कुपोषित बच्चों की पहचान की गई। 15 मरीजों को बेहतर उपचार के लिए रेफर किया गया, जिनमें 8 को जनरल सर्जरी के लिए भेजा गया। सीएमओ डॉ. दीपा सिंह ने बताया कि मुख्यमंत्री आरोग्य मेला का उद्देश्य ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में लोगों को नि:शुल्क एवं सुलभ स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करना है, जिससे गंभीर बीमा. रियों की समय रहते पहचान और इलाज संभव हो सके।

एक अदद नाजायज तमंचे में साथ अभियुक्त गिरफ्तार

शाह टाइम्स संवाददाता

स्वार। रविवार पुलिस ने गश्त व चेकिंग के दौरान मुखबिर की सूचना पर कार्यवाही करते हुए अभियुक्त फुरकान पुत्र गफ्फार निवासी नरपत नगर को निकट बाल्मीकि मोहल्ला शेखू पुरा नरपत नगर जाने वाले तिराहे के पास एक अदद नाजायज तमंचा315 बोर 01 जिंदा कारतूस के साथ गिरफ्तार कर सम्बंधित मुकदमे में विविध कार्यवाही की गई ।पुलिस अधीक्षक के आदेश पर शनिवार की रात्रि कोतवाली प्रभारी के निर्देश पर पुलिस द्वारा अपराधियों की धरपकड़ को लेकर चलाए गए अभियान के अंतर्गत पुलिस ने कार्यवाही की गिरफ्तार करने वाली टीम मेंउ0नि0मनोज कुमार मिश्र,है0का0 गुलाब सिंह,संदीप कुमार, अमित कुमार,विपिन सिरोही आदि मौजूद रहे।

परिवार परामर्श केंद्र में टूटते घरों को बचाया

शाह टाइम्स संवाददाता

रामपुर। महिला थाने में शनिवार को परिवार परामर्श केंद्र का आयोजन किया गया। जिसमें टूटते घरों को बचाया गया। पति-पत्नी के बीच हुए आपसी विवादों को निपटाया गया।

टूटते घरों को बचाने के लिए शासन के आदेश पर हर शनिवार को महिला परामर्श केंद्र का आयोजन किया जाता है। जिसके तहत पति-पत्नी के बीच हुए आपसी विवाद या फिर छोटे-मोटे विवादों का निस्तारण किया जाता है। इसी के तहत आज महिला थाने में परिवार परामर्श केंद्र का आयोजन किया गया। जिसमें कुल 24 प्रकरण आएं। जिसमें 7 प्रार्थना पत्रों का मौके पर ही निस्तारण कर दिया गया। जबकि तीन पत्रावली निरस्त कर दी गई। इस दौरान काउन्सलर अवतार सिंह, डॉ. किसवर जहां, मीना सिंह, नीना साहनी आदि मौजूद रहे।

विधायक शफीक अहमद अंसारी ने किया रोडो का शिलान्यास

शाह टाइम्स संवाददाता

स्वार। शनिवार विधायक शफीक अहमद अंसारी ने अपनी विधानसभा 34 स्वार टांडा में स्वार से केलाखेड़ा को जाने वाला रास्ता जो उत्तराखंड को जाता है उस मार्ग का शिलान्यास किया इसके बाद वित्तीय वर्ष 2026 स्वार टांडा के जवाहर नगर टंडोला में जमना जमनी होते हुए सीतारामपुर मार्ग के निर्माण का शिलान्यास किया। हजारों की तादाद में जनता ने विधायक जी का ढोल नगाड़ों के साथ स्वागत किया। क्षेत्र की जनता में एक अलग ही खुशी देखने को मिली लोगों को आपस में बात करते हुए सुना।स लोग आपस में बोल रहे थे कि क्षेत्रीय विधायक होने के यही फायदे होते हैं क्षेत्रीय विधायक अपने क्षेत्र को भली भांति जनता है और क्षेत्र की समस्याओं से अवगत रहता है हमारे विधायक जी ने हमारी समस्याओं को देखते हुए यह सौगात हमें दी है हम समस्त क्षेत्रवासी विधायक जी का दिल से आभार व्यक्त करते हैं और हम समस्त क्षेत्रवासी विधायक जी से वादा करते की आने वाली 2027 में भी हम आपको ही अपना विधायक चुनेंगे क्योंकि आप हमारे अपने हो और हमारी परेशानियों को समझते हो। साथ में दीप गोयल प्रतिनिधि दीपक नागर सलाहकार महेंद्र मौर्य मुंशी राम प्रधान डॉली अमित सैनी अशोक रंधावा समी मंसूरी कीर्ति सिंह हरिओम मौर्य फतेह सिंह शिशुपाल सागर जयमल राम सोम सिंह फौजी चीनू परमार नाहिद खां इस्लाम मेंबर इस्लाम मूलला फैजान बल्ली जावेद मेवाती ठाकुर नूर हसन प्रधान शानू ,हबीब अहमद आदि मौजूद रहे।

हार्ट अटैक से नोडल अधिकारी डॉक्टर देवेश के पिता की मौत

शाह टाइम्स संवाददाता

रामपुर। सीएमओ कार्यालय पर तैनात नोडल अधिकारी देवेश चौधरी के पिता का हार्ट अटैक से निधन हो गया। इसकी जानक. ारी मिलने पर परिजनों में कोहराम मच गया। सीएमओ डॉ दीपा सिंह समेत अन्य अधिकारियों ने पहुंचकर उन्होंने पीड़ित परिवार को सांत्वना दी। मूलत: बिजनौर जिले के ग्राम नांगल जटट निवासी जगवीर सिंह के बेटे डॉ. देवेश चौधरी सीएमओ कार्यालय पर नोडल अधिकारी के पद पर तैनात हैं। उनका परिवार मौजूदा समय में रुद्रपुर में रहता है। बताते हैं कि देवेश चौधरी के पिता को आज हार्ट अटैक पड़ा। हालत बिगड़ने पर परिजन उनको लेकर अस्पताल पहुंचे, जहां पर डाक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। इसके बाद परिजनों में कोहराम मच गया। सूचना पर सीएमओ डा. दीपा सिंह, डॉक्टर संतोष, डॉक्टर सत्य प्रकाश डॉक्टर सत्यमूर्ति तोमर, डीसीपीएम प्रभात कुमार, डीपीएम अंकित शर्मा आदि भी मौके पर पहुंच गए। उन्होंने पीड़ित परिवार को सांत्वना देने के साथ ही परिजनों को ढ़ांढस बंधाया।

कार्यालयः नगर पालिका परिषद स्वार, जनपद-रामपुर ।

-: ई प्रोक्योरमेन्ट/ई-टेण्डरिंग निविदा सूचना :-

पत्रांकः 1/35/नं०पा०प०स्वार/ई-निविदा/2026 दिनांकः 25 अप्रैल 2026

नगर पालिका परिषद् स्वार, जनपद-रामपुर द्वारा विविध कार्यों हेतु ई-निविदा की वेबसाइट www.etender.up.nic.in पर दिये गये नियम व शर्तों के अनुसार निविदायें आमन्त्रित की जाती हैं। निविदा अभिलेख एवं शर्तों वेबसाइट www.etender.up.nic.in पर दिनांकः 27-04-2026 की प्रातः 10:00 बजे से 25-05-2026 के मध्यान्ह 12:00 बजे तक उपलब्ध रहेंगे। जहां से इन्हें डाउनलोड किया जा सकता है। सभी निविदादाता दिनांकः 25-05-2026 के मध्यान्हः 12:00 बजे तक वेबसाइट www.etender.up.nic.in पर ऑनलाइन अपनी निविदा दर/दरें डाल सकते हैं। टेण्डर एवं उससे सम्बन्धित शर्तें जिले की वेबसाइट www.goanda.nic.in पर भी देखी जा सकती हैं।

E-Tender Reference	Ltr. No-1/31/न०पा०प०स्वार/ई-निविदा/2026 दिनांकः 25 अप्रैल, 2026 Ltr. No-1/32/न०पा०प०स्वार/ई-निविदा/2026 दिनांक : 25 अप्रैल, 2026
Publish and Time for RFP	28-04-2026 को प्रातः 10:00 बजे
Last Date and time for submission of E-Tender	25-05-2026 को मध्यान्ह 12:00 बजे
Date and time of Opening Tender	25-05-2026 को अपरान्ह 02:00 बजे
Place of Opening of E-Tender	Office Nagar Palika Parishad Suar, Dist. Rampur
E-Tender Security	As per Nit & 10%
E-Tender Document Processing	As per Tender list.

(मो0 अमन) अवर अभियन्ता अभियन्ता
(अभिषेक कुमार) अधिशासी अधिकारी
(रेशमा परवीन) अध्यक्ष

शाहबाद में सड़क हादसे में युवती की मौत: मामा-भांजी घायल, रेफर

शाह टाइम्स संवाददाता

शाहबाद। कोतवाली क्षेत्र में शनिवार को एक सड़क हादसे में एक युवती की मौत हो गई। इस घटना में एक मासूम समेत दो लोग गंभीर रूप से घायल हो गए।मुरादाबाद के बिलारी स्थित रामनगर गंगपुर निवासी सखावत अपनी बहन आसमीन (22) और छह वर्षीय भांजी जूबी के साथ बरेली के आंवला स्थित बड़ा राजपुर गांव में एक शादी समारोह से लौट रहे थे। वे तीनों बाइक पर सवार थे।बताया गया कि जैसे ही उनकी बाइक शाहबाद कोतवाली क्षेत्र के गांव टांडा के पास पहुंची, एक तेज रफ्तार डंपर ने उसे जोरदार टक्कर मार दी।

कार्यालय नगर पंचायत मसवासी (रामपुर)

पत्रांक-069/न०प०म०/का०गौ०ए०वै०प०अ०यो०/2026-27 दिनांक- 25.04.2026

- ई-निविदा सूचना:-

नगर पंचायत मसवासी जनपद रामपुर द्वारा अनुभवी फर्मो/ठेकेदारों को सूचित किया जाता है कि कान्हा गौशाला/नगर निधि/रा०वि० से प्राप्त धनराशि के अन्तर्गत निर्माण/विकास कार्यों हेतु ई-निविदा दिनांक 11.05.2026 को दोपहर 12.00 बजे तक ई-प्रोक्योरमेन्ट की वेबसाईट http//:etender.up.nic.in पर ऑनलाईन के माध्यम से आमंत्रित की जाती है। निविदा से सम्बन्धित अन्य नियम व शर्तें तथा विस्तृत विवरण ई-प्रोक्योरमेन्ट की वेबसाईट http//:etender.up.nic.in पर है। निविदा में कोई भी संशोधन/परिमार्जन/परिवर्तन http//:etender.up.nic.in की बैवसाईट पर ही प्रकाशित किया जायेगा।

(आशुतोष सिंह) अधिशासी अधिकारी नगर पंचायत मसवासी (रामपुर)
(दिनेश कुमार गोयल) अध्यक्ष नगर पंचायत मसवासी (रामपुर)

कार्यकाल बढ़ाने को लेकर प्रधानों ने मुख्यमंत्री को भेजा ज्ञापन

- जिलाध्यक्ष पर दर्ज मुकदमे के खिलाफ भी आवाज उठाई

शाह टाइम्स संवाददाता

रामपुर। राष्ट्रीय पंचायतीराज ग्राम प्रधान संगठन ने जिलाधिकारी के माध्यम से मुख्यमंत्री को भेजे ज्ञापन में कार्यकाल बढ़ाने की मांग की है। प्रधानों ने संगठन के जिलाध्यक्ष हरजीत सिंह पर दर्ज मुकदमे के खिलाफ भी आवाज उठाई है।

संगठन के प्रतिनिधिमंडल ने जिला उपाध्यक्ष काशिफ खां, चमरौआ ब्लॉक अध्यक्ष मनीष लोधी और सैदनगर ब्लॉक अध्यक्ष जवाब हुसैन के नेतृत्व में जिलाधिकारी कार्यालय पहुंचकर मुख्यमंत्री को संबोधित ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में कहा गया है कि उत्तर प्रदेश में पंचायत चुनाव आगे बढ़ाए जाने की संभावना व्यक्त की जा रही है, जिसको लेकर प्रदेश के सभी ग्राम प्रधान चिंतित हैं। वर्तमान ग्राम प्रधान लोकतांत्रितक प्रक्रिया के तहत निर्वाचित हुए हैं और ग्राम पंचायत के

विकास को गति देने में लगातार सक्रिय हैं। वर्तमान प्रधान अपनी अपनी ग्राम पंचायतों में जनता से जुड़ी समस्याओं से भी परिचित हैं। प्रधान विकास कराने व समस्याओं के निस्तारण कार्य का भी अनुभव रखते हैं। ज्ञापन में मांग की गई है कि प्रधानों का कार्यकाल समाप्त होने पर ग्राम पंचायतों में प्रशासकों की नियुक्ति के बजाय वर्तमान ग्राम प्रधानों का ही कार्यकाल आगे बढ़ाया जाना चाहिए। पूर्व में प्रशासक नियुक्ति किए जाने की व्यवस्था सफल नहीं रही है। ग्राम प्रधान ही पूरी तरह से अपने कर्तव्यों के प्रति ईमानदार और जवाब. देह हैं। इसलिए मौजूदा प्रधानों का ही कार्यकाल बढ़ाया जाना उचित रहेगा। प्रधानों के प्रतिनिधिमंडल ने पुलिस अधीक्षक को भी ज्ञापन दिया, जिसमें संगठन के जिलाध्यक्ष हरजीत सिंह पर दर्ज मुकदमे में निष्पक्ष कार्रवाई की मांग की गई है। प्रधानों ने जिलाध्यक्ष पर दर्ज मुकदमे को गलत बताया है।

चेन्नई को हरा गुजरात ने चौथी जीत दर्ज की

गुजरात ने 16.4 ओवर में 159 रन का लक्ष्य पाया सुदर्शन की फिर 87 रनों की शानदार पारी

चेन्नई, वार्ता। कगिसो रबाडा (तीन विकेट) की अगुवाई में गेंदबाजों के बेहत. रीन प्रदर्शन के बाद साई सुदर्शन (87) के शानदार प्रदर्शन की बदौलत गुजरात टाइटंस ने रविवार को इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2026 के 37वें मुकाबले में चेन्नई सुपर किंग्स को 20 गेंदे शेष रहते आठ विकेट से शिकस्त दी।

गुजरात टाइटंस की यह टूर्नामेंट में चौथी जीत है। 159 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी गुजरात टाइटंस ने शानदार बल्लेबाजी का प्रदर्शन करते हुए 16.4 ओवरों में दो विकेट पर 162 रन बनाकर मुकाबला आठ विकेट से अपने नाम कर लिया। साई सुदर्शन और शुभमन गिल की जोड़ी ने संभल कर खेलते हुए पहले विकेट के लिए 58 रन जोड़े। सातवें ओवर में नूर अहमद ने शुभमन गिल को आउट कर इस साझेदारी को तोड़ा। गिल ने 23 गेंदों में एक चौका और तीन छक्के उड़ाते हुए 33 रनों की पारी खेली। 17वें ओवर में अकील हुसैन ने साई सुदर्शन को आउट कर पवेलियन भेज दिया। साई सुदर्शन ने 46 गें. दों में चार चौके और सात छक्के उड़ाते हुए 87 रनों की पारी खेली। जॉस बटलर ने नाबाद 39 रन बनाये। उन्होंने अपनी पारी में 30 गेंदों का सामना किया और चार चौके और एक छक्का लगाया। इससे पहले आज यहां ऋतुराज गायकवाड़ (नाबाद 74) की कप्तानी पारी के दम पर चेन्नई सुपर किंग्स ने रविवार को गुजरात टाइटंस के खिलाफ सात विकेट पर 158 रनों का स्कोर खड़ा किया।

गुजरात टाइटंस ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। बल्लेबाजी करने उतरी चेन्नई सुपर किंग्स की शुरुआत अच्छी नहीं रही और उसने महज 37 रन के स्कोर पर अपने चार विकेट गंवा दिए। संजू सैमसन (11), उर्विल पटेल (चार), सरफराज खान (शून्य) और डेवाल्ड ब्रेविस (दो) रन बनाकर आउट हुए। इसके बाद बल्लेबाजी करने आए शिवम दुबे ने कप्तान गायकवाड़ के साथ पारी को संभाला। दोनों बल्लेबाजों के बीच पांचवें विकेट के लिए 59 रनों की साझेदारी हुई। 16वें ओवर में अरशद खान ने शिव दुबे को बोल्ड कर इस साझेदारी को तोड़ा।

शिवम दुबे ने 17 गेंदों में तीन चौके और एक छक्का लगाते हुए 22 रन बनाये। 18वें ओवर कगिसो रबाड़ा ने कार्तिक शर्मा नौ गेंदों में 15 रन को आउट किया। जेमी ओवरटन ने छह गें. दों में 18 रन बनाये। उन्हें अरशद खान ने आउट किया। चेन्नई सुपर किंग्स ने निर्धारित 20 ओवरों में सात विकेट पर 158 रनों का स्कोर खड़ा किया। ऋतुराज गायकवाड़ ने 60 गेंदों में छह चौके और चार छक्के उड़ाते हुए नाबाद 74 रनों की पारी खेली। गुजरात टाइटंस की ओर से कगिसो रबाड़ा ने तीन विकेट लिए। अरशद खान को दो विकेट मिले।

भारतीय महिला टीम ने दक्षिण अफ्रीका को 14 रनों से हराया

जोहान्सबर्ग, वार्ता। दीप्ति शर्मा (नाबाद 36 रन/ पांच विकेट) के हरफनमौला प्रदर्शन की बदौलत भारतीय महिला टीम ने चौथे टी-20 मुकाबले में दक्षिण अफ्रीका को 14 रनों से शिकस्त दी। यह पांच मैचों की सीरीज में भारत की पहली जीत है। दीप्ति शर्मा को उनके शानदार प्रदर्शन के लिए 'प्लेयर ऑफ द मैच' का पुरस्कार मिला।

186 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी दक्षिण अफ्रीका की टीम को दीप्ति शर्मा के कहर का सामना करना पड़ा। दक्षिण अफ्रीका की टीम ने निर्धारित 20 ओवरों में नौ विकेट पर 171 रन ही बना सकी और 14 रनों से मुक. ाबला हार गई। दक्षिण अफ्रीका के लिए सुने लूस ने सर्वाधिक 40 रन बनाए। उन्होंने अपनी पारी में पांच चौके और एक छक्का लगाया। तेजमिन ब्रिट्स (30), कायला रेनेके (21) और कप्तान लॉरा वुलफॉर्ट (18) रन बनाकर आउट हुईं। एलिज मारी मार्क्स ने नाबाद 21 रन बनाए।

दक्षिण अफ्रीका के छह बल्लेबाज दहाई आंकड़े तक भी नहीं पहुंच सके। भारतीय महिला टीम के लिए दीप्ति शर्मा ने चार ओवरों में 19 रन देकर पांच विकेट झटके। क्रांति गौड़, श्री चारणी, काश्वी गौतम और शेफाली वर्मा ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया। इससे पहले शनिवार देर रात खेले गए मुकाबले में दक्षिण अफ्रीका की महिला टीम ने टॉस जीतकर भारत को पहले बल्लेबाजी करने का न्यौता दिया। बल्लेबाजी करने उतरी भारतीय टीम ने निर्धारित 20 ओवरों में पांच विकेट पर 185 रनों का स्कोर खड़ा किया।

खेल विशेष

मानस और आहना बने सर्वश्रेठ एथलीट

नई दिल्ली, वार्ता। मोती लाल नेहरू कॉलेज (सांध्य) ने अपनी वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता 2025-26 को सफलतापूर्वक आयोजन किया। तीन दिवसीय आयोजन में शानदार प्रदर्शन करते हुए मानस कुमार (बी-ए- प्रोग्राम, प्रथम वर्ष) ने तीन प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान प्राप्त कर सर्वश्रेठ एथलीट (पुरुष) का खिताब जीता। वहीं आहना बराल (बी-ए- प्रोग्राम, प्रथम वर्ष) ने चार प्रतियोगिताओं में प्रथम तथा एक में द्वितीय स्थान प्राप्त कर सर्वश्रेठ एथलीट (महिला) का खिताब अपने नाम किया। कार्यक्रम की शुरुआत अनुशासित मार्च-पास्ट, ध्वजारोहण एवं शपथ ग्रहण समारोह से हुई। मुख्य अतिथि प्रो- बलराम पाणि ने प्रतियोगिता का औपचारिक उद्घाटन किया। इस अवसर पर विशिट अतिथि के रूप में कर्नल सुरिदर सिंह एवं श्री जगवीर मलिक उपस्थित रहे।

चीन ने डेनमार्क को हराकर क्वार्टरफाइनल में जगह बनाई

हॉर्सेंस (डेनमार्क), वार्ता। मौजूदा चैंपियन चीन ने शनिवार को उबेर कप के ग्रुप चरण में अपनी लगातार दूसरी जीत दर्ज की। उसने मेजबान डेनमार्क को 5-0 से हराकर क्वार्टरफाइनल में अपनी जगह पक्की कर ली। शीर्ष वरीयता प्राप्त चीनी महिला टीम ने अपने दूसरे ग्रुप 'ए' मुकाबले में जबरदस्त प्रदर्शन किया, जिसमें उसने सभी पांच मैच सीधे गेम में जीते। वांग झीई, हान यू और शू वेनजिंग ने तीन एकल मैचों में जीत दिलाई, जबकि युगल जोड़ियों लियू शेंगशू/तान निंग और जिया यिफान/झांग शुशेन ने अपने डेनिश प्रतिद्वंद्वियों को दो गेम में हराकर चीन के लिए एक और क्लीन स्वीप सुनिश्चित किया। चीन, जिसने शुक्रवार को यूक्रेन के खिलाफ 5-0 की जीत के साथ अपने अभियान की शुरुआत की थी।

अनकैप्ड मोमिना रियासत पाकिस्तान की महिला टीम में शामिल

लाहौर, वार्ता। पाकिस्तान ने जिम्बाब्वे खिलाफ होने वाली महिला एकदिवसीय सीरीज के लिए टीम में अनकैप्ड बल्लेबाज बल्लेबाज मोमिना रियासत को टीम में जगह दी है। चयनकर्ताओं ने मोमिना रियासत अगले महीने कराची में जिम्बाब्वे के खिलाफ होने वाली तीन मैचों की घरेलू सीरीज के लिए 15-सदस्यीय टीम में शामिल किया गया है। एकदिवसीय मैचों में टीम की कप्तानी फातिमा सना ही करती रहेंगी। ए मैच आईसीसी महिला चैंपियनशिप 2025-29 का हिस्सा हैं। मोमिना को टीम में शामिल करने के अलावा, चयनकर्ताओं ने टीम के मुख्य खिलाड़ियों को ज्यादातर वही रखा है। टीम में आलिया रियाज, डायना बेग, मुनीबा अली और सिदरा अमीन जैसी अनुभवी खिलाड़ी भी शामिल हैं। जिम्बाब्वे की महिला टीम अपने पहले पाकिस्तान दौरे के लिए 29 अप्रैल को कराची पहुंचेगी। एकदिवसीय सीरीज से पहले, दोनों टीमें 30 अप्रैल से तीन मई तक अभ्यास करेंगी।

ऑरेंज कैप पर अभिषेक व पर्पल कैप पर अंशुल का कब्जा

नई दिल्ली, वार्ता। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2026 के 35वें और 36वें मुक. ाबले के दौरान एक ही दिन तीन बार ऑरेंज कैप के विजेता बदले। दिन के आखिरी मुकाबले बाद सनराइजर्स हैदराबाद (एसआरएच) के अभिषेक शर्मा ने इस पर अपना कब्जा कर लिया है। वहीं पर्पल कैपर अंशुल कम्बोज के पास है।

दिल्ली में शाम ढलते-ढलते दिल्ली के सलामी बल्लेबाज केएल राहुल ने नाबाद 152 रन बनाकर नंबर वन स्थान हासिल कर लिया, जो टी-20 क्रिकेट इतिहास में किसी भारतीय द्वारा बनाया गया सर्वोच्च स्कोर है। सात पारियों में 357 रन के साथ राहुल शीर्ष पर पहुंचे, लेकिन वहां दो घंटे भी नहीं टिक सके। जयपुर में वैभव सूर्यवंशी ने 37 गेंदों में 103 रन ठोककर 357 रन तक पहुंचते हुए, बेहतर स्ट्राइक रेट के आधार पर ऑरेंज कैप अपने नाम कर ली। एक घंटे बाद एसआरएच के सलामी बल्लेबाज अभिषेक शर्मा 29 गेंदों में 57 रन बनाकर बल्लेबाजी तालिका में सबसे ऊपर पहुंच गए। आठ पारियों में चौथी बार 50 से अधिक स्कोर बनाकर अभिषेक अब 380 रन के साथ बल्लेबाजी तालिका में शीर्ष पर हैं, जो सूर्यवंशी और राहुल दोनों से 23 रन ज्यादा हैं। हाइनरिक क्लासन ने एसआरएच की जीत में 29 रन बनाकर शीर्ष पांच में अपनी जगह मजबूत की और चौथे स्थान पर पहुंच गए। उनके नाम 349 रन हैं और वह कोहली से थोड़ा आगे हैं। बविराट कोहली (320 रन) 24 घंटे के भीतर पहले स्थान से फिसलकर पांचवें स्थान पर पहुंच गए, क्योंकि शनिवार को पंजाब किंग्स ने दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ 265 रन का लक्ष्य हासिल किया, जबकि सनराइजर्स हैदराबाद (एसआरएच) ने भी राजस्थान रॉयल्स (आरआर) के खिलाफ 229 रन का पीछा किया। पर्पल कैप मामले में एसआरएच के तेज गेंदबाज इशान मलिंगा ने आरआर के खिलाफ दो विकेट लेकर 38 रन दिए और अब चेन्नई सुपर किंग्स के अंशुल कंबोज के बेहद करीब पहुंच गए हैं। मलिंगा ने यशस्वी जायसवाल और डोनोवन फरेरा को आउट किया। दोनों गेंदबाजों के नाम अब 14 विकेट हैं।

दिल्ली को अपनी कैचिंग में करना होगा सुधार

आरसीबी के खिलाफ मुकाबला आज अरुण जेटली स्टेडियम में

नई दिल्ली, वार्ता। रिकॉर्ड स्कोर बनाने के बावजूद दिल्ली कैपिटल्स को पंजाब किंग्स के खिलाफ कल हार का सामना करना पड़ा और अब सोमवार को मौजूदा चैंपियन रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के खिलाफ यहां अरुण जेटली स्टेडियम में इंडियन प्रीमियर लीग 2026 सीजन के 39वें मैच में उसे अपनी फील्डिंग, खास तौर पर कैचिंग में सुधार करना होगा तभी वह जीत की उम्मीद कर पाएगा।

इस मुकाबले में सभी की निगाहें पूरी तरह से केएल राहुल पर टिकी हैं, जिनकी रिकॉर्ड तोड़ फॉर्म इस टूर्नामेंट की सबसे बड़ी चर्चा का विाय रही है। पंजाब के खिलाफ 152 रनों की शानदार नाबाद पारी खेलने वाले-जो आईपीएल के इतिहास में किसी भी भारतीय खिलाड़ी का अब तक का सबसे बड़ा व्यक्तिगत स्कोर है, राहुल दिल्ली की बल्लेबाजी की रीढ़ बनकर उभरे हैं। उन्होंने इस सीजन में कई मैचों में अकेले दम पर टीम को जीत दिलाई है। सात पारियों में 357 रन और एक बेहतरीन स्ट्राइक रेट के साथ, क्रीज पर उनका दबदबा बेजोड़ रहा है।

फिर भी, दिल्ली के अभियान की विडंबना यह है कि राहुल के शानदार प्रदर्शन के बावजूद टीम को लगातार जीत नहीं मिल पाई है। पंजाब किंग्स के हाथों मिली करारी हार-जिसमें दिल्ली 264 रनों के विशाल स्कोर का बचाव करने में नाकाम रही, ने एक गहरी समस्या को उजागर किया है: एक कमजोर गेंदबाजी आक्रमण, जो टीम की विस्फोटक बल्लेबाजी का साथ देने में संघर्ष कर रहा है।

नीतीश राणा, ट्रिस्टन स्टब्स और अन्य खिलाड़ियों के योगदान से टीम को कुछ सहारा तो मिला है, लेकिन राहुल पर टीम की अत्यधिक निर्भरता अभी भी साफ नजर आती है। इसके बिल्कुल विपरीत, रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु की टीम है, जिसने संत. ुलन और सामूहिक ताकत के दम पर शानदार प्रदर्शन किया है। सात मैचों में पांच जीत के साथ, उन्होंने अपने अभियान को किसी एक खिलाड़ी पर निर्भर रहने के बजाय, खेल के सभी विभागों में लगातार अच्छे प्रदर्शन के आधार पर आगे बढ़ाया है। विराट को. हली ने बल्ले से मोर्चा संभालते हुए 328 रन बनाए हैं।

हम हारना डिजर्व करते हैं: अक्षर पटेल

नई दिल्ली, वार्ता। शनिवार को टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए दिल्ली कैपिटल्स (डीसी) ने जब 264 रन का एक विशाल स्कोर खड़ा किया था, तो किसी को भी नहीं लगा था कि पंजाब किंग्स इस मैच को सात गेंद शो रहते ही जीत जाएगी। लेकिन प्रभसिमरन सिंह के 26 गेंदों में 76 और कप्तान श्रेयस अय्यर की 71 रनों की पारी की मदद से पंजाब ने मैच को छह विकेट से आसानी से जीत लिया।

इस दौरान सब फील्डर करुण नायर ने श्रेयस के 29 और 35 के स्कोर पर दो कैच छोड़े, जबकि प्रभसिमरन का भी एक कठिन और एक थोड़ा आसान कैच डीसी के फील्डरों ने छोड़े। इसके अलावा प्रियांश आर्य, कूपर कॉनॉली और शशांक सिंह का भी कैच डीसी के फील्डरों द्वारा छोड़े गए। वहीं पारी के तीसरे ओवर में ऐसा ही एक कठिन कैच लपकने के चक्कर में उनके तेज गेंदबाज लुंगी एन्गिडी चोटिल होकर मैच से बाहर हो गए, जिनके चार ओव. रों की कमी उन्हें पूरे मैच के दौरान खली। मैच के बाद ब्रॉडकास्टर से बात करते हुए डीसी के कप्तान अक्षर पटेल ने कहा कि हम लगातार वही गलतियां दोहरा रहे हैं। इस तरह की पिच पर अगर आप अपने गेंदबाजों को सपोर्ट नहीं करेंगे और इतने सारे मौके देंगे, तो मुझे लगता है कि हम ऐसी हार डिजर्व करते हैं। इसके अलावा हमारी बोलिंग यूनिट ने जिस तरह से पावरप्ले में गेंदबाजी की, उसे भी हमें देखना होगा। इस पिच पर 264 का स्कोर बहुत अच्छा स्कोर था, बस हमें ए मौके नहीं गंवाने चाहिए थे और थोड़ी बेहतर गेंदबाजी करनी चाहिए थी। पंजाब ने पावरप्ले में 116 रन बनाए, जो कि इस चरण में आईपीएल का दूसरा सबसे बड़ा स्कोर है। यह डीसी की इस सीजन सात मैचों में चौथी हार थी, इसमें एक मैच वह भी शामिल है, जब उन्होंने अपने होमग्राउंड पर गुजरात टाइटंस के खिलाफ एक रन से मैच गंवाया था। अक्षर ने कहा कि अगर हम जो अहम मोमेंट है, उसको अपने पक्ष में कर लेते, तो दो-तीन मैचों के परिणाम हमारे पक्ष में होते। आगे हमें उन्हीं महत्वपूर्ण पलों को अपना बनाना होगा। ऐसा नहीं हो सकता कि आप हमेशा गलती करते रहो और फिर बेहतर परिणाम की उम्मीद करो। हम अब वापस जाएंगे और मूल्यांकन करेंगे कि और क्या बेहतर कर सकते हैं। डीसी के डायरेक्टर ऑफ क्रिकेट वेणुगा. पाल राव ने भी मैच कॉन्फ्रेंस में अपने कप्तान की बातों को दो. हराया। उन्होंने कहा कि हमने देखा कि हमने कुछ कैच गंवाए, जो कि हमारे दो अंक गंवाने का प्रमुख कारण था। हमने लगभग छह कैच गंवाए। अगर आप महत्वपूर्ण मौकों पर ऐसे कैच, वह भी प्रभसिमरन और श्रेयस जैसे खिलाड़ियों को गंवाते हो, तो मुझे नहीं लगता कि हम मैच जीत सकते हैं। हमें ऐसे कैचों को लपकने की जरूरत है। यह इस सीजन सात मैचों में चौथी बार था, जब डीसी के गेंदबाजों के खिलाफ 200 से अधिक रन बने। तो क्या यह सिर्फ खराब फील्डिंग के कारण था या डीसी को अपनी गेंदबाजी में भी बहुत सुधार की जरूरत है? राव ने कहा कि अगर हम 264 रन बनाकर भी स्कोर को डिफेंड नहीं कर पा रहे हैं, तो इसका मतलब है कि गेंदबाजी में भी कई चीजों पर काम करने की जरूरत है। हमें अपनी पावरप्ले गें. दबाजी और कैचिंग को बेहतर करने की जरूरत है। इसके अलावा हमने एग्निडी के 24 गेंदों, उनके चार ओवरों को मिस किया। उन्होंने पिछले सभी मैचों में चार ओवर गेंदबाजी की है और अपनी स्लोअर गेंदों और अनुभव से बल्लेबाजों को परेशान किया है। उम्मीद है कि वह जल्द ही रिकवर होकर वापस मैदान पर लौटेंगे। हमें पता है कि जबसे यह इंपैक्ट प्लेयर का नियम आया है।

डीएलडब्ल्यूक्यू के खिलाड़ियों ने कुल 24 स्वर्ण पदक जीते

नई दिल्ली, वार्ता। दिल्ली एमेच्योर वुशु एसोसिएशन द्वारा आयोजित 23वीं दिल्ली राज्य वुशु चैम्पियनशिप के दूसरे दिन खिलाड़ियों ने ताओलु एवं सांडा स्पर्धाओं में शानदार प्रदर्शन करते हुए प्रतियोगिता को अत्यंत रोमांचक बना दिया। दूसरे दिन सब-जूनियर एवं जूनियर वर्ग (बालक एवं बालिका) की सांडा (शानशू) प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं, जिनमें खिलाड़ियों ने दमदार प्रदर्शन करते हुए पदक अपने नाम किए।

ताओलु स्पर्धाओं में खिलाड़ियों ने उच्च स्तर की तकनीक और संतुलन का प्रदर्शन किया। ताओलु स्पर्धाओं में डीएलडब्ल्यूक्यू का दबदबा देखने को मिला, जहां खिलाड़ियों ने कुल 24 स्वर्ण पदक जीतकर अपनी श्रेठता सिद्ध की। वहीं सांडा स्पर्धाओं में टीएमएएआई, बुढ़ा वुशु क्लब एवं अन्य इकाइयों के खिलाड़ियों ने उत्कृट प्रदर्शन करते हुए विभिन्न वर्गों में पदक प्राप्त किए।

प्रतियोगिता के दौरान सब-जूनियर गर्ल्स वर्ग में 24 किग्रा में आराध्या (बुढ़ा वुशु क्लब), 28 किग्रा में राशिका (शिवाजी स्पोर्ट्स), 32 किग्रा में आरुषि (बुढ़ा वुशु अकादमी) तथा अन्य वर्गों में खिलाड़ियों ने स्वर्ण पदक जीतकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। इसी प्रकार सब-जूनियर बॉयज वर्ग में 24 किग्रा में अहिल खान (एनसीडब्ल्यू), 28 किग्रा में प्रिंस (एनडब्ल्यूसी), 32 किग्रा में शिवम (टीएमएआई), 36 किग्रा में देव (आरके स्पोर्ट्स) सहित अन्य खिलाड़ियों ने स्वर्ण पदक अपने नाम किए।

'सूर्यवंशी मेरा नया पसंदीदा खिलाड़ी है': पैट कमिंस

हैदराबाद के कप्तान पैट कमिंस ने कहा सूर्यवंशी के खेल ने मुझे बहुत ज्यादा प्रभावित किया

जयपुर, वार्ता। बल्लेबाजी सनसनी वैभव सूर्यवंशी के चाहने वालों में एक नाम और जुड़ गया है। सनराइजर्स हैदराबाद के कप्तान पैट कमिंस उनके नए चाहने वाले हैं और उनका कहना है कि सूर्यवंशी उनका नया पसंदीदा खिलाड़ी है। हालांकि सूर्यवंशी की टीम राजस्थान रॉयल्स को कल हैदराबाद से हार का सामना करना पघा सूर्यवंशी ने इस मैच में शतक बनाया लेकिन यह जीत दिलाने के लिए काफी नहीं था।

सूर्यवंशी का 36 गेंदों में बनाया गया शतक - जो आईपीएल के इतिहास का तीसरा सबसे तेज शतक है - राजस्थान रॉयल्स को जीत दिलाने के लिए काफी नहीं था, लेकिन इसने विरोधी टीम के कप्तान को भी इस बात से बहुत प्रभावित किया कि 15 साल का यह खिलाड़ी अभी से क्या-क्या कर सकता है। कमिंस ने सूर्यवंशी के बारे में कहा कि मुझे लगता है कि वह मेरा नया पसंदीदा खिलाड़ी है। वह गेंद को इतनी जोर से मारता है कि उसे देखना बहुत अच्छा लगता है, इसमें बहुत मजा आता है। एक गें. दबाज के तौर पर आपको बिल्कुल सटीक गेंद डालनी होती है, क्योंकि अगर आप ऐसा नहीं करते, तो गेंद बहुत दूर तक जाती है। इसलिए वह बहुत प्रभावशाली है। हां, उसने अपने करियर की शानदार शुरुआत की है और हां, मुझे उसका खेलने का तरीका बहुत पसंद है, जिस तरह वह खेल को अपने हाथ में लेता है। कमिंस ने सूर्यवंशी को जो पहली गेंद डाली, वह छक्के के लिए बाउंड्री के पार चली गई, इसने इस युवा खिलाड़ी की एक और निडर पारी की नींव रख दी। अब वह इस टूर्नामेंट के कुछ बेहतरीन गेंदबाजों - जिनमें जसप्रीत बुम. राह, भुवनेश्वर कुमार, मार्को यानसन, जोश हेजलवुड और अर्शदीप सिंह शामिल हैं - के खिलाफ भी काफी सहज नजर आ रहा है। रिहैब से लौटने के बाद इस सीजन का अपना पहला मैच खेल रहे कमिंस ने आईपीएल में हाल ही में बन रहे रनों की भारी संख्या को लेकर चल रही बहस पर भी अपनी राय दी। अकेले शनिवार को ही खेले गए दो मैचों में कुल 986 रन बने। जब कमिंस से पूछा गया कि क्या इस टूर्नामेंट में बल्ले और गेंद के बीच बेहतर संतुलन की जरूरत है, तो उन्होंने कहा कि देखिए, शायद। मुझे लगता है कि चीजें जैसी हैं, वैसी ही रहेंगी। पिचें भले ही सपाट हों, लेकिन यह सिर्फ 20 ओवर का खेल है - आप जानते ही हैं - इसलिए यह कोई टेस्ट मैच नहीं है जहां पिच सपाट हो और बल्लेबाजों को पांच दिनों तक बल्लेबाजी करने का मौका मिले, इसलिए मुझे इससे कोई दिक्कत नहीं है। इसमें हर गेंदबाज को ज्यादा से ज्यादा चार ओवर ही मिलते हैं। हां, यह ठीक है। चीजें जैसी हैं, वैसी ही रहेंगी। उन्होंने कहा, जाहिर है, हमने अपनी टीम इस तरह बनाई है कि हम अपनी बैटिंग से बड़ा स्कोर खड़ा कर सकें, और एक बॉलर के तौर पर यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम विरोधी टीम के रन कम से कम रखें। आज के स्कोर शायद कुछ साल पहले के स्कोर से थोड़े अलग दिखते हैं, लेकिन इसका मूल विचार अभी भी वही है। हां, मुझे इससे कोई दिक्कत नहीं है। जब उनसे खास तौर पर सपाट पिचों पर, जहां बाउंड्री छोटी होती हैं, लंबी बैटिंग लाइन-अप के खिलाफ बॉलिंग करने के बारे में पूछा गया, तो कमिंस ने कहा कि वह इसे निराशा के बजाय एक चुनौती के तौर पर देखते हैं। कमिंस ने कहा,यह ठीक है, यह एक अच्छी चुनौती है। आप जानते हैं, हो सकता है कि आपके कुछ ओवर खराब चले जाएं, लेकिन आपको लगता है कि अगर आप वापसी करके डेथ ओवर में सचमुच अच्छी बॉलिंग करते हैं, तो वह मैच जिताने वाला साबित हो सकता है। इसलिए मुझे असल में लगता है कि कुछ मायनों में इससे हम बॉलर्स पर से दबाव कम हो जाता है, क्योंकि हमें पता होता है कि हमारी बैटिंग लाइन-अप किसी भी स्कोर का पीछा कर सकती है, भले ही स्कोर कितना भी बड़ा क्यों न हो। आपको लगता है कि चारों ओवर बहुत ज्यादा जरूरी हैं, और आप जानते हैं, एक विकेट या एक सचमुच अच्छा ओवर उतना ही अहम हो सकता है, जितना कि कम स्कोर वाले मैच में एक अच्छा स्पेल होता है। यह ठीक है। यह दोनों टीमों के लिए एक जैसा ही है। मुझे लगता है कि आपको अभी भी पांच सचमुच अच्छे बॉलर्स की जरूरत होती है।

शाह टाइम्स

सम्पादकीय

सोमवार, 27 अप्रैल 2026

Dainikshahtimes@gmail.com For Articles

हमला या साजिश

यह खबर वास्तव में डराने वाली भी है, चौंकाने वाली भी और हैरान करने वाली भी है कि अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प पर व्हाइट हाउस कॉरोसपोंडेंट डिनर के दौरान एक हमलावर ने अचानक गोलीबारी शुरू कर दी। हालांकि अमेरिकी राष्ट्रपति पूरी तरह सुरक्षित हैं और सीक्रेट सर्विस के एजेंटों ने तुरंत उन्हें वहां से सुरक्षित बाहर निकाला। देखने वाली बात यह भी है कि जिस समय यह हमला हुआ, उस समय डिनर पार्टी में ट्रम्प और उनकी कैबिनेट सहित 2500 प्रतिष्ठित मेहमान मौजूद थे। हमलावर की पहचान कैलिफोर्निया के टोरेंस निवासी कोल टामस एलन के रूप में हुई है। उसे जिंदा पकड़ लिया गया है। इस हाईप्रोफाइल कार्यक्रम में वॉलिंटर के रूप में काम कर रही हेलेन माबुस ने उन डरावने पलों को याद करते हुए बताया कि वहां सुरक्षा का कोई पुख्ता इंतजाम नहीं था और न ही निगरानी की जा रही थी। हमलावर एलन वाशिंगटन हिल्टन होटल में आया और सीधे उस बालरूम की ओर बढ़ा जहां राष्ट्रपति ट्रम्प और प्रतिष्ठित मेहमान मौजूद थे और जब हमलावर ने हमला किया उस वक्त मेहमानों को सलाद परोसा जा रहा था। वॉलिंटर का कहना था कि स्थिति इतनी तनावपूर्ण थी कि कैबिनेट के सदस्यों को टेबल के नीचे शरण लेनी पड़ी। डीसी पुलिस प्रमुख जैफरी केरोल ने भी अपने बयान में कहा कि हमलावर के पास एक शॉटगन, एक हैंडगन और कई चाकू थे और इस हमले में एक कानून प्रवर्तन अधिकारी को गोली लगी, लेकिन बुलेट प्रूफ जाकेट के चलते उनकी जान बच गई। पुलिस प्रमुख के अनुसार यह एक लोन वुल्फ हमला हो सकता है। इसका मतलब है कि हमलावर ने अकेले ही साजिश को अंजाम दिया। कोल टामस एलन के बारे में यह भी जानकारी दी कि वह पेशे से टीचर है और उसे दिसंबर 2024 में टीचर ऑफ द मंथ का पुरस्कार मिल चुका है। ट्रम्प ने हमलावर को अपनी एक टिप्पणी में सनकी शख्स बताया है। जहां तक भारत की है, भारतीय पीएम मोदी ने इस गोलीबारी की घटना की निंदा की है, अपने सोशल मीडिया एक्स पर पीएम मोदी ने ट्रम्प, प्रथम महिला मेलानिया और उप राष्ट्रपति जेडी वेन्स की सुरक्षा पर राहत जताई है और कहा है कि लोकतंत्र में हिंसा का कोई स्थान नहीं है। देखने वाली बात यह भी है कि अब से पहले 13 जुलाई 2024 को भी ट्रम्प पर उस समय हमला हुआ था, जब वह चुनावी रैली को संबोधित कर रहे थे। तब कहा गया था कि यह हमला ईरान ने कराया है। अभी भी सीधे ईरान का नाम तो नहीं लिया गया, लेकिन जिस तरह का बयान ट्रम्प ने दिया है वह इसी तरफ इशारा कर रहा है। उन्होंने कहा है कि उन पर हुआ यह हमला ईरान पर उनकी विजय को नहीं रोक सकता। इसलिए यह संदेह भी पैदा होता है कि कहीं यह हमला ईरान पर हमले का कारण तो नहीं बन जाएगा और यूं भी जिस तरह की जानकारी अब तक आई है वह बेहद अस्पष्ट है। एक सनकी पागल व्यक्ति इतनी हाईप्रोफाइल पार्टी में कैसे पहुंच सकता है। जो अमेरिका अपने राष्ट्रपति को लेकर विदेशों में भी चौकसी बरतता है, वह अपने यहां कैसे लापरवाह हो सकता है।

बंगाल में तृणमूल का गुंडा राज चला रहा

कांग्रेस हिंसा पर भरोसा नहीं करती और अहिंसा के सिद्धांत को कलंकित करने वाली राजनीति के सामने झुकना नहीं जानती है, कांग्रेस के कार्यकर्ता देबदीप चटर्जी की तृणमूल से जुड़े गुंडों द्वारा की गई हत्या बेहद निंदनीय है, शोकाकुल परिवार के प्रति मेरी गहरी संवेदनाएं, पश्चिम बंगाल में आज लो. कतंत्र नहीं, तृणमूल का गुंडा राज चल रहा है, वोट के बाद विरोधी आवाजों को डराना, मारना, मिटाना, यही टीएमसी का चरित्र बन चुका है, कांग्रेस की राजनीति कभी हिंसा पर नहीं टिकी और न कभी टिकेगी, हमने भी अपने कार्यकर्ता खोए हैं, फिर भी हमने हमेशा अहिंसा और संविधान का रास्ता चुना है, यही हमारी विरासत है, यही हमारा संकल्प, हमारी मांग स्पष्ट है, अहिंसक परंपरा को कलंकित करने वाली राजनीति के सामने झुकेंगे नहीं, न्याय होकर रहेगा।

-राहुल गांधी, नता विपक्ष, लोकसभा

मानवीय संवेदना का इतिहासकार
फोटोग्राफर रघु राय

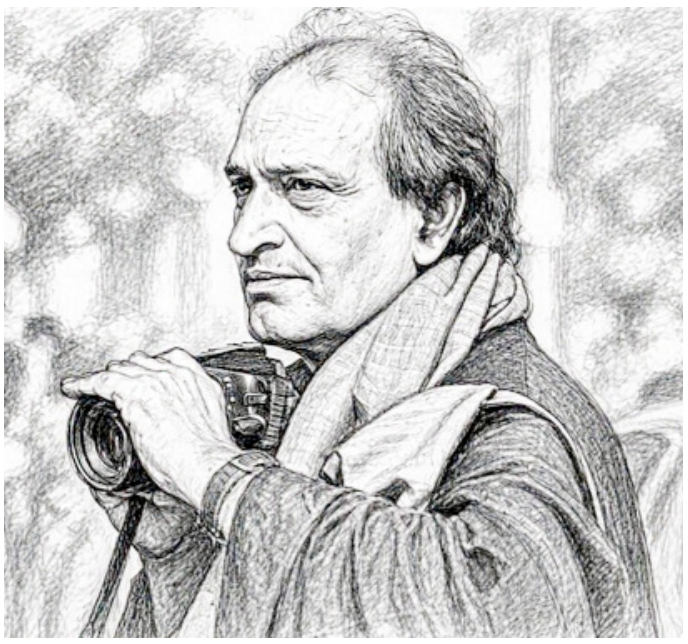

कई दशकों तक भारतीय राजनीति, इसके प्रमुख व्यक्तित्वों, प्रमुख घटनाओं को अपने कैमरे में कैद कर देश के समक. ालीन राजनीतिक इतिहास को एक जीवंत आयाम देने वाले महान फोटोग्राफर रघु राय का रविवार को निधन हो गया। अपने समय के सच को पूरी निडरता और सच्चाई के साथ दिखाने वाले इस फोटोग्राफर ने 23 की उम्र में पहली बार कैमरे पर हाथ आजमाया था, तब से लेकर पूरी जिंदगी कैमरा उनके साथ ऐसे रहा, जैसे वह उनके शरीर का कोई अनिवार्य अंग हो। उनकी खिची हुई तस्वीरें देखकर अनायास ही यह महसूस हो जाता है कि अपने व्यू फाइंडर से तात्कालिक सच को देख पाने की उनमें अद्भुत क्षमता थी। व्यू फाइंडर उनकी आत्मा का ही विस्तार था, जिसके द्वारा वह अनदेखे को देखकर कैमरे में कैद कर लेते और उसे अमर जीवंत तस्वीर में बदल देते थे।

अब इसे इत्तेफाक कहें या नियति का खेल की उनका जन्म महात्मा गांधी द्वारा भारत छोड़ो आंदोलन के बिगुल फूंके जाने के मात्र चार महीने बाद 18 दिसंबर 1942 को पंजाब के झंग में हुआ। यही वह समय था, जब भारत का इतिहास एक नए अध्याय में प्रवेश करने वाला था और बाद में युवा रघु राय इस नए अध्याय को अपने कैमरे से कैद करने वाले थे।

वह 1966 में प्रसिद्ध अंग्रेजी अखबार स्टेट्समैन में मुख्य फोटोग्राफर के रूप में शामिल हुए और मात्र एक साल बाद इंदिरा गांधी देश की पहली महिला प्रधानमंत्री बनी। यह एक ऐसा संयोग था, जिसने हम भारतीयों को इंदिरा गांधी की कई अमूल्य तस्वीरें दी। राय द्वारा श्रीमती गांधी की खींची गई तस्वीरें इतनी जीवंत और प्रभावी हैं कि केवल इन तस्वीरों के आधार पर श्रीमती गांधी की राजनीतिक करियर का इतिहास गढ़ा जा सकता है और यह तस्वीर केवल तथ्यों और आंकड़ों का इतिहास नहीं होगा। मानवीय पक्ष का इतिहास होगा। मंच पर खोई हुई सिमटी सी बैठी इंदिरा गांधी की तस्वीर एक ऐसे विरोधाभास को दर्शाता है, जिसमें आयरन लेडी चिंताओं और अव्यक्त भय से घिरी हुई एक साधारण महिला नजर आती हैं- बेहद मानवीय, सुभेद्य। एक तरफ अपनी कुर्सी पर बैठी और चारों तरफ से पुरुष नेताओं से घिरी हुई इंदिरा गांधी पुरुष वर्चस्व वाली राजनीति को चुनौती देती नजर आती हैं, तो दूसरी तरफ अपने घर में सोनिया गांधी और बच्चों के साथ मुस्कराती हुई बेहद पारिवारिक महिला दिखती हैं। रघु राय की तस्वीरें जितनी जीवंतता से इंदिरा गांधी के भावों को कैद और अभिव्यक्त करती हैं, उतनी जीवंतता से कोई भी इतिहासकार इंदिरा के बारे में नही लिख पाएगा। इसलिए रघु राय महज एक फोटोग्राफर नहीं है, एक इतिहासकार हैं, जो इतिहास को तथ्यों से परे ले जाकर मानवीय बना देता है।

इतिहास को मानवीय पक्ष देने वाले इस महान फोटोग्राफर की एक अन्य तस्वीर ने पूरी त्रासदी को एक जीवंत प्रतीक में बदल दिया। भोपाल त्रासदी की वह तस्वीर जिसमें एक बच्चा मलबे के नीचे दबा हुआ है, सिर्फ उसका शुष्क चेहरा और अध-खुली आंखें दिख रही हैं, आज भी उस भयावह त्रासदी को जैसे अपनी पुरी नग्नता के साथ आंखों के सामने लाकर खड़ा कर देता है।

संपूर्ण क्रांति आंदोलन के दौरान लोकनायक जयप्रकाश नारायण पर लाठी चार्ज की तस्वीर हो या बंगलादेश मुक्ति संग्राम के समय लोगों के पलायन की तस्वीर, राय अपने समय के इतिहास की लगभग हर महत्वपूर्ण घटना को दर्ज करते चलते हैं। भिडरावाले की मृत्यु से मात्र एक दिन पहले की उनकी पोट्रेट हो या मदर टेरेसा की मरीजों की सेवा करती हुई तस्वीर, वह मानवीय भावनाओं, डर और संवेदनाओं को पकड़ लेने में जैसे माहिर थे। इस लिहाज से वह एक मनोवैज्ञानिक लगते हैं, जो हाथ में कैमरा लिए अपने समय के लोगों की मनोदशाओं को कैद करता चलता है और मानवता का संवेदनशील दस्तावेज तैयार करता दिखता है। राय के इन्ही विशिष्ट और अद्भुत कार्यों के लिए भारत सरकार ने 1972 में उन्हें पद्म से नवाजा, लेकिन उनकी ख्याति केवल देश तक ही सीमित नहीं थी। उनके फोटो निबंध द न्यू यॉर्कर, द न्यूयॉर्क टाइम्स, टाइम, लाइफ, द इंडिपेंडेंट और कई अन्य प्रसिद्ध अंतर्राष्ट्रीय प्रकाशनों में समय-समय पर छपते रहे। राय को नेशनल ज्योग्राफिक में प्रकाशित उनके फोटो निबंध ह्यूमन मैनेजमेंट ऑफ वाइल्डलाइफ इन इंडिया के लिए अमेरिका में फोटोग्राफर ऑफ द ईयर पुरस्कार से सम्मानित किया गया। फ्रांसीसी सरकार ने भी उन्हें 2009 में ऑफिसर डेस आर्ट्स एट डेस लेट्रेस से सम्मानित किया। देश-विदेश में ख्याति प्राप्त यह महान फोटोग्राफर भले ही आज इस दुनिया से चला गया हो, लेकिन उनका काम, उनकी आयताकार तस्वीरें दुनिया में हमेशा जीवित रहेंगी और अपनी पुरी प्रामाणिकता एवं सच्चाई के साथ कहती रहेगी- एक था रघु राय, जिसने कैमरे से इतिहास लिख दिया, मानवीय संवेदना का इतिहास।

-भारत भूषण

सांसदों का सामूहिक पलायन : चेतावनी

यह लोकतंत्र की नींव, 'न्यायिक स्वतंत्रता' को हिला देता है। कुछ मामलों में भ्रष्टाचार सच्चा हो सकता है, लेकिन टाइमिंग संदिग्ध है। इससे राजनीति में 'कोऑर्शन' (दबाव) की संस्कृति बढ़ती है। जनता के मन में यह सवाल उठना लाजमी है कि क्या सत्ता हासिल करने का यही तरीका है? यह ट्रेंड छोटे दलों को खत्म करने और राष्ट्रपति शासन जैसी स्थितियां पैदा करने का खतरा बढ़ाता है। आम आदमी पार्टी के सांसदों का भाजपा में विलय स्वस्थ राजनीति को खतरे में डालता है। यह पार्टी की कमजोरियों को उजागर करता है। लेकिन इससे बड़ा सबक यह है कि भारतीय राजनीति में वैचारिक स्थिरता, आंतरिक लोकतंत्र और संस्थागत निष्पक्षता की जरूरत है।

विनीत नारायण

पिछले सप्ताह आम आदमी पार्टी के सात राजसभा सांसदोंने पार्टी छोड़कर भाजपा में स्वत: विलय कर लिया। पार्टी की कुल 10 राजसभा सीटों में से दो-तिहाई से अधिक सां. सदों का यह कदम संवैधानिक प्रावधान के तहत लिया गया, जिससे उन्हें अयोग्यता से बचने का रास्ता मिल गया। इनमें से छह पंजाब से चुने गए थे, जबकि एक दिल्ली से। यह घटना न केवल आम आदमी पार्टी के लिए करारा झटका है, बल्कि पंजाब की सत्तासीन पार्टी के भविष्य पर सवालिया निशान लगा रही है।

राघव चड्ढा ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में दावा किया कि आम आदमी पार्टी अब अपनी मूल विचारधारा से भटक गई है, लेकिन विपक्षी दलों और आम आदमी पार्टी ने इसे भाजपा का ऑपरेशन लोटस करार दिया। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान और अरविंद केजरीवाल ने इसे पंजाब के साथ धोखा बताया। सवाल यह है कि क्या यह महज व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा का परिणाम है या पंजाब की राजनीति में बड़े बदलाव की शुरुआत?

पंजाब में आम आदमी पार्टी 2022 के विधानसभा चुनावों में भारी बहुमत से सत्ता में आई थी। भगवंत मान सरकार शिक्षा, स्वास्थ्य, बिजली और रोजगार जैसे क्षेत्रों में कुछ उपलब्धियां गिनाती रही है, लेकिन 2027 के विधानसभा चुनावों से ठीक एक साल पहले यह सामूहिक पलायन पार्टी की स्थिरता पर गंभीर सवाल खड़ा करता है। इन सात सांसदों में चार प्रमुख पंजाबी चेहरे, हरभजन सिंह (क्रिकेटर), अशोक मित्तल (एलपीयू चांसलर), विक्रम साहनी और संदीप पाठक, का जाना न केवल संसदीय ताकत कम करता है बल्कि पार्टी के संगठनात्मक ढांचे को भी कमजोर करता है।

पंजाब कांग्रेस अध्यक्ष अमरिंदर सिंह राजा वॉरिंग ने पहले ही चेतावनी दी है कि केजरीवाल की पार्टी के 50 विधायकों तक का पलायन हो सकता है। यदि ऐसा हुआ तो पंजाब में सरकार अल्पमत में आ सकती है। भाजपा, जो पंजाब में अभी कमजोर है, को यह घटना बड़ा नैतिक और संगठनात्मक बल प्रदान करेगी। पूर्व केंद्रीय मंत्री अश्वनी कुमार के अनुसार, यह भाजपा को अकाली दल के साथ गठबंधन की मेज पर मजबूत स्थिति देगा। पंजाब की राजनीति में 'ऑपरेशन लोटस' की सफलता से भाजपा की छवि मजबूत होगी और मतदाताओं में यह धारणा बनेगी कि केजरीवाल की पार्टी का 'अंत' शुरू हो चुका है। दूसरी ओर, यह घटना पंजाब के किसान-मजदूर वोट बैंक को भी प्रभावित करेगी। उल्लेखनीय है कि आंदोलन से जन्मीं आम आदमी पार्टी की छवि को भ्रष्टाचार-मुक्त और आम आदमी की पार्टी के रूप में बनाया गया था। अब जब उसके प्रमुख चेहरे भाजपा में शामिल हो रहे हैं, तो जनता में निराशा फैल सकती है। पंजाब की राजनीति पहले से ही कांग्रेस, अकाली दल और आप पार्टी के त्रिकोणीय संघर्ष में फंसी है। इस पलायन से कांग्रेस को भी फायदा हो सकता है, लेकिन कुल मिलाकर विपक्षी एकता टूटने का खतरा बढ़ गया है। इस घटना ने अन्य विपक्षी दलों, कांग्रेस, टीएमसी, सपा, बसपा आदिको स्पष्ट संदेश दिया है कि भाजपा केंद्र की एजेंसियों का इस्तेमाल कर विपक्ष को तोड़ने की रणनीति पर अडिग है। 'ऑपरेशन लोटस' अब सिर्फ कर्नाटक, महाराष्ट्र या हरियाणा तक सीमित नहीं रहाय यह राष्ट्रीय स्तर पर विपक्षी दलों की जड़ों को हिला रहा है। दलों को समझना होगा कि बिना आंतरिक लोकतंत्र, मजबूत संगठन और वैचारिक स्पष्टता के वे टिक नहीं सकते। आम आदमी पार्टी जैसी युवा पार्टी का टूटना साबित करता है कि व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा और संसाधनों की कमी पार्टियों को कमजोर बनाती है। वहीं आम जनता के लिए संदेश और भी गंभीर है। जब भी कोई नेता ईडीध्सीबीआई छापे के ठीक बाद पार्टी बदल लेता है, तो लोकतंत्र में विश्वास डगमगाता है। जनता सोचती है कि क्या ए नेता सच्चे सुधारक थे या सत्ता के लालची? पंजाब की जनता, जो पहले ही महंगाई, बेरोजगारी और ड्रग समस्या से जूझ रही है, अब राजनी. तिक अस्थिरता का शिकार हो रही है। यह घटना राजनी. ति को एक 'धंधा' साबित करती है, जहां सिद्धांतों की जगह स्वार्थ हावी है, लेकिन एक सकारात्मक पक्ष यह भी है कि जनता अब ज्यादा सजग हो रही है। 2027 के चुनाव में मतदाता इन 'ट्रैक्टरों' को याद रखेंगे और वोट से जवाब देंगे। यह घटना आम आदमी पार्टी के लिए खतरे की घंटी है। पार्टी ने दिल्ली और पंजाब में सत्ता संभाली, लेकिन राष्ट्रीय स्तर पर संगठन अभी भी कमजोर है। राघव चड्ढा जैसे चेहरे, जो पार्टी के प्रमुख प्रवक्ता थे, का जाना आंतरिक कलह को उजागर करता है। केजरीवाल की 'सुप्रीमो' शैली पर सवाल उठ रहे हैं। अशोक मित्तल पर ईडी के छापे के महज 10 दिन बाद उनका पलायन संदेहास्पद है। यदि पार्टी में सुधार नहीं हुआ, तो दिल्ली में भी 'डोमिनो इफेक्ट' शुरू हो सकता है। वहीं अन्य दलों के लिए भी यह एक संकेत है। भारतीय राजनीति में 'माइग्रेशन' की संस्कृति बढ़ रही है। भाजपा की मजबूत केंद्रीय शक्ति का फायदा उठाकर छोटी पार्टियां टूट रही हैं। यह लोकतंत्र की सेहत के लिए खतरनाक है। जब विपक्ष कमजोर होता है, तो सत्ता का दुरूपयोग बढ़ता है। यह प्रवृत्ति 'एक पार्टी प्रभुत्व' की ओर ले जा रही है, जो बहुलवाद को नुकसान पहुंचाएगी। चिंता की बात यह है कि यह प्रवृत्ति ईडी/सीबीआई जैसी एजेंसियों की निष्पक्षता पर भी सवाल उठाती है। जब यह संस्थाएं केवल विपक्ष पर सक्रिय नजर आती हैं और सत्ता पक्ष पर चुप रहती हैं, तो जनता में भरोसा कम होता है।

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

क्या फिर भारतीय, भारतीयों पर गोली चलाएगा?

पवन सिंह

भारत दुनियां का इकलौता ऐसा देश है जहां भारतीयों का ही झुंड अपने आकाओं को खुश करने के लिए अपने ही लोगो पर गोलियां चलाता हुआ आगे बढ़ा है। अंग्रेजी हुकूमत ने अपने 200 साल के शासनकाल में यही किया। उसने भारतीयों को ही मांस के टुकड़े जैसी कुछ रियासतें फेंकी या चंद सिक्के उछाले और मात्र इतने ही उपकार पर गोरों के आगे भारतीयों ने नृत्य प्रस्तुतियां शुरू कर दीं। फिर ब्रिटिश हुकूमत ने भारतीयों को ही बतौर सैनिक और सिपाही भर्ती किया गया और उनके ही हाथों भारतीयों को फांसी पर लटकवाया या सामूहिक रूप से उनकी हत्याएं करवा दीं। यही हम भारतीयों का काला सच है। यह सच आज भी इतिहास में दर्ज है और कल भी दर्ज रहेगा। यही अंग्रेजी हुकूमत ने किया था और ठीक वैसा ही मौजूदा सत्ता कर रही है।

जो हालात बन रहे हैं उनका विश्लेषण करने से एक बात जो प्रथम दृष्टया समझ में आ रही है, वह यह कि आम जनता का एक बड़ा वर्ग और सरकारी सुरक्षाबलों के बीच एक जबरदस्त खाई पैदा हो चुकी है। मजदूर, किसान और छात्रों के छिट-पुट हुए संघर्ष और उनको जिस मंशा से हैंडिल किया जा रहा है, वह बतौर जर्नलिस्ट मेरी इस शंका को सच साबित कर रहा है जैसा कि मैंने लिखा है। आप को थोड़ी सी जहमत उठानी होगी और कुछ आंकड़े व तथ्य खोजने होंगे। सच आपको नजर आने लगेगा कि यह मैं किस आधार पर कह रहा हूं। आप विभिन्न राज्यों में पुलिस भर्ती की समयबद्ध प्रक्रिया को देखें और अन्य सरकारी नौकरियों की प्रतियोगी परीक्षाओं के पैटर्न को देखिए, आप को एक नंगा सच दिखाई देगा। पुलिस भर्ती परीक्षा टाइम से, इंटरव्यू टाइम से, ज्वाइनिंग टाइम से, ट्रेनिंग टाइम से। न पेपर्स आऊट न कोई लफड़ा। करीब 2016 से लेकर वर्ष, 2026 में भाजपा शासित राज्यों में पुलिस बल रिक्त पदों पर जबरदस्त भर्तियां हुई हैं। उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार उत्तर प्रदेश में 2017 के बाद से पुलिस विभाग में रिकॉर्ड 2 लाख 19 हजार से अधिक भर्तियां हुईं। हाल ही में 60 हजार 244 कांस्टेबल के पदों पर भर्ती प्रक्रिया संपन्न हुई है। मध्य प्रदेश में भी पुलिस कांस्टेबल और अन्य पदों पर 2025-2026 के दौरान 22 हजार 500 से अधिक पदों को भरने की योजना के तहत भर्ती चल रही है। इसके अलावा गुजरात, हरियाणा, उत्तराखंड और असम जैसे भाजपा शासित राज्यों में भी समय-समय पर पुलिस में नियमित भर्तियां की गई हैं। आइए जरा अन्य सरकारी विभागों में भर्तियों की असलियत देखते हैं। पिछले कुछ वर्षों में अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं के केवल प्रश्न पत्र ही लीक हुए हैं। भाजपा और उसके सहयोग शासित राज्यों में पेपर लीक की कई प्रमुख घटनाएं हुई हैं। बिहार में अमीन भर्ती, बीपीएससी और नीट परीक्षा का पेपर लीक होना प्रमुख घटनाओं में शामिल रहा है। गुजरात में पुलिस कॉन्स्टेबल भर्ती परीक्षा का पेपर लीक हुआ था, जिसमें पेपर माफियाओं द्वारा 5 लाख रुपये में पेपर बेचे जाने की बात सामने आई थी, लेकिन बाद में सुचारू रूप से सब ठीक कर लिया गय। झारखंड में जेपीएससी और जेएसएससी की परीक्षाओं में पेपर लीक हुए। राजस्थान में भाजपा सरकार के बनने के बाद 17 में से 19 प्रतियोगी परीक्षाओं के पेपर लीक होने का दावा किया गया था, जिसके बाद SIT का गठन कर 100 से अधिक आरोपियों को गिरफ्तार किया गया। एक विश्लेषण के अनुसार, पिछले 7 वर्षों में भाजपा शासित राज्यों में 70 से अधिक पेपर लीक होने का दावा किया गया है, जिससे लगभग 1.5 करोड़ छात्रों का भविष्य प्रभावित हुआ है। भाजपा शासित राज्यों के विभिन्न सरकारी कार्यालयों में लाखों की संख्या में पद रिक्त हैं। लाखों युवा संविदा पर नौकरी कर रहे हैं, लेकिन उनका कोई पुरसा हाल नहीं है। बंधुआ मजदूरों से भी बुरी हालत है।

> वापस लौटते हैं अंग्रेजी हुकूमत की ओर। भारत में ब्रिटिश हुकूमत वर्ष, 1757 से वर्ष, 1947 तक रही। ब्रिटिश हुकूमत मुख्यत: 1757 में प्लासी के युद्ध के बाद शुरू हुई और 15 अगस्त 1947 को समाप्त हुई। यहां सामान्य ज्ञान के तौर पर बता दूं कि 1757 से लेकर 1857 तक, यानी कि 100 तक ईस्ट इंडिया कंपनी का रूल था और 1857 से 15 अगस्त 1947 तक ब्रिटिश का शासन रहा। ब्रिटिश हुकूमत के दौरान हिन्दुस्तान में तैनात ब्रिटिश सैनिकों की संख्या, यानी विदेशी सैनिकों की संख्या मात्र 45,000 से 85,000 के बीच थी।

वापस लौटते हैं अंग्रेजी हुकूमत की ओर। भारत में ब्रिटिश हुकूमत वर्ष, 1757 से वर्ष, 1947 तक रही। ब्रिटिश हुकूमत मुख्यत: 1757 में प्लासी के युद्ध के बाद शुरू हुई और 15 अगस्त 1947 को समाप्त हुई। यहां सामान्य ज्ञान के तौर पर बता दूं कि 1757 से लेकर 1857 तक, यानी कि 100 तक ईस्ट इंडिया कंपनी का रूल था और 1857 से 15 अगस्त 1947 तक ब्रिटिश का शासन रहा। ब्रिटिश हुकूमत के दौरान हिन्दुस्तान में तैनात ब्रिटिश सैनिकों की संख्या, यानी विदेशी सैनिकों की संख्या मात्र 45,000 से 85,000 के बीच थी लेकिन भारतीय सैनिकों की संख्या करीब 1 लाख 30 हजार थी। 1857 के आजादी के खूनी संघर्ष से सबक लेते हुए ब्रिटिश हुकूमत ने अपने सिपाहियों की संख्या बढ़ाई। 1857 के बाद यूरोपीय सैनिकों की संख्या बढ़कर करीब 60,000 हो गई। वर्ष, 1861 की जनगणना के हिसाब से भारत में करीब 84,083 ब्रिटिश सैन्य अधिकारी और सैनिक तैनात थे और शेष देशी सिपाही थे। भारतीय सैनिक ही ब्रिटिश हुकूमत की मुख्य ताकत थे। मुझे यह लिखते हुए पीड़ा हो रही है कि 13 अप्रैल, 1919 को अमृतसर के जलियांवाला बाग में निहत्थे भारतीयों पर हथियारबंद भारतीयों ने ही गोलियां चलाईं थीं। ब्रिटिश सरकार की आधिकारिक रिपोर्ट के मुताबिक 379 लोग मारे गए थे। हालांकि, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की रिपोर्ट कहती है कि 1,000 से अधिक लोग शहीद हुए थे। ब्रिगेडियर, जनरल रेजीनॉल्ड डायर ने तो केवल आदेश ही दिया था और वह भी मौखिक लेकिन भारतीयों ने उन लोगों पर गोलियां चला दीं जो रॉलेट एक्ट के विरोध में और बैसाखी मनाने के लिए आए थे। शांतिपूर्ण कार्यक्रम था लेकिन एक बार भी किसी भारतीय सैनिक ने नहीं सोचा कि वे सब के सब उनके अपने ही हैं। वे उनकी ही आजादी के लिए लड़ रहे हैं। हम भारतीयों ने कभी भी गलत को गलत कहने, लिखने, बोलने का साहस नहीं किया। धर्म, जाति, संप्रदाय के नाम पर भारतीय पहले भी भारतीयों से घृणा करता रहा और आज भी वही खड़ा है। मुझे यह लिखने में रत्ती भर गुरेज नहीं है कि भारत विभिन्न जातियों, धर्मों व संप्रदायों का कबीला है। लालची, स्वार्थी, नफरती, बेईमान, मक्कार और धूर्त। जो बार-बार खुद हो भारतीयता की झूठी चादर में लपेट कर दूसरों को धोखा देता आया है। हर भारतीय का एक खूंटा है और वह उसी खूंटे में बंधा रहना चाहता है। एक भारतीय ही दूसरे भारतीय पर मूत्र विसर्जन कर सकता है। एक भारतीय ही दूसरे भारतीय के साथ दैहिक, भौतिक अत्याचार कर सकता है। दरअसल, भारत कभी भारत बन ही नहीं सका और न ही भारतीय कभी भारतीय बन सके। एक बार फिर से सुनियोजित तरीके से संरक्षित भारतीयों को गैर संरक्षित भारतीयों के आमने-सामने खड़ा करने की तैयारी है। पूंजीपतियों के लिए हजारों साल पुराने जंगल और उन जंगलों के आदिवासियों का जिस निर्ममता से सफाया हुआ, वह रोंगटे खड़े कर देने वाला है। भारतीयों ने ही अपने ही भारतीयों को साफ कर दिया। कोई भारतीय न्यायप्रिय अपने ही भारतीयों के प्रति न्याय उठाने की जहमत नहीं उठाता। भारतीय ही भारतीय को मार रहा है। पहले ब्रिटिश हुकूमत इस मार के लिए तमगे देती थी और अब।

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

बेंगलुरु। टीसीएस वर्ल्ड 10 किलोमीटर मैराथन में भाग लेते जम्मू-कश्मीर के सीएम उमर अब्दुल्ला।

कोलंबिया में बस पर विस्फोटक हमला, 13 की मौत समेत 38 घायल

काहिबियो। कोलंबिया में एक बस को विस्फोटक डिवाइस से निशाना बनाया गया। यह घटना काहिबियो में पैनअमेरिकन हाईवे पर हुई। धमाके में 13 लोगों की मौत हो गई और करीब 38 लोग घायल हुए। घायलों में 5 बच्चे भी शामिल हैं। अधिकारियों के मुताबिक, बस के पास पहले से विस्फोटक लगाया गया था, जो गुजरते समय फट गया। सेना ने इसे आतंकी हमला बताया है और शक ड्रग तस्करी से जुड़े हथियारबंद गुटों पर है। पिछले दो दिनों में इस इलाके में 26 हमले हुए हैं। इनमें पुलिस स्टेशन पर गोलीबारी, रडार केंद्र पर हमला और विस्फोटकों से लैस ड्रोन बरामद होने की घटनाएं शामिल हैं। कोलंबिया के दक्षिण-पश्चिमी इलाके ड्रग तस्करी से ग्रस्त इलाके माने जाते हैं। यहां कई अवैध सशस्त्र गुट समुद्री और नदी मार्गों पर कब्जे के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

सवालों के घेरे में अमेरिकी राष्ट्रपति की सुरक्षा

संदिग्ध हमलावर कोल टामस एलन वॉशिंगटन के हिल्टन होटल में एक अतिथि के तौर पर ठहरा हुआ था

वाशिंगटन। अमेरिका की राजधानी वाशिंगटन में शनिवार रात (स्थानीय समयानुसार) राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प पर एक बार फिर हमले की कोशिश हुई। हालांकि, इस बार हमलावर सीधा ट्रम्प तक नहीं पहुंच पाया और घटनास्थल में घुसने के बाद ही राष्ट्रपति की सुरक्षा में जुटे सीक्रेट सर्विस एजेंट्स ने उसे मुठभेड़ के बाद जिंदा पकड़ लिया। फिलहाल हमलावर का नाम कोल टामस एलन बताया गया है, जो कि कैलिफोर्निया में एक शिक्षक रह चुका है। अधिकारियों और जांचकर्ताओं ने जो शुरुआती जानकारी दी है, उसके मुताबिक संदिग्ध हमलावर वाशिंगटन के हिल्टन होटल में एक अतिथि के तौर पर ठहरा हुआ था। कार्यक्रम की वजह से दोपहर दो बजे से होटल में आम जनता का प्रवेश बंद कर दिया गया था और सिर्फ मेहमानों और टिकट धारकों को ही अंदर जाने की अनुमति थी। ऐसे में संदिग्ध का होटल में पहले से कमरा बुक होने का उसे फायदा मिला और वह आयोजन की सबसे बाहरी सुरक्षा परत को पार करने में सफल रहा। अमेरिकी सुरक्षा एजेंसियों के मुताबिक, होटल के अंदर अपनी पहुंच बनाने के बाद संदिग्ध हमलावर हथियारों- शाटगन, हैंडगन और कई चाकुओं से लैस होकर लाबी में स्थित सीक्रेट सर्विस के सुरक्षा चेकपाइंट की ओर तेजी से दौड़ा और उसे पार करने की कोशिश की। हालांकि, जैसे ही वह चेकपाइंट से होकर भागा, सीक्रेट सर्विस के एजेंटों ने उसे दबोच लिया और जमीन पर गिराकर हथकड़ी लगा दी। इस पूरी कार्रवाई के दौरान कुछ गोलियां चलीं और इसमें एक सीक्रेट सर्विस एजेंट घायल हो गया। हालांकि, बुलेटप्रूफ वेस्ट ने उसे बचा लिया और फिलहाल उसे इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया है। इस तत्काल कार्रवाई की वजह से हमलावर उस बालरूम तक नहीं पहुंच पाया जहां राष्ट्रपति ट्रम्प, उनके कैबिनेट सदस्य और अन्य मेहमान कार्यक्रम के लिए मौजूद थे। खुद राष्ट्रपति ट्रम्प ने घटना के बाद बताया कि हमलावर कमरे (बालरूम) से लगभग 50 गज की दूरी पर था, जब उसने सुरक्षा चेकपाइंट की ओर तेजी से दौड़ लगाई थी। ट्रम्प के पत्रकारों को दिए डिनर में मौजूद डेलीमेल के अमेरिका के रिपोर्टर के मुता. बिक, जिस होटल की लाबी के चेकपाइंट में यह घटना हुई वह मुख्य बालरूम से एक मॉजिल ऊपर स्थित था। सुरक्षा चेकपाइंट (मैग्नेटोमीटर) और मुख्य बालरूम के बीच नीचे की ओर जाने वाली केवल कुछ सीढ़ियां थीं। अगर हमलावर उस चेकपाइंट को पार करने में सफल हो जाता, तो वह कुछ ही सेकंड के अंदर बालरूम के अंदर पहुंच सकता था। भले ही हमलावर किसी तरह बालरूम के अंदर पहुंच जाता, लेकिन राष्ट्रपति तक सीधे पहुंचना उसके लिए आसान नहीं था। सीक्रेट सर्विस ने बालरूम के अंदर एक अतिरिक्त सुरक्षा घेरा बना रखा था, जो राष्ट्रपति और मुख्य मेज को बाकी मेहमानों से अलग कर रहा था। मंच के सामने और उसके किनारों पर हथियारों से लैस सीक्रेट सर्विस के एजेंट भी तैनात थे। शनिवार को कार्यक्रम के कारण वाशिंगटन के हिल्टन होटल में आम जनता का प्रवेश बंद कर दिया गया था। हालांकि, हमलावर होटल में ठहरा था, जिसकी वजह से वह केवल अपने कमरे की चाभी दिखाकर बाहरी सुरक्षा परत को पार करने में सफल रहा। राष्ट्रपति ट्रम्प और उनकी पत्नी मेला. निया ट्रम्प मुख्य बालरूम के मंच पर अपनी सीट पर बैठ चुके थे और मनोरंजन का कार्यक्रम शुरू हो चुका था।

■ हमलावर शाटगन, हैंडगन और चाकुओं से लैस होकर लाबी में सुरक्षा चेकपाइंट की ओर तेजी से दौड़ा

संक्षिप्त समाचार

गणित ओलंपियाड में हमारी बेटियों ने बेहतरीन प्रदर्शन किया: मोदी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि ग्रीस के बोरदो में यूरोपियन गर्ल्स मैथेमेटिकल ओलंपियाड में हमारी बेटियों ने अब तक का सबसे बेहतरीन प्रदर्शन किया और यह टीम विश्व में छठे स्थान पर रही। मोदी ने अपने मासिक कार्यक्रम मन की बात में रविवार को कहा कि इस महीने की शुरुआत में ग्रीस के बोरदो में यूरो. पियन गर्ल्स मैथेमेटिकल ओलंपियाड का आयोजन हुआ। गणित में गहरी रुचि रखने वाली स्कूली छात्राओं के लिए ए एक बर्ष प्रतियोगिता थी।

लंबे समय तक चलने वाली मंदी की चपेट में आ सकता है वैश्विक व्यापार

वाशिंगटन। पश्चिम एशिया का संघर्ष दुनिया भर के व्यवसायों को एक लंबे आर्थिक मंदी की ओर धकेल सकता है। यह बात नेविगेटर प्रिंसिपल इन्वेस्टर्स कंपनी के निदेशक काइल शोस्टैक ने रूसी न्यूज एजेंसी आरआईए नोवोस्ती से बातचीत में कही। उन्होंने कहा कि व्यवसायों के लिए सबसे बड़ी समस्या यह है कि वे खुद को अलग-अलग उद्योगों में एक लंबी आर्थिक मंदी की ओर फिसलते हुए देख रहे हैं।

100 करोड़ के क्लब में शामिल हुई अक्षय कुमार की फिल्म 'भूत बंगला'

मुंबई। बॉलीवुड स्टार अक्षय कुमार की फिल्म 'भूत बंगला' ने भारतीय बाजार में 100 करोड़ से अधिक की कमाई कर ली है। अक्षय कुमार और निर्देशक प्रियदर्शन की सुपरहिट जोड़ी 14 साल बाद 'भूत बंगला' के साथ एक बार फिर वापस लौटी है। फिल्म ने 16 अप्रैल को पेड प्रिव्यूज के साथ थिएटर्स में दस्तक दी थी। फिल्म ने पेड प्रिव्यूज से 3.75 करोड़ की कमाई की। सैकनिल्क की रिपोर्ट के अनुसार 'भूत बंगला' में पहले सप्ताह में भारतीय बाजार में 84. 40 करोड़ की कमाई की।

दबाव में युद्ध विराम पर वार्ता नहीं करेगा तेहरान: पेजेश्कियन

कहा: युद्धविराम के दौरान लगातार समझौतों का उल्लंघन और दबाव की नीति अपना रहा अमेरिका

तेहरान। ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेजेश्कियन ने स्पष्ट किया है कि उनका देश दबाव, धमकियों और घेराबंदी के माहौल में किसी भी तरह की बातचीत नहीं करेगा। उन्होंने यह बात पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ के साथ फोन पर हुई बातचीत के दौरान कही।

इस बातचीत में उन्होंने अमे. रिका पर आरोप लगाया कि वह बातचीत और युद्धविराम (सीजफायर) के दौरान लगातार समझौतों का उल्लंघन और दबाव की नीति अपना रहा है। ईरान के राष्ट्रपति ने कहा कि अमेरिका द्वारा लगाए गए समुद्री प्रतिबंध अंतर्राष्ट्रीय समझौतों और संयुक्त राष्ट्र चार्टर का उल्लंघन हैं। उन्होंने कहा कि ऐसी कार्रवाइयां और धमकी भरे बयान शांति प्रक्रिया पर भरोसे को कमजोर करते हैं। पेजे. श्कियान ने यह भी कहा कि ईरान अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा की रक्षा के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है और अमे. रिका या इजरायल की किसी भी नई टकराव की स्थिति के गंभीर परिणाम हो सकते हैं, जो क्षेत्रीय और वैश्विक स्थिरता को प्रभावित करेंगे। उन्होंने आगे कहा कि ईरान अपने पड़ोसी देशों के साथ अच्छे संबंध और आपसी सम्मान के आधार पर संबंध मजबूत करना चाहता है, खासकर फारस की खाड़ी के दक्षिणी देशों के साथ। उन्होंने उम्मीद जताई कि ये देश भी बाहरी हस्तक्षेप से दूर रहकर क्षेत्रीय शांति और सुरक्षा को मजबूत करने में सहयोग करेंगे। क्षेत्रीय तनाव के बीच ईरानी विदेश मंत्री अब्बास अराघची ने मिस्र और तुर्की के अपने समकक्षों से बीत की। अराघची और मिस्र के विदेश मंत्री बदर अब्देलट्टी ने युद्धविराम और क्षेत्रीय घटनाक्रमों पर विचारों का आदान-प्रदान किया। वहीं, तुर्की के विदेश मंत्री हाकान फिदान के साथ उनकी बातचीत मुख्य रूप से ईरान और अमेरिका के बीच चल रही वार्ता प्रक्रिया पर केंद्रित रही। इस सिलसिले में फिदान ने पाकिस्तान के विदेश मंत्री इशाक डार से भी फोन पर बात की। वहीं पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेजेशकियन से फोन पर बात की। उन्होंने इस बातचीत को सकारात्मक बताया। इस दौरान पाकिस्तानी नेता ने मध्यस्थता प्रयासों में तेहरान की निरंतर भागीदारी की तारीफ की, जिसमें विदेश मंत्री अब्बास अराघची की हाल ही में संपन्न हुई यात्रा भी शामिल है। वहीं अमेरिका और ईरान के बीच बढ़ते तनाव के बावजूद शांति की संभावनाएं अभी भी खत्म नहीं हुई हैं। रिपोर्ट के अनुसार, दोनों देशों के बीच सैन्य और आर्थिक दबाव का दौर जारी है। इसके बावजूद अमेरिका और ईरान लगातार ऐसे संकेत दे रहे हैं, जो बातचीत की मेज पर लौटने की उनकी इच्छा को बताता है। यूरेशिया रिव्यू में प्रकाशित कालिन्स चॉग यू केट के एक लेख में तर्क दिया गया है कि युद्ध के मैदान की बदलती हकीकतें और कूटनीतिक पैंतरेबाजी दोनों पक्षों को समझौते की ओर धकेल रही हैं। वर्तमान परिस्थितियां लंबे संघर्ष के बजाय बातचीत के जरिए समाधान निकालने के पक्ष में बनती दिख रही हैं। रिपोर्ट के अनुसार, ईरान ने बातचीत में एक बेहद नपी-तुली रणनीति अपनाई है। वह समय और निर्यात्रित तनाव को एक हथियार के रूप में इस्तेमाल कर रहा है ताकि अपनी बढ़त बरकरार रख सके। ईरान अपने रणनीतिक लाभ से समझौता किए बिना बातचीत के रास्ते खुले रखना चाहता है। दूसरी ओर, अमे. रिका लगातार सैन्य और आर्थिक दबाव के जरिए ईरान की सौदेबाजी की शक्ति को कमजोर करने की कोशिश कर रहा है।

■ अमेरिका द्वारा लगाए गए समुद्री प्रतिबंध अंतर्राष्ट्रीय समझौतों और संयुक्त राष्ट्र चार्टर का उल्लंघन हैं: अमेरिकी राष्ट्रपति

खसरा संकट ने खोली बांग्लादेश की पोल

ढाका। बांग्लादेश की स्वास्थ्य व्यवस्था, जिसे दशकों में मजबूत बनाया गया था, अब गंभीर चुनौतियों का सामना कर रही है। एक रिपोर्ट में कहा गया है कि यदि समय रहते सुधारात्मक कदम नहीं उठाए गए, तो वर्षों की उपलब्धियां कुछ ही समय में खत्म हो सकती हैं। बांग्लादेश के एक प्रमुख अखबार की रिपोर्ट के अनुसार, देश में मौजूदा खसरा वैक्सीन संकट कोई अलग-थलग घटना नहीं है, बल्कि यह संस्थागत कमजोरी का संकेत है। राष्ट्रीय टीकाकरण कवरेज 2025 में घटकर करीब 60 प्रतिशत रह गई, जो पिछले लगभग एक दशक का सबसे निचला स्तर है। यह आंकड़ा 2010 से 2022 के बीच 85 से 92 प्रतिशत के बीच था। रिपोर्ट में कहा गया है कि बांग्लादेश का विस्तारित टीकाकरण कार्यक्रम (ईपीआई) लंबे समय तक सार्वजनिक स्वास्थ्य क्षेत्र की सबसे बड़ी सफलताओं में से एक माना जाता रहा है। सरकार की प्रतिबद्धता, विकास साझेदारों के सहयोग और जमीनी स्तर पर स्वास्थ्यकर्मियों के मजबूत नेटवर्क के कारण इस कार्यक्रम ने वर्षों तक उच्च कवरेज सुनिश्चित की और टीकों से रोकी जा सकने वाली बीमा. रियों को काफी हद तक नियंत्रित किया। रिपोर्ट के अनुसार, अब यह माडल कमजोर पड़ता दिख रहा है।

होर्मुज से बारूदी सुरंगें हटाने में लगेंगे छह महीने

वाशिंगटन। पश्चिम एशिया में संघर्ष के दौरान ईरान ने होर्मुज स्ट्रेट में बारूदी सुरंगे बिछाकर उसे बेहद खतरनाक बना दिया है। खुद ईरानी सेना को भी नहीं पता कि बारूदी सुरंगें कहां-कहां हैं। अमेरिकी सेना अब अपने विशेष पोतों के जरिये बारूदी सुरंगें हटाने के अभियान में जुटी है।

पेंटागन ने कहा है कि इस काम में छह महीने तक का समय लग सकता है। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने प्रयास को तीन गुना करने का आदेश दिया है। होर्मुज जलमार्ग से दुनिया के 20 प्रतिशत तेल का परिवहन होता है। इसके बाधित होने से वैश्विक अर्थव्यवस्था खतरे में है। ऊर्जा की बढ़ती कीमतें और व्यापक आर्थिक प्रभाव ट्रम्प प्रशासन के लिए राजनीतिक जोखिम पैदा कर रहे हैं, जहां नवंबर में मध्यावधि चुनाव होने हैं। हालांकि, इसके नतीजों से ट्रम्प प्रशासन को कोई खतरा नहीं है, लेकिन संसद में उसके प्रभाव पर असर पड़ सकता है। हाल ही में अमेरिकी संसद के निचले सदन प्रतिनिधि सभा की सशस्त्र सेवा समिति को दी गई एक गोपनीय ब्रीफिंग में, पेंटागन के अधिकारियों ने बारूदी सुरंगों को हटाने में छह महीने का समय लगने का अनुमान पेश किया। रक्षा मंत्री पीट हेगसेथ ने इस आंकड़े की पुष्टि से इन्कार किया, लेकिन इसे नकारा भी नहीं। उन्होंने कहा, सेना को अपनी क्षमता पर पूरा भरोसा है कि वह उचित समय सीमा में बारूदी सुरंगें हटा देगी। ट्रम्प ने दो दिन पहले ही कहा कि अमेरिकी माइनस्वीपर पहले से ही जलडमरूमध्य को साफ कर रहे हैं। उन्होंने इस गतिविधि को तीन गुना स्तर पर जारी रखने का आद. श दिया है। उन्होंने नौसेना को स्ट्रेट में बारूदी सुरंगें बिछाने वाली किसी भी नाव पर हमला करने का अलग से आदेश दिया है। बारूदी सुरंगों को हटाना एक बेहद मेहनत भरा काम है। अमे. रिकी सेना के पूर्व अधिकारियों और इस मामले के विशेषज्ञों के मुताबिक, बारूदी सुरंगों को हटाना एक धीमी प्रक्रिया है जो आमतौर पर किसी संघर्ष के बाद होती है। उनके मुताबिक, बारूदी सुरंगों की खोज करना, अपने बगीचे में एक-एक करके खरपतवार को उखाड़ने जैसा है। बारूदी सुरंगों को हटाना घास काटने जैसा है। हालांकि, इनका यह भी कहना है कि हर एक बारूदी सुरंग को हटाना अनिवार्य नहीं है।

■ खुद ईरानी सेना को भी नहीं पता कि बारूदी सुरंगें कहां-कहां, ट्रम्प के आदेश पर सेना तलाश में जुटी

काश पटेल की कुर्सी पर संकट के बादल

वाशिंगटन। ईरान से युद्ध शुरू होने के बाद से अमरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प अपने प्रशासन में लगातार शीर्ष अधिकारियों को पद से हटा रहे हैं। इसी बीच, एक और चौंकाने वाला नाम सामने आया है।

अमेरिकी नौसेना सचिव जान फेलन, अमेरिकी सेना प्रमुख जनरल रैंडी जार्ज और अटार्नी जनरल पाम बोंडी के बाद एफबीआई प्रमुख काश पटेल को हटा सकते हैं। काश पटेल अपने व्यवहार को लेकर विवादों में घिरे हुए हैं। उन पर अत्यधिक शराब सेवन और अमर्यादित आचरण के आरोप लग रहे हैं। पालिटिको की रिपोर्ट में व्हाइट हाउस के एक वरिष्ठ अधिकारी के हवाले से कहा गया है कि लगातार नकारात्मक खबरों और बढ़ते विवादों के कारण पटेल को लेकर माहौल खराब है और ट्रम्प उनसे परेशान हैं। विवाद की शुरुआत तब हुई, जब अमेरिकी पत्रिका 'अटलांटिक' की एक रिपोर्ट में दावा किया गया कि संघीय जांच ब्यूरो (एफबीआई) में उनके काम करने के तरीके को लेकर चिंता है। उन पर काम के दौरान अमर्यादित व्यवहार के आरोप लगे हैं। रिपोर्ट में यह भी बताया गया कि एक बार सिस्टम से लाक होने पर पटेल घबरा गए थे।

■ लगातार शीर्ष अधिकारियों को पद से हटा रहे ट्रम्प जल्द कर सकते हैं एफबीआई प्रमुख की छुट्टी

ईरान में पिछले 57 दिनों से इंटरनेट सेवा ठप

नौ करोड़ लोग अलग-थलग पड़े, हर दिन 370 करोड़ का नुकसान

तेहरान। ईरान इस समय एक अभूतपूर्व डिजिटल आपातकाल से गुजर रहा है। इंटरनेट मानिटरिंग संस्था नेटब्लाक्स की रिपोर्ट के अनुसार, ईरान में पिछले 57 दिनों से इंटरनेट पूरी तरह से बंद है। यह किसी भी देश में लगाया गया दुनिया का सबसे लंबा राष्ट्रव्यापी इंटरनेट ब्लैकआउट बन गया है।

ठीक आठ हफ्ते पहले शुरू हुए इस प्रतिबंध ने न केवल ईरान के 9 करोड़ से अधिक नागरिकों को दुनिया से अलग-थलग कर दिया है, बल्कि देश की अर्थव्यवस्था को भी भारी चोट पहुंचाई है। अमेरिका-इजरायल की ओर से किए गए हमले के बाद 28 फरवरी को इंटरनेट सेवाएं अचानक बंद कर दी गई थी। क्षेत्रीय अस्थिरता और युद्ध के खतरों के बीच ईरानी शासन ने सूचनाओं के प्रवाह को पूरी तरह नियंत्रित करने के लिए इसका सहारा लिया। नेटब्लाक्स के आंकड़ों के मुता. बिक, यह व्यवधान अब 1,344 घंटों की अवधि को पार कर चुका है। इससे पहले जनवरी 2026 में भी सरकार ने विरोध प्रदर्शनों के दौरान इसी तरह की पाबंदी लगाई थी, जिससे आंतरिक अशांति की खबरें बाहर न जा सकें। इंटरनेट की इस लंबी अनुपस्थिति ने ईरान के आम जनजीवन को अस्त-व्यस्त कर दिया है। बैंकिंग सेवाएं, ऑनलाइन व्यापार और परिवहन नेटवर्क पूरी तरह ठप पड़े हैं। विशेषज्ञों का अनुमान है कि इस शटडाउन से ईरानी अर्थव्यवस्था को अब तक 2.5 बिलियन डालर यानी 23,570 करोड़ का कुल नुकसान हो चुका है। प्रतिदिन लगभग 370 करोड़ का राजस्व प्रभावित हो रहा है लोग अपने परि. जनों से संपर्क नहीं कर पा रहे हैं। विदेशी मीडिया और स्वतंत्र सूचना स्रोतों तक पहुंच पूरी तरह बंद है, जिससे देश के भीतर डर और अनिश्चितता का माहौल है।

■ यह किसी भी देश में लगाया गया दुनिया का सबसे लंबा राष्ट्रव्यापी इंटरनेट ब्लैकआउट बन गया है

लंदन में नीलाम होगा जयपुर राजपरिवार का 17वीं सदी का स्मार्टफोन

लंदन/जयपुर। जयपुर के शाही संग्रह की सबसे बेशकीमती वैज्ञानिक विरासतों में से एक 17वीं शताब्दी का एक विशाल 'एस्ट्रोलेब' आगामी 29 अप्रैल को लंदन के सोथबी नीलामी घर में वैश्विक बोली के लिए तैयार है। पीतल से बने इस अद्भुत यंत्र को विशेषज्ञ अपनी बहुमुखी क्षमताओं के कारण उस दौर का 'सुपरकंप्यूटर' और 'प्राचीन स्मार्टफोन' करार दे रहे हैं। सोथबी के 'इस्लामिक एंड इंडियन आर्ट' विभाग के प्रमुख बेनेडिक्ट कार्टर ने इस यंत्र को अब तक का सबसे विशाल और दुर्लभ खगोलीय उपकरण बताया है।

पुतिन से मिलने को जेलेंस्की राजी!

50 माह से जारी जंग के बीच रूस-यूक्रेन में सुलह के प्रयास तेज

मास्को/कीव। यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की अजरबैजान के दौरे पर हैं, जहां उन्होंने अजरबैजान के राष्ट्रपति इल्हाम अलीयेव से मुलाकात की और ऊर्जा सुरक्षा को लेकर बातचीत की। राष्ट्रपति जेलेंस्की ने दक्षिण काक. शस के अपने पहले दौरे पर कहा कि वह अजरबैजान में व्लादिमीर पुतिन से मिलने के लिए तैयार हैं।

बता दें कि बीते कुछ समय से रूस और यूक्रेन के बीच सुलह कराने के लिए अमेरिकी की मध्यस्थता में बातचीत हो रही थी, लेकिन हाल फिलहाल में ईरान के साथ तनाव के बीच यह रुकी हुई है। पिछले कुछ हफ्तों में अमेरिका की अगुवाई वाली कूटनीतिक बातचीत रुकने के बाद जेलेंस्की का यह बयान सामने आया है। राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की ने कहा कि यूक्रेन के लिए यह बहुत जरूरी है कि रूस इस गलत युद्ध को खत्म करने की ताकत पाए। बाकू मास्को के बड़े पैमाने पर युद्ध को खत्म करने के लिए कूटनीतिक प्रोसेस में बीच-बचाव कर सकता है। उन्होंने आगे कहा कि हमने अजरबैजान के राष्ट्रपति को बता दिया है कि हम तीन तरफा बात. चीत के लिए तैयार हैं। कीव पहले ही तुर्की और स्विट्जरलैंड में ऐसी बातचीत कर चुका है। यूक्रेन के राष्ट्रपति ने कहा कि हम निश्चित रूप से अजरबैजान में होने वाली बातचीत के लिए तैयार हैं, बशर्ते रूस डिप्लोमेसी के लिए तैयार हो। उन्होंने युद्ध शुरू होने के बाद से दक्षिण काकेशस की अपनी पहली यात्रा की अहमियत बताई। हालांकि, क्रेमलिन रूस के अलावा किसी दूसरी जगह यूक्रेन के साथ बातचीत से मना कर रहा था। रूस यूक्रेन पर लगातार बमबारी और सैन्य हमले जारी रखे हुए है। इसके साथ ही क्रेमलिन अपनी मांगों से पीछे हटने को तैयार नहीं है।

■ यूक्रेन के लिए यह बहुत जरूरी है कि रूस इस गलत युद्ध को खत्म करने की ताकत पाए